सितम्बर, 2021 ■ वर्ष : 66 ■ अंक : 12 ■ पृष्ठ : 60 ■ मूल्य : ₹ 50

अहिंसक - नैतिक चेतना का प्रवर प्रतिनिधि

अणुव्रत

सुधरे व्यक्ति...
समाज व्यक्ति से...
राष्ट्र स्वयं सुधरेगा

72वाँ
अणुव्रत अधिवेशन

19, 20 व 21 सितम्बर, 2021

राजसमंद–भीलवाड़ा (राजस्थान)

समस्याएँ अनेक - समाधान एक

अणुव्रत जीवनशैली

संपर्क सूत्र :

- **अभिषेक कोठारी**, *अधिवेशन संयोजक*
  7727867624
- **राजेश चोरडिया**, *मंत्री, अणुव्रत समिति भीलवाड़ा*
  9414026150
- **राजसमंद कार्यालय :** 9116634513, 9116634515
  ईमेल : head.office@anuvibha.org
- **सहभागिता : कोविड नियमों के अनुरूप**
- **सहभागी : केवल आमंत्रित प्रतिनिधि**

अणुविभा

आयोजक

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी

निवेदक

संचय जैन	**भीखम सुराणा**	**राकेश बरड़िया**
अध्यक्ष	*महामंत्री*	*कोषाध्यक्ष*

हमारी संस्कृति हजारों वर्ष पुरानी है। आचार्यश्री तुलसी उस श्रमण परम्परा के प्रतीक पुरुष हैं। श्री तुलसी जी ने अपने जीवन और कार्यों के द्वारा आदमी–आदमी के बीच बढ़ती दूरियां और वैमनस्य को दूर करने के लिए निरंतर प्रयास किया है। महात्मा गांधी ने मुनष्य को समाज की बुनियादी इकाई मानकर उसकी शुचिता पर विशेष बल दिया था और कहा था – यदि मनुष्य अपने को सुधार ले तो समाज और राष्ट्र का स्वतः ही परिष्कार हो जाएगा। इसी लक्ष्य को सामने रखकर वर्तमान में आचार्य तुलसी जी अणुव्रत के द्वारा मनुष्य को मनुष्य बनाने के लिए प्रेरित करते रहे हैं।

–पी.वी. नरसिम्हाराव

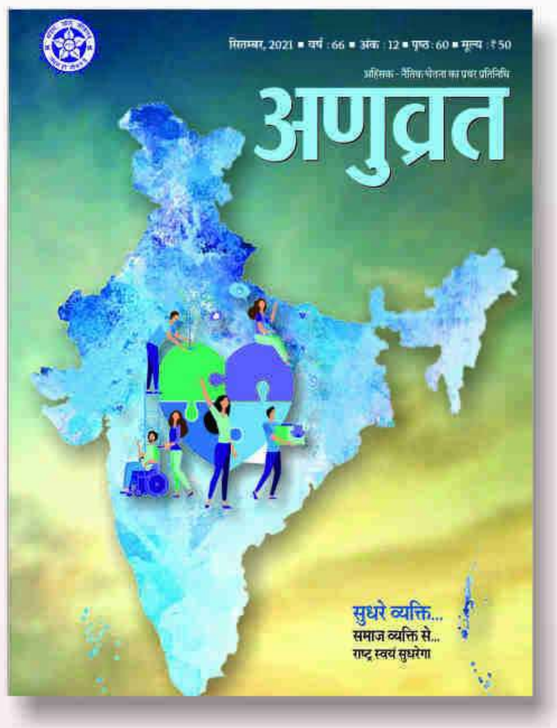

वर्ष 66 • अंक 12 • कुल पृष्ठ 60 • सितम्बर, 2021

सम्पादक
संचय जैन

सह–सम्पादक
मोहन मंगलम

संयोजकीय टीम

प्रमोद घोड़ावत (संयोजक, प्रकाशन), **शांतिलाल पटावरी** (संयोजक, पत्रिका प्रसार)
ललित गर्ग (संयोजक, अणुव्रत लेखक मंच), **रजनीकांत शुक्ल** (सह संयोजक, अणुव्रत लेखक मंच)
इन्द्र बैंगानी (संयोजक, समाचार संपादन)

टाइपसेटिंग व लेआउट – **मनीष सोनी** कवर क्रिएटिव – **आशुतोष रॉय**

कार्यालय

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
अणुव्रत भवन, 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली–110002

anuvrat.patrika@anuvibha.org
www.anuvibha.org
दूरभाष : 011–23233345, मोबाइल : 9116634512

:: सदस्यता शुल्क विवरण::

एक अंक	– ₹ 50	₹ 350 का अतिरिक्त वार्षिक भुगतान कर आप अपनी प्रति कोरियर से मंगवा सकते हैं।
एकवर्षीय	– ₹ 600	
त्रैवर्षीय	– ₹ 1500	
पंचवर्षीय	– ₹ 2500	**अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी**
दसवर्षीय	– ₹ 5000	**केनरा बैंक**
योगक्षेमी (15 yrs.)	– ₹ 11000	A/c No. **0158101120312** IFSC : CNRB0000158

- अणुव्रत सिद्धांत, स्वास्थ्य, जीवन–मूल्य एवं अभिप्रेरणा विषयक सामग्री का उपयोग किया जा सकेगा।
- anuvrat.patrika@anuvibha.org पर ही सामग्री प्रेषित करें।
- ईमेल द्वारा संप्रेषित कम्पोज की गई प्रकाशन सामग्री की Open Word File को प्राथमिकता दी जायेगी।
- फोटो की गुणवत्ता कम होने पर उसे प्रकाशित करने में असमर्थता रहेगी। व्हाट्सएप पर फोटो न भेजें।
- अनिमंत्रित सामग्री को लौटाने हेतु बाध्यता नहीं रहेगी।
- प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों का निजी चिंतन है। प्रकाशक एवं सम्पादक इसके लिए जवाबदेह नहीं हैं।
- इस प्रकाशन से सम्बन्धित किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र दिल्ली रहेगा।

अनुक्रमणिका

प्रेरणा पाथेय

* **समूह-चेतना का विकास** 06
  आचार्य तुलसी
* **नैतिकता की समस्या...** 08
  आचार्य महाप्रज्ञ

आलेख

* **एक विचार क्रांति** 11
  साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा
* **जीवन विज्ञान...** 14
  डॉ. साध्वी परमयशा
* **बढ़ती शिक्षा और...** 16
  डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
* **हरियाली का सेहत से नाता** 23
  किरण बाला
* **विनम्रता...** 24
  डॉ. वीरेन्द्र भाटी मंगल
* **कैसे भगायें असफलता का डर** 28
  डॉ. शुद्धात्मप्रकाश जैन
* **नाम में बहुत कुछ रखा है** 34
  डॉ. कृष्णा कुमारी
* **Anuvrat and Eco-conscious...** 38
  Michael Reading

दिवस विशेष

* **शांति रहेगी तो...** 18
  वर्षा भम्भाणी मिर्ज़ा
* **हिन्दी विश्व भाषा...** 20
  डॉ. हरेकृष्ण तिवारी

जयंती विशेष

* **ईश्वर चंद्र विद्यासागर** 36
  ज्योति प्रकाश खरे

लघुकथा

* **बेटे की ममता** 22
  मीरा जैन
* **सत्तानबे बटे सौ** 29
  डॉ. राकेश तैलंग

कहानी

* **मिठाई का डिब्बा** 36
  हरदान हर्ष

कविता

* **जल है तो हम....** 10
  नवल डागा
* **सम्भव कर दिखाया...** 22
  देवेन्द्र आर्य
* **वो कहां जायें...** 29
  दिनेश रघुवंशी
* **कहकहे बचाने हैं** 35
  ज्ञान प्रकाश विवेक

❖ **संपादकीय** 05
❖ **अतीत के झरोखे से** 30
❖ **कदमों के निशां** 45
❖ **परिचर्चा** 42
❖ **संवेदन** 13-25
❖ **अणुव्रत बालोदय** 46
❖ **एसीसी राष्ट्रीय परिणाम** 48
❖ **अणुव्रत समाचार** 52
❖ **परिणाम Q10 प्रतियोगिता** 58

सम्पादकीय...

समय
आत्मावलोकन का

अणुव्रत एक आंदोलन है। इसे सामाजिक बदलाव का व्यक्ति–आधारित आंदोलन कहा जा सकता है। जैसे एक–एक बूंद से घड़ा भरता है, उसी तरह छोटे–छोटे संकल्प, एक–एक अणु व्रत व्यक्ति के जीवन को परिपूर्ण बनाने में योगभूत बन सकते हैं। और फिर, एक–एक सुधरे व्यक्ति से सुधरे समाज की परिकल्पना साकार होने का मार्ग प्रशस्त हो जाता है। फिर, एक व्यक्ति का बदलना मात्र उस व्यक्ति तक सीमित नहीं रहता, बल्कि अपने आसपास के परिवेश को भी प्रभावित करता है और एक से चार और चार से सोलह... व्यक्ति–बदलाव की मुहिम आगे बढ़ती चली जाती है।

इसी अंक में प्रकाशित आलेख ''समूह–चेतना का विकास'' में आचार्य तुलसी कहते हैं – ''अणुव्रत शक्ति–प्रयोग में विश्वास नहीं करता, इसलिए वह वातावरण को महत्त्व देता है। वातावरण बनाने के लिए आवश्यक है कि व्यक्ति–व्यक्ति में अध्यात्म के संस्कार दिये जायें।'' निश्चय ही, वातावरण का निर्माण ही अणुव्रत आंदोलन की शक्ति है। व्यक्ति निर्माण के बिना वातावरण निर्माण का कोई भी प्रयास निरर्थक और आधारहीन साबित होगा।

देश और दुनिया में अणुव्रतमय जीवन जीने वाले व्यक्तियों की कमी नहीं है। संभवतः ये लोग आडंबर और पद–नाम के व्यामोह से दूर अपने जीवन के ऊर्ध्वारोहण की दिशा में स्वांतः सुखाय गतिशील हैं। इस भौतिकवादी युग में 'लो प्रोफाइल' बने रहने की उनकी अभीप्सा अनुचित भी नहीं है। यह 'अणुव्रती' व्यक्तित्व के अनुरूप ही है। किंतु, ऐसे व्यक्तियों का अग्रिम पंक्ति में दीखना बेहतर समाज निर्माण के लिए आवश्यक वातावरण निर्माण की पहली शर्त है। अणुव्रत का मंच इसके लिए न सिर्फ सबसे उपयुक्त है, वरन यह अणुव्रत आंदोलन की सर्वोच्च प्राथमिकता भी है। व्यक्ति निर्माण का कार्य जितना महत्त्वपूर्ण है, उतना ही महत्त्वपूर्ण है अणुव्रतमय व्यक्तियों को समाज के समक्ष आदर्श रूप में प्रस्तुत करना।

सन् 2024 में अणुव्रत आंदोलन अपने प्रवर्तन की हीरक जयंती मनायेगा। स्वर्णिम इतिहास की आधारशिला पर भविष्य की उपत्यकाओं को आकार देने का यह ऐतिहासिक अवसर होगा। आत्मावलोकन कर अपनी विशिष्टताओं को मजबूत करने और अपनी सीमाओं को विस्तार देने का अवसर। अणुव्रत के सर्वसमावेशी दर्शन की सात दशक पूर्व निश्चय ही आवश्यकता रही थी, लेकिन आज विश्व को इस दर्शन की सबसे अधिक आवश्यकता है। वैयक्तिक स्तर पर बढ़ते तनाव से लेकर वैश्विक स्तर पर बढ़ रही प्रकृतिजनित और मानवजनित आपदाओं की शृंखला इस ओर स्पष्ट इशारा कर रही है। आज अणुव्रत के प्रत्येक कार्यकर्ता और अणुव्रत दर्शन के प्रति आस्था रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति का यह कर्तव्य है कि वह समय की पुकार को सुने और मानवजाति के प्रति अपने कर्तव्य को निभाने के लिए कृत संकल्पित हो अपना श्रेष्ठ देने का प्रयास करे।

19, 20, 21 सितम्बर को 72वां अणुव्रत अधिवेशन होने जा रहा है। यह एक महत्त्वपूर्ण अवसर होगा जब हम अणुव्रत अनुशास्ता का मार्गदर्शन और आशीर्वाद प्राप्त कर एक नयी ऊर्जा के साथ स्वयं से शुरू करते हुए सामाजिक उन्नयन की इस मुहिम में जुट जायें। चुनौतियां अनेक हैं लेकिन सफलता की राह मुश्किलों से होकर ही गुजरती है, इसका कोई 'शॉर्टकट' नहीं होता।

अणुव्रत आंदोलन में सक्रिय सहभागिता का आपको सादर आमंत्रण!

वो चले थे
बदलाव की राह पर!

एक को धुन थी
दुनिया को बदलने की
और दूसरे ने
खुद को बदलने की
मन में ठानी थी।

लम्बा सफर था
मुश्किल भरा था
जुनून दोनों के
सिर पर चढ़ा था।

दूसरे छोर पर
जब दोनों पहुँचे
दुनिया को बदलने
के जुनून में
एक खुद को ही
भूल बैठा था
और दूसरे ने
खुद को बदला
तो उसके लिए दुनिया
स्वतः बदल गयी थी।

सं.जै.
sanchay_avb@yahoo.com

समूह-चेतना का विकास

आचार्य तुलसी

समूह–चेतना से व्यक्ति–चेतना प्रभावित होती है, यह बात सही है। सामूहिक स्तर पर किये जाने वाले कार्यों में सुविधा भी बहुत रहती है। समूह–चेतना में जागरण होने के बाद व्यक्ति के लिए प्रयास करने की अपेक्षा भी नहीं है किंतु इस प्रक्रिया में भी कुछ कठिनाइयां हैं। पहली बात यह है कि सामूहिक परिवर्तन में दण्ड–शक्ति और व्यवस्था का योग आवश्यक है। जिनके हाथ में सत्ता और व्यवस्था नहीं है, वे समूह–चेतना का निर्माण कर सकें, यह बहुत कठिन बात है।

दूसरी बात यह है कि दण्ड और व्यवस्था के आधार पर जो काम होता है, उसमें आरोपण हो सकता है, स्वीकार नहीं। स्वीकृति का संबंध हृदय–परिवर्तन से है। हृदय–परिवर्तन का अर्थ किसी दूसरे हृदय का प्रत्यारोपण नहीं, अपितु विचार–परिवर्तन है। बाध्यता या आरोपण व्यक्ति को बदल सकते हैं, पर उसके विचारों को नहीं बदल सकते। एक लक्ष्य को लेकर चलने वाले सौ व्यक्ति भी हर तथ्य पर सहमत नहीं हो पाते, फिर लाखों–करोड़ों के स्तर पर परिवर्तन का जो प्रश्न है, वहां सबकी स्वीकृति सहज कैसे हो सकती है? एक–रूपता बाध्यता की स्थिति में संभव है, विचार–भिन्नता इसे निष्पन्न नहीं कर सकती।

यद्यपि हर व्यक्ति नैतिकता को अच्छा मानता है, नैतिक बनने का लक्ष्य लेकर चलता है और यह बात भी उसकी समझ में आती है कि मुझे नैतिक बनना चाहिए, फिर भी सब लोग नैतिक बन जायें, यह बहुत कठिन बात है। जब तक सब व्यक्ति नैतिक नहीं बनते, तब तक कुछ व्यक्तियों के नैतिक बने रहने में कठिनाई भी है क्योंकि इससे उनके हित विघटित होते हैं। वैयक्तिक हितों का विघटन होने की स्थिति में भी जो व्यक्ति अध्यात्म और नीति को आधार मानकर चलते हैं, वे समूह–चेतना के विकास का माध्यम बन सकते हैं।

अध्यात्म–चेतना और व्यवस्था में समझौता कभी नहीं होना चाहिए। जहां समझौते की स्थिति पैदा होती है, वहां अध्यात्म–चेतना लड़खड़ा जाती है। व्यवस्था अनैतिकता को मिटाने में सहयोगी बन सकती है, पर अध्यात्म–चेतना के स्तर पर कोई काम नहीं कर सकती। जहां व्यवस्था का सहायक सामग्री के रूप में उपयोग होता है, वहां अध्यात्म–चेतना निखर सकती है। किंतु समझौते में कई कठिनाइयां पैदा हो जाती हैं। सबसे बड़ी कठिनाई यह है कि व्यवस्था अध्यात्म–चेतना पर हावी हो जाती है और परिवर्तन का मूल उद्देश्य पीछे छूट जाता है।

प्रश्न उठता है कि वैज्ञानिक उपलब्धियों से समूह–चेतना आकृष्ट हो रही है तो आध्यात्मिक उपलब्धियों के प्रति उसका आकर्षण कम क्यों है?

दरअसल उपलब्धि दो प्रकार की होती है–दृष्ट और अदृष्ट। विज्ञान की जितनी उपलब्धियां हैं, वे दृष्ट हैं और उनसे प्रत्यक्ष रूप से भौतिक लाभ प्राप्त हो रहा है। अध्यात्म भौतिक लाभ पर नियंत्रण करता है तथा उससे प्राप्तव्य आत्मोपलब्धि प्रत्यक्ष नहीं है। जो प्रत्यक्ष लाभ चाहते हैं, वे परोक्ष में होने वाली उपलब्धि से आकृष्ट नहीं हो सकते। इसलिए आध्यात्मिक मूल्यों

का अवमूल्यन हो रहा है और मनुष्य विज्ञान के प्रति अधिक आस्थावान् बनता जा रहा है। वैज्ञानिक उपलब्धियों ने मनुष्य को जितनी सुविधाएं दी हैं, उस रूप में अध्यात्म की कोई उपलब्धि नहीं है। अध्यात्म से बहुत बड़ी उपलब्धि हो सकती है, इस अभ्युपगम मात्र से अध्यात्म के प्रति जनता का आकर्षण बढ़ने वाला नहीं है। अणुव्रत आध्यात्मिक उपलब्धियों के प्रति आकर्षण पैदा करने का एक उपक्रम है, किंतु यह उन उपलब्धियों को प्रत्यक्ष रूप में प्रस्तुत करके ही आगे बढ़ सकता है।

अध्यात्म के स्तर पर समाज में अब तक कोई व्यापक परिवर्तन नहीं हुआ है। कारण, अध्यात्म के प्रति व्यापक आकर्षण नहीं है और आकर्षण पैदा करने वाली व्यापक उपलब्धियां भी नहीं हैं। जो व्यक्ति आध्यात्मिक हैं, उनका मानस भौतिकता की ओर आकृष्ट हो रहा है, तब भौतिकवादी लोग अध्यात्म की शरण में कैसे आ सकेंगे?

आध्यात्मिक क्रांति न होने का एक कारण यह हो सकता है कि अध्यात्मवादियों की मान्यता और यथार्थ भिन्न–भिन्न कोणों पर आधारित हैं। वे मान्यता अध्यात्म को देते हैं, पर उसकी यथार्थता स्पष्ट करने वाले साधन उन्हें प्राप्त नहीं हैं। अध्यात्म जब मान्यता के परिवेश में बंध जाता है, तब यथार्थ का मूल्य भौतिकता को प्राप्त हो जाता है। ऐसी स्थिति में आध्यात्मिक स्तर पर व्यापक परिवर्तन होने की संभावना भी नहीं की जा सकती।

अध्यात्म सूक्ष्म जगत् का विषय है और भौतिक स्थूल जगत् का। स्थूल की अपेक्षा सूक्ष्म सदा उलझन में रहता है। यह उलझन तब तक समाप्त नहीं होगी, जब तक अध्यात्म के सूक्ष्म रहस्यों को स्थूल परिधान में संसार के सामने प्रस्तुत नहीं किया जायेगा। फिर भी एक बात अवश्य है कि यदि नैतिकता को कोई सशक्त व्यावहारिक आधार मिल सका तो व्यक्ति–चेतना के जागरण का स्थान समूह–चेतना को मिल सकता है।

मूर्त के प्रति आकर्षण पैदा होने से नैतिकता को भी आधार मिल सकता है और उससे सामूहिक परिवर्तन भी संभव है, पर इसके लिए केवल निषेधात्मकता पर्याप्त नहीं है। क्योंकि केवल नकारात्मक दृष्टिकोण सामूहिक हितों का विघटक–सा प्रतीत होता है। विघटक तत्व किसी का आधार नहीं बन सकता। नैतिकता को सामूहिक आधार देने के लिए उसे विधेयात्मक रूप देना जरूरी है। राष्ट्रीयता की भावना एक मूर्त आधार है। कुछ देशों में राष्ट्र–प्रेम को उत्कट रूप देकर उसके आधार पर अनैतिकता को समाप्त करने का प्रयास हुआ है। राष्ट्रीयता की सीमा से ऊपर का एक तत्व है, मानवता के प्रति प्रेम। आत्मोपम्य की वृत्ति से प्रेम–भावना का विस्तार होता है। मनुष्य के मन में मानवीय करुणा का जागरण हो जाये तो अनैतिकता का निर्मूलन हो सकता है। इसके लिए कुछ व्यक्तियों ने प्रयास किया है, पर वह सीमित दायरे में हुआ है। व्यापक स्तर पर कोई प्रयास हो तो इस दिशा में बहुत अच्छा काम हो सकता है।

मनुष्य के मन में अपने आत्मीय जनों के प्रति सहज प्रेम होता है। जिनके प्रति उसका आंतरिक स्नेह होता है, उनके प्रति वह अनैतिक नहीं बन सकता। एक व्यापारी खाद्य पदार्थों में मिलावट कर बेचता है। ऐसा करते समय उसके मन में झिझक भी नहीं होती। किंतु वही व्यक्ति अपनी पत्नी और बच्चों के प्रति क्रूर नहीं हो सकता, क्योंकि वहां प्रेम का विस्तार है। सीमाहीन प्रेम का विस्तार अध्यात्म की सबसे बड़ी उपलब्धि है। इस उपलब्धि के प्रति जनमानस का आकर्षण पैदा हो सका तो समूह–चेतना के जागरण में कठिनाई नहीं होगी।

अणुव्रत का कार्यक्षेत्र प्रारंभिक रूप से व्यक्ति–चेतना तक सीमित है। शासकीय स्तर पर कोई काम होता है, उसमें व्यक्ति–चेतना की जरूरत नहीं है। सरकार यदि चाहे कि उसे बड़े उद्योगों का राष्ट्रीयकरण करना है, तो वह तत्काल कानून बना सकती है। राष्ट्रीयकरण के अनुरूप वातावरण बनाने की उसे इतनी अपेक्षा नहीं होती। अणुव्रत शक्ति–प्रयोग में विश्वास नहीं करता, इसलिए वह वातावरण को महत्त्व देता है। वातावरण बनाने के लिए आवश्यक है कि व्यक्ति–व्यक्ति में अध्यात्म के संस्कार दिये जायें।

कालसौकरिक कसाई मगध का विश्रुत व्यक्ति था। वह प्रतिदिन सैकड़ों भैंसों की हत्या किया करता था। उसका पुत्र था सुलस। वह अभयकुमार के सम्पर्क में आकर पूर्ण अहिंसावादी बन गया। कालसौकरिक का उत्तराधिकारी उसका पुत्र सुलस था। उत्तराधिकार पाने के लिए उसके सामने पिता की परम्परा का अनुगमन करने का प्रश्न आया। सुलस इनकार हो गया। पारिवारिक लोगों ने समझाया– जीवन में फिर कभी हिंसा मत करना किंतु आज तो एक भैंसे पर तलवार चलानी होगी। सुलस ने तलवार हाथ में ली और अपने पाँव पर उसका प्रहार झेला। दर्शक स्तब्ध रह गए।

सुलस मानवीय करुणा की प्रतिमूर्ति था। अहिंसा में उसकी श्रद्धा थी, इसलिए वह प्राणिमात्र को आत्मीयता की दृष्टि से देखता था। आत्म–तुला की भावना का विकास होने से ही मनुष्य की अध्यात्म–चेतना जागृत हो सकती है। इसके लिए अणुव्रत को मानव मात्र के प्रति प्रेम और आकर्षण पैदा करना होगा। पृष्ठभूमि का निर्माण होने से ही अणुव्रत का काम आगे बढ़ सकता है।

नैतिकता की समस्या : निष्ठा का अभाव

आचार्य महाप्रज्ञ

पुराने जमाने की बात है। एक जमींदार किसी महात्मा के पास गया। उसने महात्मा की भक्ति कर उनसे आशीर्वाद मांगा – महात्मन्! आप मुझे आशीर्वाद दें, जिससे मेरा बड़प्पन जैसा है, वैसा–का–वैसा रहे।

महात्मा ने प्रसन्न होकर कहा – तथास्तु।

एक गुलाम सामने खड़ा था। वह बहुत समय से महात्मा की उपासना कर रहा था। उसने भी आशीर्वाद मांगा। वह बोला – महात्मन्! आप मुझे आशीर्वाद दें कि आदमी आदमी का गुलाम न रहे।

महात्मा ने मुक्त हास्य के साथ कहा – तथास्तु।

जमींदार स्तब्ध–सा रह गया। वह बोला – महात्मन्! गुलामों के बिना ऐश्वर्य और बड़प्पन का अर्थ ही क्या होगा?

मैं अपनी बात इसी कहानी से शुरू करना चाहता हूँ कि मनुष्य की सम्पदा का मूल्य मनुष्य की गुलामी पर टिका हुआ है। यह बहुत बड़ा अधर्म और बहुत बड़ी अनैतिकता है। इसी सन्दर्भ में मैं एक प्रश्न पूछना चाहता हूँ आपसे, आपके मित्रों से, आपके समाज से और आपके राष्ट्र से। क्या आपको नैतिकता पसंद है? आप उत्तर दें, उससे पहले मैं दो प्रश्न और पूछ लूँ। यदि वह आपको पसंद है तो क्यों, और यदि पसंद नहीं है तो क्यों? नैतिकता पसन्द नहीं है, यह स्वर किसी भी दिशा से नहीं आ रहा है। हर दिशा से यही स्वर मुखर हो रहा है कि हमें नैतिकता पसंद है।

बैसाखी सत्य की

घी की दुकान पर एक पट्ट टंगा है। उसमें लिखा हुआ है – यहां शुद्ध देशी घी मिलता है। हलवाई की दुकान के पट्ट को देखिए। उस पर लिखा हुआ है – यहां शुद्ध देशी घी से बनी मिठाइयां मिलती हैं। किराने के दुकानदार ने अपने पट्ट पर लिख रखा है – मिलावट करना घोर पाप है। असत्य अपने पैरों से नहीं चल सकता। वह सत्य की बैसाखी के सहारे चलता है। सफेद झूठ बोलने वाला आपको कभी धोखा नहीं दे सकता। आपको धोखा वह देता है, जो सत्य की ओट में झूठ बोलता है। खुली अनैतिकता को आप सहन नहीं कर सकते। नैतिकता के आवरण के पीछे छिपी अनैतिकता को आप सह लेते हैं। यहां मिलावटी घी मिलता है, चर्बी से बनी मिठाइयां मिलती हैं, नकली मसाले मिलते हैं और मिलती हैं नकली औषधियां। पट्ट की इस भाषा को पढ़कर उस दुकान की सीढ़ियों पर कोई भला आदमी पैर रखना चाहेगा?

अनुभव बताता है कि जो लोग दूसरों के साथ अनैतिक व्यवहार करते हैं, उन्हें भी अनैतिकता पसंद नहीं है। प्रश्न होता है, फिर ये दूसरों को क्यों ठगते हैं? उन्हें क्यों धोखा देते हैं? उस समय वे अनैतिकता को क्यों पसंद कर लेते हैं? मैं आपसे सच कहता हूँ कि धोखा देने के क्षणों में भी धोखा देने वाले को अनैतिकता पसंद नहीं है। उसमें व्यक्तिगत स्वार्थ, हित और सुख–सुविधा का संस्कार जमा हुआ है। उस संस्कार की मादकता से उन्मत्त होकर वह अनैतिक आचरण कर लेता है, जो उसे पसंद नहीं है। इस मानवीय दुर्बलता को ध्यान में रखकर ही महर्षि व्यास ने लिखा था –

जानामि धर्मं न च मे प्रवृत्तिः,
जानाम्यधर्मं न च मे निवृत्तिः।

अर्थात् मैं धर्म को जानता हूँ, फिर भी उसमें प्रवृत्ति नहीं कर पा रहा हूँ। मैं अधर्म को जानता हूं, फिर भी उससे निवृत्त नहीं हो पा रहा हूँ।

समस्या का मूल

कुछ लोग कहते हैं – अनैतिकता का मूल गरीबी है। कुछ लोगों का मत है – उसका मूल अशिक्षा है। कुछ लोगों की धारणा में उसका मूल है व्यक्तिवादी दृष्टिकोण और कुछ लोगों की धारणा में उसका मूल है भौतिकवादी दृष्टिकोण। मैं इन तथ्यों को अस्वीकार नहीं करता। फिर भी यह स्वीकार करने में असमर्थ हूँ कि ये अनैतिकता के मूल कारण हैं। एक गरीब आदमी को हमने ईमानदार देखा है और यह भी देखा है कि जो बहुत सम्पन्न है वह बहुत बेईमान है। क्या यह सच नहीं है कि गरीब आदमी बहुत बड़ी बेईमानी कर ही नहीं सकता। बहुत बड़ी बेईमानी वही कर सकता है जिसके पास बहुत बड़े साधन होते हैं।

मैं निष्कर्ष की भाषा में यह कहना चाहता हूँ कि अनैतिक न गरीब होता है और न सम्पन्न होता है। अनैतिक वह होता है, जिसमें निष्ठा का अभाव हो। निष्ठाशून्य विपन्न आदमी भी अनैतिक होता है और निष्ठाशून्य सम्पन्न आदमी भी अनैतिक होता है। अनैतिक न अशिक्षित होता है और न शिक्षित होता है। अनैतिक वह होता है, जिसमें निष्ठा का अभाव है। निष्ठाशून्य अशिक्षित आदमी भी अनैतिक होता है और निष्ठाशून्य शिक्षित आदमी भी अनैतिक होता है।

अनैतिक न व्यक्तिवादी या भौतिकवादी दृष्टि वाला होता है और न समाजवादी या धार्मिक दृष्टि वाला होता है। अनैतिक वह होता है, जिसमें निष्ठा का अभाव है। निष्ठाशून्य व्यक्तिवादी या भौतिकवादी दृष्टि वाला भी अनैतिक होता है और निष्ठाशून्य समाजवादी या धार्मिक दृष्टिवाला भी अनैतिक होता है।

जिस आदमी में निष्ठा का बीज अंकुरित हो जाता है, वह गरीब हो या सम्पन्न, अशिक्षित हो या शिक्षित, व्यक्तिवादी हो या समाजवादी, भौतिकवादी हो या धार्मिक, नैतिक होता है।

निष्ठा : स्वरूप और आधार

प्रश्न है – निष्ठा क्या है? निष्ठा का अर्थ है चित्त की स्थिरता। अनैतिकता का मूल बीज ही है चित्त की चंचलता, चित्त का उद्वेग। जिन मनुष्यों का मन कहीं भी टिका हुआ नहीं है, वे समाज में अव्यवस्था फैलाते हैं, तोड़–फोड़ करते हैं और भ्रष्टाचार करते हैं। स्थिर चित्त वाले आदमी ऐसा आचरण नहीं करते। आप यह भी जानना चाहेंगे कि निष्ठा किसके प्रति होनी चाहिए? मेरा संक्षिप्त उत्तर होगा कि वह जीवन मूल्यों के प्रति होनी चाहिए। जीवन के मूल्य मुख्यतः चार वर्गों में विभक्त हैं :

- ❀ वैयक्तिक मूल्य
- ❀ सामाजिक मूल्य
- ❀ राष्ट्रीय मूल्य
- ❀ धार्मिक मूल्य

शान्ति और स्वतन्त्रता – ये जीवन के वैयक्तिक मूल्य हैं। श्रम और संतुलित व्यवस्था – ये जीवन के सामाजिक मूल्य हैं। एकता और बलिदान – ये जीवन के राष्ट्रीय मूल्य हैं। मैत्री और सत्य – ये जीवन के धार्मिक मूल्य हैं।

निष्ठा की कमी : संदर्शन और निदर्शन

बहुत लोग पूछते हैं – नैतिक आदमी दुःख का जीवन जीता है और अनैतिक आदमी सुख का जीवन जीता है। फिर नैतिक किसलिए होना चाहिए? इस प्रश्न में मुझे निष्ठा के अभाव का संदर्शन हो रहा है। अनैतिक आदमी हजारों मनुष्यों के सुख को लूटकर अकेला सुख भोगता है और नैतिक आदमी हजारों दुःखियों के दुःख का समभागी होकर दुःख भोगता है तो इसे मैं नैतिकता की विजय मानता हूँ। जो लोग अनैतिक आचरण से प्राप्त सुविधाओं के सन्दर्भ में नैतिकता का मूल्यांकन करते हैं, वे इस तथ्य को भुला देते हैं कि वेश्या, चोर और डाकू की सम्पन्नता को सामाजिक मूल्य नहीं दिया जा सकता। अनैतिक तरीकों से धन का अर्जन करने वाला भी इन्हीं की कोटि में आता है, अतः उसकी सम्पन्नता को भी सामाजिक मूल्य नहीं दिया जाना चाहिए। सामाजिक मूल्य उसी सम्पदा को दिया जा सकता है, जो अपने श्रम से प्राप्त होती है, जिसमें दूसरे के श्रम का शोषण नहीं किया जाता और उनके अज्ञान का अनुचित लाभ नहीं उठाया जाता। मुफ्तखोरी अन्त तक कभी भी वरदान नहीं होती। आरामतलबी का जीवन जीने की भावना क्यों पनपती है? इसलिए कि बचपन से ही विद्यार्थी में सामाजिक मूल्यों के प्रति निष्ठा उत्पन्न नहीं की जाती।

अधिक संग्रह की भावना भी इसी निष्ठा के अभाव में पनपती है। व्यक्ति में अहं की मनोवृत्ति सहज होती है। उसे निष्ठा के द्वारा परिष्कृत किए बिना वह श्रम और संतुलित व्यवस्था का समर्थन नहीं कर पाती।

गतिशीलता की अपेक्षा

अधिकांश लोग प्राचीनता के पक्षधर होते हैं। आधुनिकता का स्वर बहुत थोड़े लोगों में होता है। इस परिस्थिति में पुरानी और नयी पीढ़ी का संघर्ष चलता है। उसमें निष्ठा को पनपने का अवसर नहीं मिलता। मैं कालकृत प्राचीनता के विपक्ष में नहीं हूँ। रोटी खाते हजारों वर्ष बीत गये। आज भी रोटी खाना उतना ही जरूरी है, जितना हजारों वर्ष पहले था। इसे प्राचीन कहकर हम ठुकरा नहीं सकते। मैं उस प्राचीनता की ओर आपका ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूँ, जिसकी आज उपयोगिता समाप्त हो चुकी है। बदली हुई परिस्थितियों में क्या दहेज का कोई मूल्य है? समानता की दहलीज पर पैर रखती हुई समाज–व्यवस्था के परिपार्श्व में क्या बड़प्पन के प्रदर्शन का कोई मूल्य है?

जिनका मूल्य समाप्त हो चुका, उनमें प्राण फूंकने का प्रयत्न रूढ़िवाद है। वह व्यक्ति की निष्ठा को तोड़ता है। सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था को नया मोड़ देकर ही मूल्यों की निष्ठा को विकसित किया जा सकता है।

एकाग्रता का अभ्यास

निष्ठा की समस्या का समाधान है मन को केन्द्रित करने का अभ्यास। यह शिक्षा का अनिवार्य अंग होना चाहिए। पुराने जमाने में माना जाता था कि ध्यान करना, मन को एकाग्र करने का अभ्यास करना योगियों का काम है। आज इस विचार में परिवर्तन हो चुका है। अब इस विचार की प्रस्थापना हो चुकी है कि योग हर सामाजिक व्यक्ति के लिए आवश्यक है और उसकी साधना से व्यक्ति सफल जीवन जी सकता है। प्रस्तुत संदर्भ में मन को केन्द्रित करने की प्रक्रिया का संकेत मात्र करना चाहता हूँ। दिशा–बोध होने पर चलना सहज हो जाता है। हम इस बात को न भूलें कि चलना स्वयं को ही होता है। आप घड़ी के सामने बैठ जाइए। मन को किसी एक शब्द, विचार या वस्तु पर टिका दीजिए। आप जितने क्षणों तक एकाग्र रहें, उसे अंकित करते चले जाइए। साप्ताहिक प्रगति का लेखा–जोखा करते रहिए। अभ्यास करते–करते आप दस–पंद्रह मिनट तक एकाग्रता की स्थिति में रहिए। आगे का मार्ग स्वयं साफ हो जाएगा। इस एकाग्रता का प्रभाव आपके व्यक्तिगत जीवन पर ही नहीं, जीवन के हर पहलू पर होगा। मानवीय एकता का ध्येय और मन की एकाग्रता का अभ्यास – यह 'मणिकांचन' योग है। इस पर निर्भर है समूची मानवजाति की समृद्धि और उसके सह–अस्तित्व का भविष्य।

■ **नवल डागा** ■

कवि और पर्यावरणविद् (जयपुर)

जल सारे संसार में, है ईश्वर की देन।
बिन इसके इस जगत में, हर प्राणी बेचैन।।

जल के दानी हो गए, कैसे अंतर्धान।
प्याऊ जैसे कर्म का, नहीं किसी को ध्यान।।

जल प्राणी के प्राण हैं, मानें हम अनमोल।
ईश्वर हमको दे रहे, लिए बिना ही मोल।।

जल है तो हम जी रहे, हम हैं जल की देन।
जल को पाने वास्ते, सारा जग बेचैन।।

बहे अगर जल व्यर्थ में, इसका दोषी कौन।
ऐसे सच पर बावरे, सब हो जाते मौन।।

जल को अमरित मानिए, देता जीवन दान।
व्यर्थ उलीचें मत इसे, पाएंगे सम्मान।।

जल स्तर गिरता गया, चला गया पाताल।
अगर अभी चेते नहीं, बदतर होंगे हाल।।

जल के हर तालाब को, करें आज हम प्यार।
आने वाली पीढ़ियां, मानेंगी उपकार।।

जल–सा कोई मीत ना, जल से रहे लगाव।
आएँ हम गहरे करें, पानी के तालाब।।

जल को चाहे रोकना, गड्ढे गहरे खोद।
ताल–तलैया–बावड़ी, इनको लेना गोद।।

एक विचार क्रांति

■ साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ■

नये सृजन के लिए क्रांति का होना अनिवार्य है। मकान की टूट–फूट को संवारने से उसमें नयापन तो आ सकता है, पर उसका खोखलापन दूर नहीं होता। खोखलापन मिटाने के लिए पूरा मकान ढहा देना पड़ता है। ढहाने के साथ दूसरे मकान के निर्माण की क्षमता और योग्यता होने से ही नया सृजन हो सकता है। जीवन को संवारने और सजाने के लिए भी क्रांति की अपेक्षा रहती है। उस क्रांति का संबंध मानवीय संवेदना और विचारों से है। विचारों के ठोस आधार पर होने वाली क्रांति ही जीवन को नया रूप दे सकती है। आधारशून्य क्रांति प्रलय मचा सकती है किंतु सृजन की शक्ति उसमें नहीं होती।

मानवीय चेतना का विकास

क्रांति का अर्थ है – परिवर्तन। यह व्यक्तिगत स्तर पर हो सकता है और सामूहिक स्तर पर भी हो सकता है। अणुव्रत दर्शन क्रांति का दर्शन है। वह व्यक्ति को बदलना चाहता है, समाज को बदलना चाहता है और राष्ट्र को बदलना चाहता है। समाज और राष्ट्र का परिवर्तन व्यक्ति–परिवर्तन का ही फलित है। इसलिए अणुव्रत व्यक्ति –निर्माण का उद्देश्य लेकर चल रहा है। अणुव्रत दर्शन की परिधि में कुछ प्राचीन मूल्यांकनों का विघटन होता है और नये मानदंडों का स्थिरीकरण होता है। मानवीय और सामाजिक मूल्यों के परिप्रेक्ष्य में मानवीय एकता, समानता, स्वतंत्रता और सहअस्तित्व में विश्वास होना नितांत अपेक्षित है। ये तत्व अणुव्रत दर्शन के प्राण हैं। इनके आधार पर ही मानवीय चेतना का विकास संभव है। प्राणी मात्र में चेतना की सत्ता है, पर उसका विकास देश, काल और परिस्थिति सापेक्ष है। मनुष्य की चेतना सर्वाधिक विकसित है, किंतु उस पर भी संस्कारों का आवरण रहता है। इसलिए सबकी चेतना समान रूप से विकास नहीं कर सकती। पूर्वगृहीत संस्कारों का आवरण हटे बिना नये संस्कारों की पुट नहीं लग सकती। पूर्व संचित संस्कारों को छोड़ने के बाद ही मनुष्य नये वातावरण, नये ढंग और नये संस्कारों में जी सकता है।

चींटी के मुँह में जब तक नमक की डली रहती है, उसे मिश्री का स्वाद नहीं आता। मिश्री के मिठास का अनुभव करने के लिए नमक के स्वाद को छोड़ना आवश्यक है। इसी प्रकार अणुव्रत दर्शन को समझने के लिए इसके विरोधी तत्वों के संस्कार को मिटाना जरूरी है।

अणुव्रत दर्शन के आधार स्तंभ

अणुव्रत दर्शन के मुख्य दो आधार हैं– संयम और शुद्धि। संयम का अर्थ है उपरत होना। मनुष्य दिन–रात प्रवृत्ति करता है। मन, वाणी और शरीर उसकी प्रवृत्ति के मूल हेतु हैं। जब तक शरीर है, प्रवृत्ति आवश्यक है किंतु कुछ प्रवृत्तियां बिना प्रयोजन होती हैं। उन प्रवृत्तियों से उपरत होने का नाम संयम है।

शुद्धि का संबंध प्रवृत्ति से है। मनुष्य प्रवृत्ति करता है, उसमें औचित्य, आवश्यकता और अपरिहार्यता की सीमा रेखाएं निर्धारित होती हैं। एक सामाजिक व्यक्ति की प्रवृत्तियों के औचित्य का निर्धारण उस समय की प्रचलित समाज–व्यवस्था से होता है। औचित्य के

साथ आवश्यकता पर भी ध्यान देना जरूरी है। कुछ प्रवृत्तियां ऐसी हैं जिनका औचित्य और आवश्यकता से कोई संबंध नहीं है, फिर भी उनको टाला नहीं जा सकता। उस अपरिहार्यता की स्थिति में भी शुद्धि का विवेक रखना अपेक्षित है। आवश्यक और उचित प्रवृत्तियों में तो वह होना ही चाहिए। मनुष्य व्यापार करता है। सामाजिक दृष्टि से उसका औचित्य सिद्ध है, किंतु उसमें की जाने वाली अप्रामाणिकता अपरिहार्य स्थिति नहीं है। इसलिए उसका शोधन आवश्यक है। व्यापार की तरह ही सैकड़ों ऐसी प्रवृत्तियां हैं जिनमें शुद्धि का विवेक रखा जा सकता है।

दृष्टिकोण की स्पष्टता

अणुव्रत मानव धर्म का प्रतिष्ठाता है। मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा के लिए नैतिक मानदंडों का निर्धारण आवश्यक है। यह काम राजनीति से नहीं हो सकता क्योंकि वह संविधान के बल पर चलती है। उसमें बलपूर्वक कोई भी काम कराया जा सकता है, किंतु कार्य के अनुरूप वातावरण तैयार नहीं किया जाता। समाजनीति का निर्धारण सामाजिक संस्थाओं द्वारा होता है, उससे नैतिक पक्ष की अपेक्षा व्यावहारिक या सामाजिक पक्ष को पुष्ट आलंबन मिल सकता है। अणुव्रत हृदय–परिवर्तन के सिद्धांत को मान्य करता है। वह वातावरण–शुद्धि और व्यवस्था परिवर्तन की अपेक्षा को अस्वीकार नहीं करता। हृदय–परिवर्तन होने से, पूर्व गृहीत संस्कारों के छूटने से तथा नैतिक वातावरण में रहने से व्यक्ति सहज रूप में नैतिक संस्कारों का अर्जन कर सकता है। यद्यपि परिस्थितियां उसे नैतिक मानदंडों को तोड़ने की प्रेरणा दे सकती हैं, पर संकल्प की दृढ़ता से वे स्वयं निरस्त हो जाती हैं।

अणुव्रत दर्शन के द्वारा नैतिक मूल्यों को पुनः प्रतिष्ठित करने की बात जनता के सामने आयी तो उस पर एक व्यापक प्रतिक्रिया हुई। उन मूल्यों के आधार पर बाजार में अनैतिकता तथा व्यवहार में अंधविश्वासों और अर्थहीन परंपराओं का विघटन होना जरूरी था। युवा पीढ़ी उस विघटन से सहमत थी, किंतु कुछ बुजुर्ग लोगों के दिमाग में यह बात नहीं जँची। नैतिक और चारित्रिक मूल्यों की बात उनकी समझ में आती थी, किंतु सामाजिक व्यवस्थाओं के साथ उनका संबंध जोड़ने पर उन्हें आपत्ति थी। अध्यात्म और व्यवहार को वे दो भिन्न भूमिकाओं पर देख रहे थे, इसलिए उनके सामने समस्या खड़ी हुई। किसी भी नये दर्शन को गहराई से समझने के लिए दृष्टि की स्पष्टता का होना बहुत जरूरी है। अणुव्रत दर्शन के बारे में जनता की दृष्टि जब तक स्पष्ट नहीं हुई, तब तक वह अखरता रहा। दृष्टिकोण बदलने के साथ ही उसकी उपयोगिता सिद्ध हो गयी।

संयम का अर्थ है उपरत होना। मनुष्य दिन-रात प्रवृत्ति करता है। मन, वाणी और शरीर उसकी प्रवृत्ति के मूल हेतु हैं। जब तक शरीर है, प्रवृत्ति आवश्यक है किंतु कुछ प्रवृत्तियां बिना प्रयोजन होती हैं। उन प्रवृत्तियों से उपरत होने का नाम संयम है।

अणुव्रत के साथ आंदोलन शब्द जुड़ा और वह क्रांति का प्रतीक बन गया। क्रांति का अर्थ है गति। वह वैचारिक हो सकती है और क्रियात्मक भी। अणुव्रत क्रांति के दोनों रूपों को स्वीकार करके चलता है, किंतु अब तक क्रियात्मक बदलाव की तुलना में उसका वैचारिक क्रांति का पक्ष ही अधिक प्रबल रहा है। अणुव्रत दर्शन के माध्यम से विचारों को नये आयाम मिले हैं और मनुष्य की सोच व्यापक बनी है।

बनी–बनायी धारणाओं को आधार बनाकर चलने वाला व्यक्ति क्रांति नहीं कर सकता। क्रांतिकारी वह होता है जिसके पास प्रतिरोधात्मक शक्ति है। असत् को अस्वीकार करके चलने का साहस है, प्रतिस्रोत में बहने की क्षमता है और कुछ नया निर्माण करने की तड़प है। जो व्यक्ति समाज द्वारा खींची हुई लकीरों से दूर हटकर चलने में घबराहट का अनुभव करता है, किसी आकस्मिक परिवर्तन को देखकर काँप उठता है, वह अपने जीवन में क्रांति नहीं कर सकता।

क्रांति की सफलता

सामान्यतः क्रांति शब्द से रक्त क्रांति या हिंसात्मक क्रांति का बोध होता है क्योंकि ऐसी क्रांतियों से इतिहास भरा पड़ा है, किंतु इसका अर्थबोध इतना सीमित नहीं है। वर्तमान में इस शब्द का उत्कर्ष हो रहा है–विचार क्रांति, हरित क्रांति, श्वेत क्रांति, अंतरिक्ष क्रांति आदि शब्द–प्रयोग इसी तथ्य के सूचक हैं। और भी न जाने कितने उपक्रमों के साथ क्रांति शब्द का प्रयोग होने लगा है। क्रांति का फलित है व्यापक स्तर पर होने वाला कोई बड़ा परिवर्तन। व्यक्ति जिस समाज में जीता है, उसकी व्यवस्थाओं और परंपराओं में जब रूढ़ता का अनुभव करता है, तब वह किसी नये मार्ग का अनुसरण करता है। वहां उसे अनेक मुसीबतों के

बीच से गुजरना पड़ता है। फिर भी वह अपने लक्ष्य से प्रतिबद्ध रहता है। यह सामाजिक क्रांति है। जो व्यक्ति मुसीबतों से घबराकर लक्ष्य से भटक जाता है, उसकी क्रांति सफल नहीं होती। सफल क्रांतिकारी वह होता है जो हर मुसीबत को झेलता हुआ नयी समाज–व्यवस्था का निर्माण करके ही विश्राम लेता है।

कुछ लोग क्रांति के साथ हिंसा की अनिवार्यता स्वीकार करते हैं, किंतु अणुव्रत दर्शन के अनुसार वह सफल क्रांति नहीं है जिसमें हिंसा का सहारा लिया जाता है। क्रांति के साथ हिंसा का संबंध जोड़ने से वर्ग–संघर्ष, जाति –विग्रह, भाषा–विवाद और प्रांतीय झगड़ों को भी क्रांति का प्रतिफल माना जा सकता है, किंतु रचनात्मक परिवर्तन के अभाव में क्रांति का कोई अर्थ नहीं है। वर्षों तक केवल संघर्ष चलता रहे और उससे मूल स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं आये, वह क्रांति कैसे हो सकती है?

जाति, वर्ग, भाषा आदि को लेकर जो संघर्ष हो रहे हैं, उन्हें अहिंसात्मक प्रतिरोध से समाप्त करना सबसे बड़ी क्रांति है। अनैतिकता के तीव्र प्रवाह में बहते हुए लोकजीवन को नैतिकता की ओर मोड़ देना भी एक क्रांति है। क्रांति में बल–प्रयोग नहीं होना चाहिए। विचार–संप्रेषण की प्रबलता क्रांति की सफलता का मूल हेतु है। इसी आधार पर अणुव्रत का सारा प्रयास चल रहा है।

जनमत का समर्थन

जिस समय देश में मूल्यहीनता के संस्कार प्रभावी बन रहे थे और अधिकांश लोग अनुस्रोत में बह रहे थे, उस समय अणुव्रत ने प्रतिस्रोत में चलने की बात सुझायी। एक बार कुछ अटपटा–सा लगा किंतु शीघ्र ही लोगों की समझ में आने लगा कि प्रतिस्रोतगामिता के बिना सामाजिक मूल्यों में परिवर्तन नहीं आएगा।

सामाजिक जीवन में नैतिक मूल्यों के प्रति आस्था जगाने के लिए विचार क्रांति की बहुत बड़ी अपेक्षा है। इससे विचार–प्रसार की भूमिका प्रशस्त होती है और व्यक्ति को सोचने के लिए नया वातावरण मिलता है। इसके लिए लोकमत को जागृत करना जरूरी है। जब तक जनमत जागृत नहीं होता, व्यापक स्तर पर क्रांति पूर्ण रूप से सफल नहीं हो सकती।

क्रांति धीरे–धीरे हो सकती है और अचानक भी। अचानक होने वाला व्यापक परिवर्तन प्रभावोत्पादक हो सकता है, पर उसके स्थायित्व के बारे में संदेह रहता है। धीरे–धीरे जो परिवर्तन होते हैं, वे संस्कारों के साथ घुल–मिल जाते हैं। इसलिए उनके द्वारा कभी और कोई अप्रत्याशित प्रभाव नहीं होता, पर संस्कारगत हो जाने से उनके स्थायी प्रभाव को अस्वीकार नहीं किया जा सकता।

संवेदन

सिर्फ 10 रुपये में इलाज

सरकारी अस्पतालों में उमड़ने वाली भीड़ और वहां व्याप्त अव्यवस्थाओं तथा निजी अस्पतालों की काफी महंगी फीस की वजह से आम आदमी के लिए बीमार पड़ने पर बड़ी मुसीबत खड़ी हो जाती है। ऐसे में आंध्र प्रदेश के कडपा के गरीबों और निराश्रितों के लिए डॉ. नूरी परवीन आशा की एक किरण हैं। वे मरीजों से चिकित्सकीय परामर्श के लिए सिर्फ 10 रुपये फीस लेती हैं। एमबीबीएस की पढ़ाई के दौरान उन्होंने एक कॉरपोरेट अस्पताल में प्रशिक्षण लिया। वहां मरीजों के साथ होने वाले बर्ताव को देखकर डॉ. नूरी ने फैसला किया कि पढ़ाई पूरी करने के बाद वे खुद की क्लिनिक खोलेंगी, जहां लोगों को कम फीस में जरूरी चिकित्सीय सुविधाएं मुहैया करायी जा सकें। एमबीबीएस करने के बाद वर्ष 2010 में उन्होंने समाज के आर्थिक रूप से कमजोर लोगों को सर्वोत्तम चिकित्सा सेवाएं प्रदान करने के लिए कडपा में क्लीनिक खोली।

डॉ. नूरी परवीन कहती हैं, "वह जीवन जीने लायक नहीं है, जो किसी के दुःखों की परवाह नहीं करता है। मैंने पैसा कमाने की जगह समाज के वंचित लोगों की सेवा को अपना लक्ष्य बनाया है।" डॉ. नूरी मनोविज्ञान में पोस्ट ग्रेजुएशन करने के बाद मल्टी–स्पेशियलिटी हॉस्पिटल खोलना चाहती हैं, जहां समाज के वंचित लोगों को सभी चिकित्सीय सुविधाएं मामूली दरों पर उपलब्ध हो सकें।

शिक्षा जगत् का दायरा विशाल और विराट है। कहा भी गया है 'विद्वान् सर्वत्र पूज्यते' अर्थात् विद्वान व्यक्ति कहीं भी जाये, अपने अमूल्य विद्या वैभव से सर्वत्र पूज्य बन जाता है। हमारे मस्तिष्क में ज्ञान का अपार खजाना है। आचार्यश्री महाप्रज्ञ कहते थे, अगर मस्तिष्क की 7 प्रतिशत शक्ति जाग जाये तो व्यक्ति विश्व का बहुत बड़ा विद्वान बन जाता है।

सफल और खुशहाल जीवन के लिए जरूरी है कि हम गुनगुनाते हुए जीयें, भुनभुनाते हुए नहीं। वाह, वाह करते हुए जीयें, आह और ओह करते हुए नहीं। जीवन को महोत्सव मानें, बोझ नहीं। शुभ लाभ कहीं दूर नहीं है, हमारे पास है। शुभ भविष्य का सिग्नल देते हुए आगे बढ़ें। मुश्किल कुछ नहीं है। असंभव को संभव बनाना हमारी मुट्ठी में है। सिर्फ असंभव का अ हटाना है, असंभव संभव बन जाता है। जीवन एक कहानी के सदृश है। वह कितनी लम्बी है यह महत्वपूर्ण नहीं, कितनी अच्छी है, यह विचारणीय है। जीवन विज्ञान पवित्रता की प्रयोगशाला है। यह जीवन जीने की कला सिखाता है। स्वभाव परिवर्तन का प्रशिक्षण देता है। कषाय मुक्ति का महाभियान है। भावधारा के बदलाव का संकल्प है। मस्तिष्कीय रूपांतरण का सर्वोत्तम प्रकल्प है। यह जीवन की कहानी को सरल, सुंदर, सहज बनाता है। शांत और शालीन बनाता है। सौम्य और शिष्ट बनाता है। शांति और सौहार्द की लय, ताल, सुर, सरगम सिखाता है।

जीवन विज्ञान आध्यात्मिक, वैज्ञानिक व्यक्तित्व की नयी अवधारणा है। जीवन विज्ञान के पास सफलता की कई चाबियां हैं, जिन्हें सिर्फ घुमाने की जरूरत है।

नियंत्रण शक्ति

सफलता की पहली चाबी है कंट्रोलिंग पावर अर्थात् नियंत्रण शक्ति। कोई बीए, एमए करता है। कोई सीए, एमबीए करता है। इसके बाद भी यदि जीवन में थोड़ी–सी भी प्रतिकूलता आती है तो भावनाओं पर नियंत्रण कम हो जाता है। वह आत्महत्या जैसा जानलेवा कदम उठा लेता है। यह राष्ट्र के सामने एक ज्वलंत सवाल है। दरअसल आज की शिक्षा प्रणाली व्यक्ति को साक्षर बनाती है, पर शिक्षित नहीं। शिक्षा आजीविका कमाना सिखाती है, पर जीवन मूल्यों का प्रशिक्षण नहीं देती। यही वजह है कि आत्महत्या, अपराध, आतंक, अनुशासनहीनता का ग्राफ दिन–प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है।

एक साधारण व्यक्ति ने लॉटरी का टिकट खरीदा। उसके पाँच लाख रुपये निकले। इतनी अधिक खुशी पाकर वह विचलित न हो जाये, इसलिए एक मनोचिकित्सक उसे समझाने गया कि आपकी एक लाख की लॉटरी निकले तो क्या करेंगे? उसने

कहा–मेरे भाग्य में ऐसा कहां? फिर भी ऐसा है तो मैं आपको पचास हजार रुपये दूंगा। ...और यदि पाँच लाख की लॉटरी निकले तो क्या करेंगे? मैं ढाई लाख आपको दूंगा। ढाई लाख का नाम सुनते ही मनोचिकित्सक को इतनी ज्यादा खुशी हुई कि उसका हार्ट फेल हो गया। जो समझाने गया था, खुद ही दुनिया को अलविदा कह गया। साफ जाहिर है कि भावनाओं पर नियंत्रण न होने से ऐसी घटनाएं हो सकती हैं।

निर्णय शक्ति

सफलता की दूसरी चाबी है निर्णय लेने की शक्ति। सही समय पर सही निर्णय लेने वाले युग के महानायक बन जाते हैं। जबकि निर्णय लेने की क्षमता के अभाव में देश और दुनिया से पीछे रह जाते हैं। ऐसे में सफलता के लिए कठिन श्रम, दृढ़ संकल्प तथा सपने देखने आवश्यक हैं, मगर उससे भी ज्यादा जरूरी है सही समय पर उपयुक्त फैसला लेना।

एकाग्रता

सफलता की तीसरी चाबी है एकाग्रता। चंचलता ने सदा चिंतन पर ब्रेक लगाया है, जबकि एकाग्रता ने जीवन की गाड़ी में कामयाबी का ध्वज लहराया है। एकाग्रता से ही नर नारायण बनता है। इसकी वजह से हर इंसान आम से खास बन सकता है।

जीवन विज्ञान : सफलता की अद्भुत चाबी

■ डॉ. साध्वी परमयशा ■

इच्छा शक्ति

सफलता की चौथी चाबी है विल पावर यानी इच्छा शक्ति। दस में से नौ लोग केवल खयाली पुलाव बनाते हैं, करते कुछ नहीं। क्योंकि उनके पास इच्छा शक्ति नहीं होती। जीवन ताश के खेल के समान है। आपको जो पत्ते मिलते हैं, वह नियति है और आप कैसे खेलते हैं, यह आपका कौशल है। I can मैं यह कर सकता हूँ, I should मुझे यह करना चाहिए, इस सोच से ऊपर उठकर कहें I will मैं यह करूंगा तो जीतने की खुशियां आपकी झोली में हो सकती हैं।

आत्मविश्वास

सफलता की पाँचवीं चाबी है आत्मविश्वास। जीवन में सफलता के लिए आत्मविश्वास बहुत जरूरी है। एक विचारक रॉबिन ने वकालत शुरू की। उसने एक महान व्यक्ति से पूछा–मुझे क्या करना चाहिए। महान व्यक्ति ने कहा–आप इतने दक्ष बनो कि आपके बिना कंपनी का काम ही न चल सके, आपको कोई अनदेखा न कर सके। इसलिए जरूरी है कि हौसलों को कभी डिलीट न होने दें। हौसलों से प्रगति के नीले आकाश में उड़ान भरें। सफलता के इस मूल मंत्र को पकड़ना सीखें। कर्मयोग से किस्मत के ताले खोलें।

"मंजिल उन्हीं को मिलती है, जिनके सपनों में जान होती है, केवल पंख से कुछ नहीं होता, हौसलों से उड़ान होती है।"

स्मरण शक्ति

सफलता की छठी चाबी है स्मरण शक्ति। जो व्यक्ति चिंता, तनाव, अवसाद से जितनी दूरी रखता है, उसकी याददाश्त उतनी ही अच्छी होती है। दिमाग को सक्रिय रखने के लिए 'णमो णाणस्स' का जप करें। ज्ञान केन्द्र पर पीले रंग का ध्यान करें। ज्ञान मुद्रा का अभ्यास करें एवं ज्योति केन्द्र पर चन्द्रमा जैसे सफेद रंग का ध्यान करें। गहरी एवं लम्बी सांस लें। 'मुझे ज्ञानी बनना है', इस आत्मविश्वास के साथ अनुप्रेक्षा करें तो स्मरण शक्ति का अच्छा विकास होता है।

कर्म शक्ति

सफलता की सातवीं चाबी है काम करने की शक्ति। अच्छे विजन के साथ कठोर परिश्रम और बेहतर समय प्रबंधन का इस्तेमाल किया जाये तो सफलता अवश्य ही कदमों में होगी। एक विद्वान से मीडिया वालों ने पूछा – आपकी सफलता का राज क्या है? विद्वान ने बताया कि अपनी ऊर्जा का 25 प्रतिशत उपयोग करने वाला व्यक्ति न कुछ के बराबर है। 50 प्रतिशत ऊर्जा काम लेने वाला कुछ सफल हो जाता है, मगर 100 प्रतिशत ऊर्जा से व्यक्ति समृद्ध और महान बन सकता है। उसका हर सपना साकार हो सकता है। जन्म से कोई भी वक्ता और विद्वान नहीं होता। हां, पुरुषार्थ से भाग्य की सुनहरी दास्तान अवश्य लिख सकता है।

शांति की शक्ति

सफलता की आठवीं चाबी है शांति की शक्ति। एक युवा ने सूची बनायी कि मुझे क्या पाना है। स्वास्थ्य, सौन्दर्य, सुयश, शक्ति, सम्पत्ति। बस मैं हमेशा इन्हीं का स्मरण करता। एक अनुभवी वृद्ध सज्जन ने उसे सलाह देते हुए कहा – तुम्हारी सूची सुंदर है, पर तुमने सबसे महत्वपूर्ण बात छोड़ दी, जिसके अभाव में सब व्यर्थ है। यह बात है मन की शांति। सब कुछ हो, मगर मन की शांति न हो तो कुछ भी नहीं है। मनः प्रसाद अत्यंत आवश्यक है व्यक्तित्व निर्माण के लिए। नये मानव नये विश्व के लिए। करिश्माई कॅरियर के लिए एवं अहम् से अर्हम् बनने के लिए। जीवन की वर्णमाला का आदि, मध्य और आखिरी आयाम है मन की शांति। मन की शांति से देश की सर्वश्रेष्ठ होनहार पीढ़ी का विकास संभव है।

प्रोजेक्ट पावर

सफलता की नौवीं चाबी है प्रोजेक्ट पावर। आचार्य श्री महाप्रज्ञ ने जीवन विज्ञान का पूरा प्रोजेक्ट दिया है। यह प्रोजेक्ट शिक्षा जगत के लिए जरूरी है। जहां–जहां इस प्रोजेक्ट पावर को शिक्षा के क्षेत्र में शामिल किया गया है, वहां लाजवाब बदलाव आया है। युग का तकाजा है जीवन विज्ञान का पाठ्यक्रम शिक्षा को नवोन्मेष प्रदान करे। ■

बढ़ती शिक्षा और घटती सहिष्णुता

■ डॉ० दुर्गाप्रसाद अग्रवाल ■

हमारे देश में आजादी के बाद से शिक्षा का बहुत द्रुत विकास हुआ है। जहां स्वाधीनता प्राप्ति के समय साक्षरता का प्रतिशत केवल 19.3 था, वहीं अब यह बढ़कर 77.7 प्रतिशत को पार कर चुका है। जहां सन् 1951 में 6–11 वर्ष आयुवर्ग के मात्र 43 प्रतिशत बच्चे विद्यालयों में नामांकित होते थे, अब उनका लगभग शत प्रतिशत नामांकन होने लगा है। विश्वविद्यालयों की बात करें तो 1950–51 में जहां देश में केवल 27 विश्वविद्यालय थे, वहीं फरवरी 2017 तक, (यूजीसी वेबसाइट के नवीनतम आंकड़ों के अनुसार) भारत में 789 विश्वविद्यालय, 37,204 कॉलेज और 11,443 स्टैंड–अलोन संस्थान थे।

इस बात को निर्विवाद रूप से मानते हुए कि देश में शिक्षा के आंकड़ों में सर्वतोमुखी वृद्धि हुई है, कई अन्य बातें भी हैं जिनकी तरफ ध्यान जाना जरूरी है। पहली बात तो यह कि भारत में शिक्षा का काम सरकारी और निजी दोनों तरह के संस्थानों द्वारा किया जाता है और दोनों की गुणवत्ता में जमीन–आसमान का फर्क है। न केवल गुणवत्ता में, उनकी पहुँच और उनकी कीमतों में भी। जहां अधिकांश सरकारी संस्थान लगभग निशुल्क या नाममात्र के शुल्क पर शिक्षा देते हैं, वहीं निजी संस्थानों की दरें अकल्पनीय रूप से ऊँची भी हैं। इस अंतर का सीधा प्रभाव इन संस्थानों से निकलने वाले युवाओं की मानसिकता पर भी पड़ता है।

वहीं, आजादी के बाद समय–समय पर बनाये जाने वाले विभिन्न आयोगों की संस्तुतियों के क्रियान्वयन के बावजूद हम अभी तक शिक्षा व्यवस्था को अपनी जरूरतों के अनुकूल और आदर्श रूप दे पाने में सफल नहीं हुए हैं। सबसे बड़ा सवाल अब भी अनुत्तरित ही है कि शिक्षा क्यों? हमने सामान्यतः यह मान लिया है कि शिक्षा रोजगार दिलाने का सबसे बड़ा साधन है। आप किसी भी अभिभावक से बात कीजिए तो वह कहेगा कि वह अपने बच्चों को इसलिए पढ़ा रहा है ताकि उन्हें बेहतर रोजगार (सामान्यतः नौकरी!) मिल जाये। आजकल इस शब्द 'रोजगार' को एक नये शब्द ने विस्थापित कर दिया है। यह शब्द है 'पैकेज'। मतलब यह कि हमारे लिए शिक्षा बड़ा पैकेज दिलाने का साधन है। यह बात शायद ही कहीं सुनने को मिले कि शिक्षा की एक भूमिका बेहतर इंसान बनाने की भी है। यदा–कदा, और खास तौर पर जब कोई बुरी बात होती है, तो हम नैतिक या धार्मिक शिक्षा की जरूरत पर चंद शब्द कहकर अपने कर्तव्य की इतिश्री कर लेते हैं।

भले ही दुनिया भर में सूचना प्रौद्योगिकी के फैलाव के बाद चीजों को याद रखना उतना जरूरी नहीं रह गया है, हमारे यहां तारीखों और आंकड़ों को ज्यादा से ज्यादा याद रखना ही शिक्षा का पर्याय है। और इसका परिणाम है कि हमारी शिक्षा मनुष्य को सूचनाओं और जानकारियों का भण्डार तो बना रही है, लेकिन वह उसके मनुष्य भाव को पालने–पोसने के बहुत जरूरी काम की अनदेखी कर जाती है। आप कहेंगे, यह मनुष्य भाव क्या है? मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और वह समाज के एक सदस्य के रूप में, दूसरों की सुख–सुविधाओं और भावनाओं का समुचित सम्मान करते हुए कैसे अपना जीवन यापन करे – इसे मैं मनुष्य भाव कहता हूँ। महाकवि तुलसीदास ने कभी कहा था,

परहित सरिस धर्म नहीं भाई।
परपीड़ा सम नहीं अधमाई।।

तुलसीदास जिसे धर्म कह रहे हैं, वही मनुष्य भाव भी तो है। इससे थोड़ा आगे चलें तो रहीम याद आते हैं। वे कहते हैं –

वो रहीम सुख होत है, उपकारी के संग।
बांटन वारे को लगे, ज्यों मेहंदी को रंग।।

भला कौन कहेगा कि समाज को ऐसे उपकारी लोगों की जरूरत नहीं है। एक उपकारी अपने आस–पास को भी बदल देता है।

और ये सारी बातें केवल कर्म तक ही सीमित नहीं हैं। इनका संबंध विचार से भी उतना ही है। जब कोई समाज होगा तो उसमें भांति–भांति के लोग होंगे, उनके विचार अलग होंगे, उनके कर्म भिन्न होंगे, उनके रूप–रंग जुदा–जुदा होंगे। और इसी भिन्नता का सदाशयतापूर्ण स्वीकार ही हमारे श्रेष्ठ मनुष्य होने का प्रमाण भी होगा। हमारे देश में वैचारिक भिन्नता को सम्मान देने की लम्बी परम्परा रही है। कितनी अच्छी बात कही गयी है –

मुण्डे मुण्डे मतिर्भिन्ना कुंडे कुंडे नवं पयः।
जातौ जातौ नवाचाराः नवा वाणी मुखे मुखे।।

अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति का मानसिक स्तर और विचार अन्य व्यक्तियों से अलग होता है और विभिन्न बर्तनों में रखे हुए दूध की गुणवत्ता भी एक–दूसरे से अलग होती है। इसी प्रकार विभिन्न जातियों के आचार–व्यवहार में तथा विभिन्न नस्लों और देशों के मनुष्यों की भाषा और बोलचाल में भी विभिन्नता होती है। इसी तरह भारतीय परम्परा में 'वादे–वादे जायते' तत्वबोध की व्यापक स्वीकृति रही है।

आजादी के बाद के वर्षों में भी मोटे तौर पर, कुछेक अपवादों को छोड़ कर देश में हर तरह की विविधता का सम्मान रहा है। लेकिन बहुत दुःखद बात यह है कि ज्यों–ज्यों हम शिक्षित होते गये हैं, विविधता के प्रति हमारे इस सम्मान में कमी आती गयी है। आज हम अपने से भिन्न के प्रति बहुत कम सहिष्णु रह गये हैं। यह असहिष्णुता मुख्यतः दो क्षेत्रों – धर्म और राजनीति में बहुत ज्यादा देखने को मिलती है। ऐसा होना नहीं चाहिये था। जरूरत तो इस बात की थी कि हममें अपने से भिन्न के प्रति स्वीकार का भाव बढ़ता, लेकिन हुआ इसका उलट है। और ऐसा करने में उन सबका बहुत बड़ा योग रहा है जिनके स्वार्थ इन दो क्षेत्रों से जुड़े हुए हैं। असल में इन स्वार्थी तत्वों ने ही हमारी समरसता और सहिष्णुता को सर्वाधिक क्षति पहुँचायी है। धर्म हममें से हरेक का निजी मामला है। हमारी अपनी आजादी है कि हम किस धर्म का और किस तरह पालन करते हैं। वह किसी भी और की सोच का विषय क्यों होना चाहिए? लेकिन अब हालत यह है कि हम अपने धर्म से ज्यादा फिक्र दूसरों के धर्म की करते हैं। उस धर्म की बुराइयों पर हम जितने मुखर होते हैं, उतने ही संवेदनशील अपने धर्म की किसी और द्वारा बतायी जाने वाली कमी पर भी होते हैं।

ऐसा ही राजनीति के मामले में भी हो रहा है। राजनीतिक मत–मतांतर कब नहीं थे? आजादी की लड़ाई में गरम दल था तो नरम दल भी था, बाद में नेहरू थे तो लोहिया भी थे। इंदिरा गांधी थीं तो अटल बिहारी वाजपेयी भी थे। भिन्न–भिन्न सोच के बावजूद इनमें पारस्परिक कटुता नहीं थी। लेकिन आज सोच यह हो गयी है कि केवल मैं सही हूँ, शेष सभी न केवल गलत हैं, उन्हें बने रहने का भी कोई अधिकार नहीं है। यही असहिष्णुता है। हम किसी और को सहन करने को तैयार ही नहीं हैं। हम उसे समूल नष्ट कर देना चाहते हैं। राजनीतिक दलों के आईटी सेल यह काम पूरे जोशो–खरोश से करते हैं और उनसे प्रभावित होने वाले नासमझ लोग उनके काम को और विस्तार देते हैं। इधर सोशल मीडिया की सुलभता और उसके प्रसार ने इस आग में घी डालने का काम किया है। अब लोग वैचारिक विमर्श नहीं करते, एक–दूसरे पर जानलेवा हमले करते हैं। दुर्भाग्य की बात यह है कि ये हमले केवल शाब्दिक न रहकर वास्तविक भी होने लगे हैं। पिछले कुछ समय में देश में हुई ऐसी अनेक नृशंस हत्याएं इस बात की गवाह हैं।

दुःखद यह है कि शिक्षा के प्रसार के बावजूद ऐसा हो रहा है। सच तो यह है कि शिक्षा को जो काम करना चाहिए, वह काम उसके द्वारा किया ही नहीं जा रहा है। शिक्षा हमें सूचनाओं का भण्डार बनाने का बहुत छोटा और लगभग उपेक्षणीय काम करके अपने कर्तव्य की इतिश्री समझ रही है। इस तरफ समझदार लोगों का ध्यान जाये, यह सबसे बड़ी जरूरत है।

✍ *जयपुर निवासी डॉ. अग्रवाल सुपरिचित लेखक, आलोचक, स्तंभकार और शिक्षाविद् हैं।*

शांति रहेगी तो बचेगा अस्तित्व

■ वर्षा भम्भाणी मिर्ज़ा ■

विश्व शांति दिवस के अर्थ गहरे हैं और उस दिशा में प्रयास उससे भी ज्यादा जरूरी। शांति की पैरोकारी वही कर सकता है जिसके भीतर समझ का समंदर तो हिलोरें मारता हो, लेकिन अभिव्यक्ति लय में हो, शांति और ठहराव के साथ। समझने की कोशिश करते हैं कि इंसान के चित्त की शांति से लेकर विश्व शांति की अवधारणा तक हम कैसे पहुँचे और इसके व्यावहारिक पक्ष को लागू कर पाने में दुनिया कहां तक कामयाब हुई है।

"एक आजाद पंछी..
जो अभी–अभी आजाद हुआ है
कैद से
अब उड़ रहा है
अपनी प्रिय जगह के लिए
जैतून की डाली के साथ।
आजाद पंछी आजाद बर्मा की ओर!
मुझे लड़ना क्यों पड़ रहा है?"

विश्व शांति के प्रतीक चिह्न में भी यही पंछी नजर आता है जैतून की डाली के साथ और ये पंक्तियाँ नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित आंग सान सू की ने लिखी हैं। भारत के पड़ोसी देश म्यांमार की नेता सू की जो आंग सान की बेटी हैं जिन्होंने अंग्रेजों से बर्मा को आजाद कराया और उनकी बेटी ने फौजी हुकूमत से लोहा लिया। उन्होंने अपने देश का नेतृत्व संभाला भी, लेकिन अब छोटा–सा बर्मा फिर फौज के कब्जे में हैं और सू की सलाखों के पीछे।

शांति की हिमायती इस दुनिया की यह कैसी विडंबना है कि अपने ही देश में वे बार–बार कैद की जाती हैं और कोई कुछ नहीं कर पाता। फिर क्या विश्व शांति की बात महज एक जुमला है ? क्या इसका कोई वजूद नहीं? जब जिसके पास जैसी ताकत होगी, वह लोकतंत्र का गला घोंट हिंसा को आग देता रहेगा? अतीत में पाकिस्तान भी ऐसे ही सत्तालोलुपों का शिकार रहा है। दुनिया में संयुक्त राष्ट्र जैसा एक प्रभावशाली संगठन है, लेकिन राष्ट्र उसका प्रभाव लेते कम नजर आते हैं। सवाल यह भी है कि राष्ट्रों के चरित्र बदल गये हैं या उनके सत्ताधीशों के। चरित्र को साधने के प्रयास हमारे पुरखों के सदा ही रहे हैं। भारतीय दर्शन में मन के संयम का उल्लेख हर कहीं मिलता है। चित्त की शांति की बात भी ज्ञानियों ने की है। क्यों और कैसे इसे साधा जा सकता है ? महात्मा बुद्ध के क्षमा और शांति के संदेश ने दुनिया के बड़े भूभाग को प्रभावित किया। फिर यह दुनिया महायुद्धों की तरफ कैसे मुड़ गयी ?

आज दुनिया के कई हिस्से अशांत हैं। दो पड़ोसी, दो बड़ी ताकतें अक्सर लड़ती –भिड़ती रहती हैं। गौर

से देखेंगे तो ये दो देशों के नागरिकों की लड़ाई कतई नहीं होती। दो सियासतदां लड़ने लगते हैं और पहले देश और फिर पूरी दुनिया बँट जाती है। नफरत की दीवारें तन जाती हैं, इसलिए बहुत आवश्यक है कि मुल्क अपने नेताओं को इस लिहाज से भी देखे और चुने कि भविष्य में वह पड़ोसियों को साधने वाला होगा या बेवजह सियासी गणित साधने वाला।

महात्मा गांधी आजादी के अपने संघर्ष को ही शांति आंदोलन में बदलना चाहते थे और बदल पाये। यह नया सूत्र भारत की माटी से ही उपजा था। मार्टिन लूथर किंग जूनियर ने कहा था कि महात्मा गांधी ने अपने जीवन में ऐसे नैतिक सिद्धांतों को अपनाया है जिनका संबंध ब्रह्माण्ड की सरंचना के मौलिक सिद्धांतों से है और ये उतने ही अटल हैं जितना कि गुरुत्वाकर्षण का सिद्धांत। नैतिक सिद्धांतों के बिना सभ्यता की कल्पना भी नहीं की जा सकती। यही सभ्यता की बुनियाद में है। पहले इन उसूलों को समझना और फिर निडर होकर उनका पालन करना। बापू का पूरा जीवन इसी खोज में जाता हुआ दिखायी देता है और यह खोज मुकम्मल होती हुई दिखती है और हमारे लिए एक सच्चा मार्ग बनाती हुई भी। अहिंसा का सिद्धांत इस सोच का केंद्रीय हिस्सा है। उनका यकीन इतना गहरा था कि वे कह देते हैं कि मैं अहिंसा और सत्य का त्याग कभी राष्ट्र और संप्रदाय के लिए भी नहीं करूंगा। वैश्विक शांति के प्रयास की इससे बड़ी मिसाल और क्या हो सकती है। अहिंसा का पालन करते हुए ही दुनिया कई तरह के शोषण, असमानता, संघर्षों और युद्ध से मुक्त हो सकती है। दरअसल विश्व शांति की जरूरत इस दौर में इसलिए भी ज्यादा है क्योंकि अब दुनिया 'ग्लोबल विलेज' है। अगर ऐसा नहीं होता तो क्या कोरोना महामारी ऐसी गति (दुर्गति) से फैल पाती ? संक्रमण की यह दुर्गति अभूतपूर्व और भयावह है। जब दुनिया एक –दूसरे के इतने करीब आ चुकी है तो इसी वक्त में विश्व शांति तथा न्याय और जरूरी हो जाते हैं। क्या हम अपने नागरिकों में यह बीज और समझ बो रहे हैं ?

कल ही की बात है। नन्हा मोनू दरवाजे से टकराकर गिर गया और जोर–जोर से रोने लगा। घबरायी माँ तुरंत दौड़ी आयी और मोनू को गोद में ले पुचकारने लगी। मोनू का रोना कम नहीं हुआ। माँ ने एक जोरदार प्रहार दरवाजे पर किया और बोली– देख दरवाजे की पिटाई हो गयी और अब वह रो रहा है। मोनू हैरत में अब रोना भूल चुका था। हम सब जाने–अनजाने यही करते हैं और हिंसा का बीज कब बोया जा चुका है, पता ही नहीं चलता। गहराई में देखें तो दूसरों के दुःख में खुश होने का भाव किस कदर अमानवीय है। मोनू को बहलाने का यह तरीका सही नहीं है। शांति, सहिष्णुता और सद्भावना के बीज बचपन से ही बोने होंगे।

अहिंसा की अवधारणा का महीन अर्थ भगवान महावीर के दर्शन में मिलता है। प्राणी पर अहिंसा के समर्थन की बात आमतौर पर सभी करते हैं, लेकिन महावीर का दर्शन कहता है – खुद से ऐसा व्यवहार करो जो आत्मा को मोक्ष की ओर ले जाये अपनी पूर्ण क्षमताओं के साथ। हर जीवन पवित्र है सूक्ष्म से सूक्ष्म जीव भी। प्रकृति से इस कदर सद्भावना की न केवल परिकल्पना बल्कि उसका उच्च स्तर पर पालन भी ब्रह्माण्ड के उन्हीं मूलभूत सिद्धांतों का समावेश है जिसकी बात बाद के बरसों महात्मा गांधी भी करते हैं। इन सिद्धातों पर जो यकीन हो तो मनुष्य कैसे अशांति को न्योता दे सकता है। फिर इन सिद्धांतों से कैसे डिग गये हम ? कैसे उन श्लोकों को ढूंढ़ने की कोशिश में लग गये जहां से पता लगे कि हिंसा सही और उचित है ?

कहा जा सकता है कि प्राचीन समय से अहिंसा और शांति का संदेश भारत की विश्व को देन है। महाभारत में 'अहिंसा परमो धर्मः' का उल्लेख है। आधुनिक विश्व ने 1981 में इसे आधिकारिक तौर पर स्वीकार करते हुए प्रस्ताव पारित किया जिसका उद्देश्य विश्व में शांति कायम करना है। युद्धरत देशों के बीच युद्ध विराम और मानवीय सहायता राशि के जरिये सद्भावना को बढ़ावा देना है। हर साल 21 सितंबर को यह दिन पूरी दुनिया में मनाया जाता है। संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय न्यूयॉर्क में इस दिन की शुरुआत उस घंटी को बजाकर की जाती है जिसकी धातु पूरी दुनिया के बच्चों के दान किये सिक्कों से बनी है। यह संयुक्त राष्ट्र और दुनिया को जापान का तोहफा है जिसने दूसरे विश्व युद्ध की सर्वाधिक त्रासदी भोगी है। शेष दुनिया भी हिरोशिमा और नागासाकी पर गिराये परमाणु बम को कैसे भूल सकती है। बस इसी में विश्व शांति की जरूरत छिपी है। शांतिदूत कपोत मुँह में डाली को दबाये यही संदेश देता है कि शांति रहेगी तभी नीड़ का निर्माण होगा और सभ्यता बची रहेगी, संतति बची रहेगी। बर्मा की सू की की कविता सवाल करती है– मुझे क्यों लड़ना पड़ रहा है? उनकी यह लड़ाई फौजी हुकूमत के खिलाफ है जो बताती है कि संयुक्त राष्ट्र संघ को शांति के प्रयास और बढ़ाने होंगे।

जयपुर में रहने वाली लेखिका करीब तीन दशकों तक विभिन्न समाचार पत्रों तथा टीवी चौनल्स में काम कर चुकी हैं। संप्रति समसामयिक मुद्दों पर पत्र–पत्रिकाओं में स्वतंत्र लेखन।

हिन्दी दिवस

14 सितम्बर पर विशेष

हिन्दी विश्व भाषा बनने के पथ पर अग्रसर

■ डॉ० हरेकृष्ण तिवारी ■

स्वतंत्र भारत के इतिहास में 26 जनवरी (गणतंत्र दिवस), 15 अगस्त (स्वतंत्रता दिवस) और 14 सितम्बर (हिन्दी दिवस) ये तीन महत्वपूर्ण तिथियां हैं। विडम्बना यह है कि स्वतंत्रता दिवस और गणतंत्र दिवस के बारे में तो अधिकांश लोगों को पता है किंतु 14 सितम्बर को मनाये जाने वाले हिन्दी दिवस के बारे में बहुत कम लोगों को मालूम है। इसका आयोजन प्रायः सरकारी कार्यालयों, स्कूलों, कॉलेजों आदि में ही होता है।

15 अगस्त 1947 को आजादी के बाद जब भारतीय संविधान बनने लगा, तब राजभाषा के रूप में हिन्दी के सामने आने पर यह प्रश्न बार–बार उठा "हिन्दी ही क्यों?" बहुत विचार– विमर्श, तर्क –विश्लेषण, विवेचन के बाद 14 सितम्बर 1949 को हिन्दी को संघ की राजभाषा घोषित कर दिया गया। संविधान के अनुच्छेद 343 में लिखा गया– "देवनागरी लिपि में लिखी हिन्दी संघ की राजभाषा होगी।" मगर जो लोग शासन से जुड़े हुए थे, उन्हें हिन्दी में काम करना गवारा नहीं था। इसीलिए संविधान में यह व्यवस्था की गयी कि अगले 15 वर्षों तक अंग्रेजी का प्रयोग भी चलता रहेगा। यही वह पेंच था जिसने संविधान में हिन्दी को राजभाषा का दर्जा मिलने के बाद भी वास्तविक रूप में राजभाषा नहीं बनने दिया और अंग्रेजी को सहभाषा के रूप में जोड़े रखा।

स्वतंत्र भारत में इससे अधिक विडंबना क्या होती जब कहा गया कि विवाद की स्थिति में संविधान का अंग्रेजी पाठ ही मान्य होगा। हिन्दी को सक्षम बनाने के लिए 15 वर्षों का समय निर्धारित किया गया था। कहा गया कि इस अवधि तक अंग्रेजी उन सभी कार्यों के लिए प्रयुक्त होती रहेगी जिनके लिए होती थी। इसके अनुसार 1965 के बाद भारत सरकार के कार्यालयों में अंग्रेजी का प्रयोग समाप्त हो जाना चाहिए था, लेकिन तमिलनाडु के विरोध को देखते हुए अंग्रेजी के प्रयोग को आगे भी जारी रखने का निर्णय लिया गया। संसद में राजभाषा अधिनियम 1963 के तहत प्रस्ताव पारित कर दिया गया कि जब तक एक भी राज्य विरोध करेगा, तब तक हिन्दी को उसी स्थिति में रहना होगा जिसमें वह है। इस तरह हिन्दी को अनंत काल तक के लिए राजभाषा पद से वंचित करने का दुर्भाग्यपूर्ण निर्णय ले लिया गया। हिन्दी को राजभाषा के रूप में मजबूत करने के लिए प्रावधान तो बहुत बनाये गये, किंतु उन पर अमल नहीं किया गया। नतीजतन संविधान में राजभाषा का पद पाने के बावजूद इतने वर्षों बाद भी हिन्दी राजकाज की भाषा नहीं बन सकी। आज भी सरकारी कार्यालयों में अंग्रेजी में धड़ल्ले से कार्य हो रहे हैं।

यह सही है कि भारत एक बहुभाषी देश है। यहां अनेक भाषाएं बोली जाती हैं। बहुभाषी देश में क्षेत्रीयता की भावना और अनेक बोलियों के उभार तथा क्षेत्रीय आग्रहों के चलते एक राष्ट्रभाषा चुनना चुनौतीपूर्ण कार्य बन जाता है। किंतु आजादी के तुरंत बाद अगर प्रयास किये गये होते तो हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाना संभव था क्योंकि स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान पूरे देश में लोगों को एक सूत्र में जोड़ने वाली भाषा हिन्दी ही थी। न केवल हिन्दी भाषी प्रदेश के राजनेताओं बल्कि मराठी भाषी तिलक, गुजराती भाषी महात्मा गांधी और स्वामी दयानंद सरस्वती, तमिल भाषी राजगोपालाचारी, बांग्ला भाषी सुभाष चंद्र बोस ने भी हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया और संपर्क भाषा के रूप में इसका इस्तेमाल किया।

हमारी हिन्दी ने समय और उसकी माँग की कसौटी पर अपने को सर्वथा सार्थक और उपयोगी

सिद्ध किया है, तब भी जब दक्षिण भारत के आचार्यों वल्लभाचार्य, विट्ठलनाथ, रामानुज, रामानंद आदि ने हिन्दी भाषा के माध्यम से अपने सिद्धांतों और मतों का प्रचार किया था, जब अहिन्दी भाषी राज्यों के संत कवियों असम के शंकरदेव, महाराष्ट्र के नामदेव, गुजरात के नरसी मेहता, बंगाल के चैतन्य महाप्रभु, पंजाब के गुरु नानक आदि ने हिन्दी में ही अपने धर्म और साहित्य का प्रचार –प्रसार किया। मुसलमान कवियों अमीर खुसरो, जायसी, रहीम, रसखान के साथ ही कबीर ने भी अपनी अंतरात्मा की आवाज को बुलंद करने तथा इंसानियत की नयी परिभाषा देने के लिए हिन्दी को चुना था। आज भी जब बाजारीकरण, आर्थिक उदारीकरण, भूमंडलीकरण, मीडिया विस्फोट और अंग्रेजी की अभिजाति रोज –रोज नयी हवा बहा रही है तथा मैकाले की माया का हौआ खड़ा कर रही है, हिन्दी की उपयोगिता और उपादेयता कम होने के बजाय बढ़ती ही जा रही है। इतिहास गवाह है कि हिन्दी प्रारंभिक काल से ही जीविकोपार्जन में सहायिका, मान– मर्यादा की रक्षिका एवं राष्ट्रभक्ति की संवाहिका रही है।

चीनी मंदारिन के बाद दुनिया के सबसे अधिक लोगों द्वारा बोले जाने वाली भाषा हिन्दी ही है। सौ से अधिक देशों में हिन्दी की पढ़ाई होती है। श्रीलंका ,मॉरीशस, फिजी, मलाया, सूरीनाम, दक्षिण और पूर्वी अफ्रीका आदि देशों में हिन्दी बोलने वालों की संख्या काफी है। आज हिन्दी राष्ट्रभाषा, राजभाषा, सम्पर्क भाषा की सीमा से काफी आगे निकल चुकी है और विश्व भाषा बनने की ओर अग्रसर है। विश्व भाषा बनने के प्रायः सभी लक्षण हिन्दी में दृष्टिगोचर होते हैं–

- हिन्दी बोलने वाले और जानने वालों की भारी तादाद है। हिन्दी बोलने वाले विश्व के अनेक देशों में फैले हुए हैं।
- हिन्दी भाषा में साहित्य सर्जन की सुदीर्घ परंपरा रही है और समृद्ध साहित्य है।
- शब्द संपदा विपुल एवं विराट है। यह विश्व चेतना की संवाहिका है।
- यह देश– विदेश के जन संचार माध्यमों में भी बड़े पैमाने पर प्रयोग की जाती है।
- हिन्दी स्थानीय आग्रहों से मुक्त विश्व दृष्टि संपन्न रचनाकारों की भाषा है जो विश्वस्तरीय समस्याओं की समझ और उसके निराकरण का मार्ग प्रशस्त करने वाले हैं। उनके द्वारा सृजित साहित्य विश्व बंधुत्व, विश्व मैत्री एवं विश्व कल्याण की भावना से ओतप्रोत है।

इसलिए

14 सितम्बर

को मनाते हैं

हिन्दी दिवस

1581 ई. में अकबर के शासनकाल में टोडरमल और अबुल फजल ने हिन्दी को अपदस्थ करके फारसी को राजभाषा घोषित किया था, कानूनी तौर पर हिन्दी का खोया हुआ राजभाषा का गौरवमय पद हिन्दी को 14 सितम्बर 1949 को पुनः मिला। इसीलिए प्रत्येक वर्ष 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

बावजूद इसके, हिन्दी के समक्ष चुनौतियां कम नहीं हैं। हम आज भी अंग्रेजी की कुण्ठा से नहीं उबर पाये हैं। अंग्रेजी बोलने वाले को विद्वान और हिन्दी बोलने वाले को दोयम दर्जे का समझा जाता है। इस हीन भावना से निकलना होगा। अपनी भाषा पर गर्व करना हमें सीखना होगा, इसके महत्व को समझना होगा। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के इस मंत्र को अपने आचरण में उतारना होगा–

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति के मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के मिटत न हिय के सूल।।

इस तरह का भ्रमजाल फैलाया जा रहा है कि क्षेत्रीय बोलियों के लिए हिन्दी एक खतरा है। जबकि वस्तुस्थिति यह है कि हिन्दी की बोलियां ही हिन्दी की शक्ति हैं और इनसे हिन्दी को कोई खतरा नहीं है। संख्या बल और संप्रेषण क्षमता हिन्दी की बहुत बड़ी ताकत है किन्तु हमें किसी के ऊपर इसे थोपने की कोशिश नहीं चाहिए। इससे हिन्दी विरोध की आग को और हवा मिलेगी। हिन्दी में रोजगार के अवसर पैदा करना भी बहुत बड़ी चुनौती है। हिन्दी जनसमाज की भाषा है। अतः इसे पंडिताऊ भाषा न बनने देना भी बड़ी चुनौती है।

हिन्दी भारतीय अस्मिता है, संस्कृत की उत्तराधिकारी है, भारत की अधिसंख्य जनता की अभिव्यक्ति का माध्यम है। भले ही संवैधानिक रूप से हिन्दी को राष्ट्रभाषा का दर्जा न दिया गया हो किंतु जनता ने इसे शुरू से ही राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार करते हुए मान –सम्मान दिया है। हिन्दी लगातार बढ़ रही है और अपनी कीर्ति पताका फहरा रही है।

लेखक नव नालंदा महाविहार सम विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में प्राध्यापक हैं। इनकी कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में समय–समय पर इनके आलेख प्रकाशित होते रहते हैं।

लघुकथा

बेटे की ममता

■ मीरा जैन ■

अस्पताल में भर्ती माँ शायद अंतिम सांसें गिन रही थीं। उनकी हालत से व्यथित नवल फेसबुक तथा व्हाट्सएप के अपने दोस्तों से बार–बार विनम्र अपील कर रहा था–

"प्यारे दोस्तो ! मेरी माँ बहुत बीमार हैं, वे जल्दी स्वस्थ हो जायें, इसलिए आप सभी की दुआओं व प्रार्थना की मुझे बेहद आवश्यकता है।"

परिणामस्वरूप दोस्तों की आत्मीय संवेदनाएं प्राप्त होती रहीं और वह उन्हें निरंतर धन्यवाद देता रहा।

नवल के इसी मैसेज को पढ़कर उसके व्हाट्सएप से जुड़े एक परिचित अपनी संवेदनाएं व्हाट्सएप के जरिये भेजने के बजाय उसका दुःख कम करने के लिए स्वयं उसके पास अस्पताल पहुँच गये। उन्होंने माँ के स्वास्थ्य सुधार का अचूक नुस्खा बताया जिसे सुनकर नवल के चेहरे पर छायी चिंता की लकीरें कम होने के बजाय फैल कर दोगुनी हो गयीं। आगंतुक ने केवल इतना ही कहा था–

"तुम अंदर जाकर माँ के कानों में बस इतना ही कह दो कि–''माँ! तुम जल्दी ठीक हो जाओ, मैं तुम्हें घर ले चलूंगा। तुम्हारे बिना घर सूना है।"

वह आगंतुक और कोई नहीं, उसी वृद्धाश्रम का संचालक था, जहां नवल ने अपनी माँ को रख छोड़ा था।

उज्जैन में रहने वाली लेखिका प्रथम श्रेणी न्यायिक मजिस्ट्रेट (बाल कल्याण समिति में पदस्थ) थीं। वे कई प्रादेशिक, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय सम्मानों से अलंकृत हो चुकी हैं।

○○ पत्रिका योगक्षेमी सदस्य ○○

Shri Jodhraj Baid
B-5/86, Safdarjung Enclave, New Delhi-29

सम्भव कर दिखाया ज़िंदगी में ज़िंदगी

■ देवेन्द्र आर्य ■

कवि और आलोचक (गोरखपुर)

सब बहा ले जायेगी यह वक्त की सूखी नदी
एक दिन कहलायेंगे हम, एक थे देवेन्द्र जी

कौन से खोते में जा के छुप गयी है रोशनी
टार्च लेके खोजती फिरती बेचारी तीरगी

खाना–पीना तक हुआ दुश्वार, जीना है मुहाल
बस हमें जिंदा रखे है ज़िंदगी की सनसनी

मेरे बेटे तुम जो बन पाये, तुम्हारा कर्म है
जो नहीं हो पाये तुम वह थी मेरी लाचारगी

एक चेहरे पर कई चेहरे थे अब तक मौत के
हमने सम्भव कर दिखाया ज़िंदगी में ज़िंदगी

बेर की केले से बेशक तब न बन पायी रहीम !
मोजिज़ा देखो कि अब दोनों में अच्छी निभ रही

जिस्म हो या रूह हो रस्ता कि राही या कि ख़्वाब
काश! गज़लों में भी होती थोड़ी सी आवारगी

ज़िंदगी में क्यों और कैसे की कोई ऑडिट नहीं
कट गयी सो कट गयी और रह गयी सो रह गयी

जब कभी हिन्दू मुसलमां होंगे हम और होगा प्यार
कुछ न कुछ तो काम आयेंगे हमारे जायसी

(तीरगी = अंधकार, मोजिज़ा = चमत्कार)

हरियाली का सेहत से नाता

■ किरण बाला ■

दुनिया में अगर कोई चीज मन–मस्तिष्क को सर्वाधिक शांति और सुकून प्रदान करती है तो वह है हरियाली। हरे–भरे खेत–खलिहान, बाग–बगीचे, पेड़–पौधे, घास और हरीतिमा से आच्छादित पर्वत श्रृंखला भला किसका दिल खुश नहीं कर देते हैं। पर्यावरण के लिए भी इसका अपना खास महत्व है और यदि यह हरियाली हमारे घर के आसपास हो तो फिर क्या कहने !

हाल ही में जर्मन वैज्ञानिकों ने हरियाली के प्रभावों को लेकर एक शोध किया। इसमें घर के 250 मीटर के दायरे में हरियाली होने का इंसान के मन–मस्तिष्क और सेहत पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया गया। शोध करने वालों में यूनिवर्सिटी मेडिकल सेंटर हेमबर्ग–एप्पनडॉर्फ के प्रोफेसर सिमोन कुन और मैक्स प्लैंक इंस्टीट्यूट ऑफ ह्यूमन डवलपमेंट के प्रोफेसर उल्मन लिन्डेनबरगर शामिल थे। दोनों प्रोफेसर बताते हैं, "अब तक ऐसा माना जाता था कि सेहत पर अच्छे वातावरण का असर पड़ता है। वैज्ञानिक तौर पर इसकी सत्यता को जाँचने के लिए हमने 341 लोगों के व्यवहार का 11 साल तक अध्ययन किया। इस दौरान देखा गया कि प्रतिभागी कहां रहता है और उसके आसपास कैसा पर्यावरण है। इन सभी की उम्र 61 से 82 साल तक की थी। इन सभी की याददाश्त व तर्कशक्ति का टेस्ट किया गया और दिमाग की गतिविधियों को स्कैन किया गया।"

अध्ययन से प्राप्त डाटा के विश्लेषण से पता चला कि हरियाली वाली जगह या जंगल के पास रहने से दिमाग की पूरी संरचना पर असर पड़ता है। अगर घर के 250 मीटर के दायरे में हरियाली हो तो दिमाग स्वस्थ रहता है तथा तेजी से काम करता है। दिमाग में एमिगडाला नाम का एक हिस्सा होता है। जटिल संरचना वाला ये हिस्सा ग्रे मैटर से बना होता है।

इंसान की भावनाओं को नियंत्रित करने में इस हिस्से का अहम किरदार होता है। अध्ययन में सामने आया कि हरे–भरे वातावरण में रहने से दिमाग का ये हिस्सा अच्छी तरह से काम करता है। इससे तनाव, डिप्रेशन, भूलने की बीमारी और मोटापे तक का भी खतरा काफी कम हो जाता है। दिल की बीमारियां दूर रहती हैं। सिजोफ्रेनिया होने की संभावना कम हो जाती है। उम्र भी बढ़ती है। शोध में यह भी सामने आया कि हरियाली या जंगल के आसपास रहने से जल्दी मौत का खतरा भी 16 प्रतिशत तक कम हो जाता है।

इस अध्ययन से मुख्य तौर पर ये साबित होता है कि गाँव के लोगों की तुलना में शहरी लोगों में इस तरह की बीमारी होने की आशंका ज्यादा होती है। यदि आप खुली जगह में रहते हैं तो इससे मोटापा और तनाव कम होता है।

इसलिए यदि आप स्वस्थ, निरोगी, प्रसन्न और दीर्घायु बने रहना चाहते हैं तो हरियाली से नाता जोड़ें। अपने घर और उसके आसपास हरियाली बढ़ाने के प्रयास करें। घर के आंगन में और घर के बाहर पेड़–पौधे लगाएं।

यदि खुला आंगन नहीं हो तो घर की छत पर गमलों में पौधे लगाएं। उनकी बागवानी करने, खिलते फूलों को निहारने और उनकी हरियाली देखने से आँखों को ठंडक पहुँचती है तथा मन प्रफुल्लित होता है।

यदि आपके आसपास हरियाली नहीं है तो रोजाना एक घंटा आप वहां बिताएं, जहां भरपूर हरियाली हो। मार्निंग वॉक के लिए भी ऐसी जगह चुनें, जहां हरियाली हो। हरे–भरे वातावरण से दिन की शुरुआत करने से आप सारा दिन अपने आपको स्वस्थ और प्रसन्न अनुभव करेंगे तथा खुद को ऊर्जावान महसूस करेंगे।

✍ *मंदसौर निवासी लेखिका पिछले करीब चार दशकों से मनोविज्ञान तथा पर्यावरण से जुड़े विषयों पर लिखती रही हैं।*

विनम्रता एकै साधे सब सधे

■ डॉ. वीरेन्द्र भाटी मंगल ■

भारतीय संस्कृति का सूत्र वाक्य है, 'विद्या ददाति विनयम्' अर्थात् विद्या प्राप्त करने के बाद व्यक्ति में विनम्रता का गुण सहज ही आ जाता है। वहीं इसका एक पक्ष यह भी है कि जिससे हम कुछ सीखना चाहते हैं, उसके प्रति विनम्रता के भाव के बिना वह ज्ञान प्राप्त करना संभव नहीं हो पाता। विनम्रता विकास की जननी है। यह जीवन का सहज और आवश्यक गुण है। सही मायने में व्यक्ति के आंतरिक एवं बाह्य व्यक्तित्व का दर्पण है विनम्रता।

विनम्रता हर किसी को अपनी ओर आकर्षित कर लेती है। विनम्र व्यक्ति सभी जगह सम्मान पाता है। साथ ही अन्य लोगों के लिए आदर्श भी बन जाता है। जिस व्यक्ति में जितनी अधिक विनम्रता होती है, लोग उसकी महानता को तत्काल स्वीकार कर लेते हैं। विनम्र व्यक्ति ही सर्वप्रिय हो सकता है। सही मायने में विनम्रता के संस्कार ही जीवन को नई दिशा देने में सक्षम हैं। सहिष्णुता का अभाव तथा अहं का प्रभाव व्यक्ति में व्याप्त विनम्रता को खण्डित करने में सहायक होता है। वर्तमान दौर में बढ़ रहे द्वन्द्वों का प्रमुख कारण अहं का हावी होना ही है। अहं से पोषित विनम्रता अधूरे ज्ञान का परिचायक होती है। जब तक व्यक्ति के आचरण में विनम्रता नहीं आये, तब तक अहं के विसर्जन की बात सोची भी नहीं जा सकती। विनम्रता के द्वारा अनेक द्वन्द्वों को पाटा जा सकता है। बस आवश्यकता इस बात की है कि विनम्रता को जीवन में धारण किया जाये।

प्रदर्शन से परे आत्मा के विकास का सूत्र है विनम्रता। विनम्र व्यक्ति के स्वभाव में प्रदर्शन का भाव नाम मात्र का भी नहीं होता है। वे ही लोग पथभ्रष्ट होते हैं जो विनम्रता को सहज गुण न मानकर प्रदर्शन का लबादा मानते हैं। झूठी विनम्रता का प्रदर्शन स्वार्थ का जनक है। स्वार्थी व्यक्ति परिवार एवं समाज में अपनी सफल पहचान नहीं बना पाता है।

मौजूदा समय में जीवन से विनम्रता का ह्रास तीव्र गति से हुआ है। विनम्रता का स्थान चापलूसी लेती जा रही है। चिकनी–चुपड़ी बातों से अपना कार्य निकलवाने का प्रयास ही विनम्रता का पर्याय बनता जा रहा है जबकि विनम्रता में न तो चापलूसी होती है, न ही स्वार्थ सिद्धि की अपेक्षा।

जो व्यक्ति झुकना जानता है, संसार उसके सामने स्वयं झुकने लग जाता है, यह है विनम्रता का प्रभाव। विनम्रता के गुण को अपनाकर व्यक्ति अपने जीवन को सुख–सौभाग्य से सुरभित कर सकता है। विनम्रताहीन व्यक्ति जीवन में बहुत कुछ पाने से वंचित रह जाते हैं। झुकते वे ही हैं जिनमें कुछ संस्कार होते हैं, गुण होते हैं। अहं से आपूरित व्यक्ति टूटना पसंद करते हैं लेकिन झुकना नहीं और यह भी सच है कि जो अकड़ते हैं, वे टूटते ही हैं। किसी ने ठीक ही कहा है–

झुकता वही है जिसमें जान होती है,
अकड़ तो मुर्दे की पहचान होती है।

अहंकार से मुक्त जीवन को ही विनम्र जीवन की संज्ञा दी जा सकती है। आज के दौर में अहंकार युक्त ज्ञान बढ़ा है। ऐसा ज्ञान भले ही रोजगार पाने का जरिया बन जाये, लेकिन आत्मिक शांति एवं जीवन विकास के लिए विनम्रता से युक्त ज्ञान को ही परिपूर्ण

माना जा सकता है। विनम्रता को धारण करने के लिए व्यक्ति को सहजता, सरलता, सहिष्णुता के साथ आध्यात्मिक विकास की अवधारणा को समझना होगा।

विनम्रता का गुण आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग भी प्रशस्त करता है। जीवन के विविध चरणों में भिन्न–भिन्न स्थितियों के साथ सामंजस्य एवं सहिष्णुता इसके लिए परम आवश्यक है। विनम्रता का भाव एक दिन का परिणाम नहीं हो सकता है। धैर्य एवं निरन्तर अभ्यास के साथ विनम्रता का आचरण तथा आध्यात्मिक विचारों का समावेश ही जीवन को सुरभित बना सकता है। विनम्रता को धारण कर व्यक्ति अपने जीवन के साथ–साथ परिवार, समाज एवं राष्ट्र के विकास में आध्यात्मिक चेतना के जागरण का वाहक बन सकता है।

विनम्रता तमाम योग्यताओं की जननी है। इसके द्वारा व्यक्ति अपने जीवन में ज्ञान, दर्शन एवं चरित्र का समावेश कर सकता है। विनम्रता व्यक्ति को महानता के और करीब ला देती है। हर महान व्यक्ति में यह विशिष्टता देखी गयी है कि वे अति विनम्र रहे हैं। फलों से लदा वृक्ष ही जमीन की तरफ झुका होता है। सही मायने में विनम्रता को धारण करना ही जीवन–विकास का सशक्त माध्यम है। अहं का विसर्जन कर विनम्रता के सूत्र को शिरोधार्य करने वाला हर क्षेत्र में सफलता का ध्वज फहरा सकता है।

लेखक मोटिवेशनल स्पीकर तथा साहित्यकार हैं। इनकी कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। फिलहाल ये अणुव्रत समिति लाडनूं के मंत्री के रूप में अणुव्रत दर्शन तथा गांधी विचारधारा को जन–जन तक पहुँचा रहे हैं।

संवेदन

बेसहारा श्वानों को मुहैया करा रहे आशियाना

पिछले साल एक वीडियो वायरल हुआ था, जिसमें तेलंगाना के सिद्दिपेट जिले में कथित तौर पर दो दिनों में लगभग 100 आवारा कुत्तों को जहर देकर मार दिया गया था। वहीं, ऐसे भी लोग हैं, जो बेसहारा कुत्तों के लिए अपना सब कुछ कुर्बान कर चुके हैं। बेंगलुरू में रहने वाले राकेश शुक्ला ऐसे ही शख्स हैं। उन्होंने आवारा कुत्तों को आशियाना मुहैया कराने के लिए अपनी 20 गाड़ियां और तीन घर बेच दिये।

वर्ष 2009 में राकेश एक गोल्डन रिट्रीवर लेकर आये। एक दिन वे अपने डॉग के साथ वॉक पर निकले थे कि उन्हें एक पपी दिखायी दिया। वह बारिश से जैसे–तैसे अपनी जान बचा पाया था। राकेश उसे घर ले आये। बस यहीं से शुरू हुआ स्ट्रे डॉग्स यानी आवारा कुत्तों को रेस्क्यू करने का सिलसिला।

'डॉग फादर' के नाम से मशहूर राकेश बताते हैं, ''कभी मैं भी सफलता का मतलब समृद्धि समझता था, मगर अब मेरे जीवन का मकसद है कि मैं कितने ज्यादा से ज्यादा कुत्तों को बचा सकता हूँ।'' उन्होंने 800 से ज़्यादा स्ट्रे डॉग्स के लिए फार्म हाउस तैयार किया है, जहां इनकी देखभाल के लिए पूरी टीम मौजूद है। राकेश ने वॉयस ऑफ स्ट्रे डॉग्स नाम की संस्था भी रजिस्टर करवायी है, जो स्ट्रे डॉग्स और उनके पुनर्वास के लिए काम करती है। आज इलाके के लोग बेसहारा कुत्तों को बचाने के लिए राकेश को ही याद करते हैं।

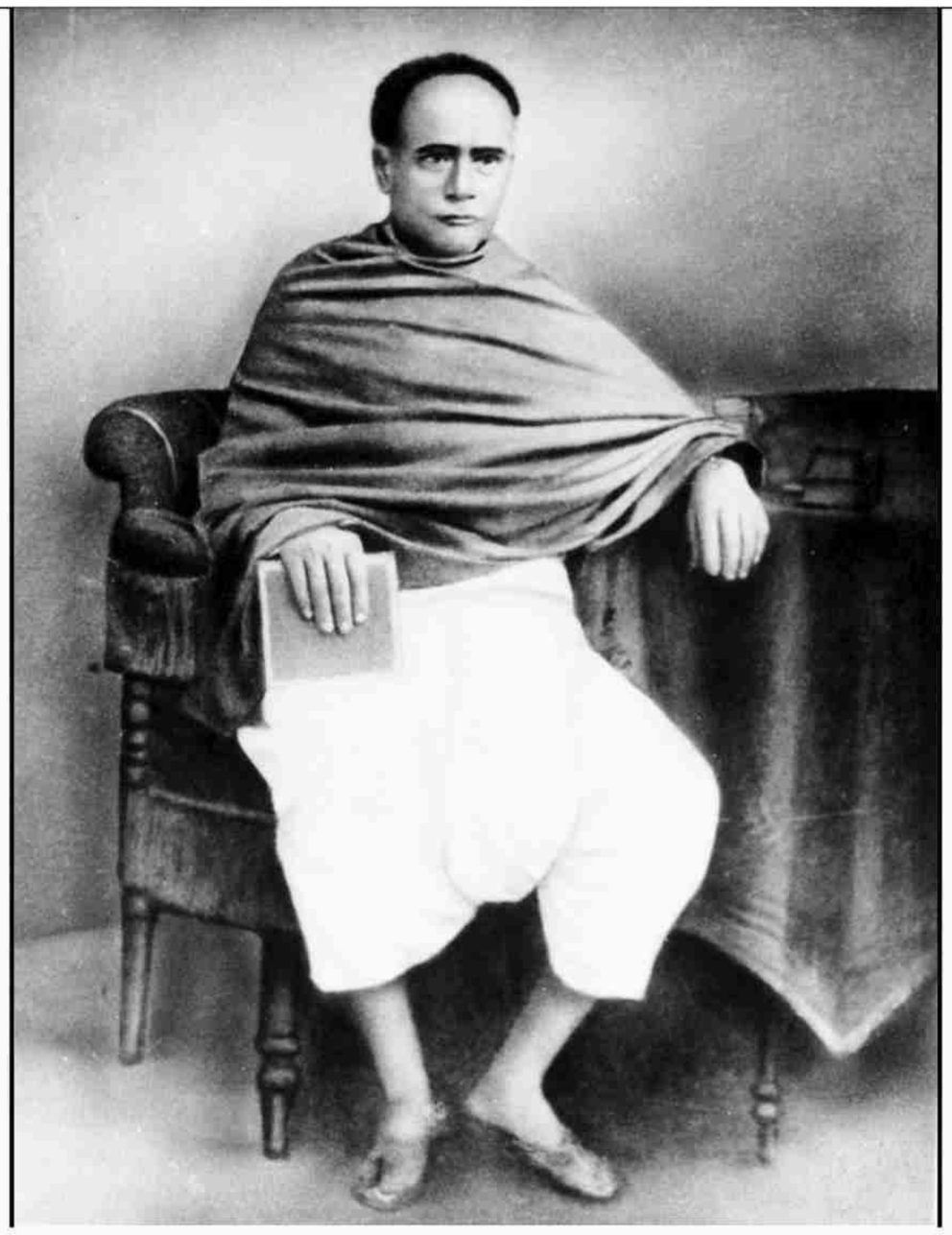

जयन्ती विशेष

ईश्वर चंद्र विद्यासागर

सच्चे मानवतावादी समाजसेवी

■ ज्योति प्रकाश खरे ■

जन–जन में अपनी आत्मा के स्वरूप का दर्शन करने वाले ईश्वर चंद्र विद्यासागर ने अपना सारा जीवन शिक्षा के प्रसार व समाज की कुरीतियों को खत्म करने में अर्पित कर दिया। उनका जन्म बंगाल के मेदिनीपुर जिले के वीर सिंह ग्राम में 26 सितम्बर 1820 को हुआ था। 9 वर्ष की आयु में संस्कृत कॉलेज में प्रवेश लेकर वे 13 वर्ष तक सतत अध्ययनशील रहे। अभावों ने परिवार को इस तरह घेर रखा था कि उन्हें अपना खर्च चलाने के लिए दूसरों का भोजन बनाने, बर्तन मांजने, सफाई करने जैसे अनेक कार्य करने होते थे। इसके बाद जो समय बचता, वह कॉलेज में निकल जाता। घर पर पढ़ने के लिए दिन में बिल्कुल ही समय न बचता था और रात की पढ़ाई में सबसे बड़ी समस्या थी कि दीपक के लिए तेल कहां से लायें? ऐसे में सड़क किनारे स्थित नगरपालिका की लालटेन की रोशनी में वे पढ़ाई करते। जब कभी रात में अधिक नींद सताने लगती तो आँखों में सरसों का तेल लगा लेते या अपनी चोटी को पीछे किसी वस्तु से बाँध लेते। उनकी कर्मठता और परिश्रमशीलता का ही परिणाम था कि उन्हें 'विद्यासागर' की उपाधि से सम्मानित किया गया।

1847 ई. में वे संस्कृत कॉलेज में सहायक सचिव के पद पर नियुक्त किये गये तथा परिश्रमशीलता और ईमानदारी की बदौलत प्राचार्य जैसे महत्वपूर्ण पद तक जा पहुँचे। इसी अवधि में उनके द्वारा लिखित संस्कृत व्याकरण के प्रथम तीनों भाग प्रकाशित हुए जो लंबे समय तक पाठ्य पुस्तक के रूप में चलते रहे। वे संस्कृत के विद्वान तो थे ही, उन्होंने बांग्ला भाषा में भी कई पुस्तकें लिखीं। संस्कृत के विशद ज्ञान के लिए उन्हें सी.आई.ई. की उपाधि से विभूषित किया गया था। कठोर परिश्रम की बदौलत उन्होंने 19वीं शताब्दी के विद्वानों में प्रमुख स्थान बनाया। मई 1855 में ईश्वर चंद्र विद्यासागर की नियुक्ति विद्यालयों के सहायक निरीक्षक के पद पर हुई। उन दिनों इस महत्वपूर्ण पद पर केवल अंग्रेजों की ही नियुक्ति होती थी। कोई असाधारण प्रतिभा का धनी भारतीय ही इस पद को प्राप्त कर पाता था।

ईश्वर चंद्र जहां विद्यासागर थे, वहीं दया सागर भी थे। पीड़ित मानवता के प्रति उनके हृदय में करुणा की भावना थी। वे कितने ही छात्रों को पढ़ाई का खर्च देते थे। कितने ही निर्धनों के लिए अन्न, वस्त्र का प्रबंध करते थे। वे किसी ऋणग्रस्त को परेशान देखते थे तो चुपचाप ही उसका ऋण मय ब्याज के चुकता कर देते। यदि कोई माता–पिता कन्यादान करने में अपने को असमर्थ पाते तो उन्हें ईश्वर चंद्र के लंबे हाथ सहायता पहुँचाते हुए दिखाई पड़ते थे।

ईश्वर चंद्र की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि एक बार विवेक की कसौटी पर उन्हें जो बात खरी लगती, उसे व्यवहार रूप देने में तनिक भी संकोच न होता था। हिन्दू विधवाओं की दयनीय स्थिति

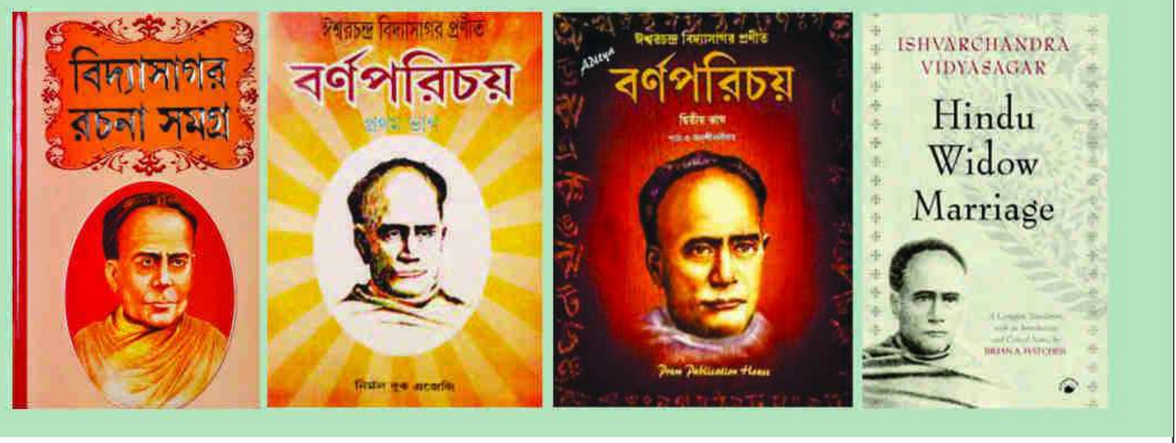

देखकर उनका हृदय रो पड़ता था। उन्होंने धर्मग्रन्थों के आधार पर अकाट्य तर्कों से यह सिद्ध कर दिया कि विधवा विवाह शास्त्र सम्मत है। यदि कोई पति, पत्नी की मृत्यु के बाद दूसरा विवाह कर सकता है तो विधवा भी पुनर्विवाह करने का अधिकार रखती है। तब तक विधवा विवाह को कानून से अनुमति नहीं मिली थी। राजा राममोहन राय के प्रयत्नों से सती प्रथा तो बंद हो चुकी थी। अब विधवा विवाह की दिशा में ईश्वर चंद्र ने प्रयास करना शुरू किया। अंततः उन्हें सफलता मिल ही गयी, जब विधवा विवाह अधिनियम को 26 जुलाई 1856 को गवर्नर जनरल की स्वीकृति मिल गयी और यह अधिनियम लागू हो गया। पहला विधवा विवाह 7 दिसम्बर 1856 को उनके मित्र राजकृष्ण बनर्जी के मकान पर ही उन्हीं के द्वारा सम्पन्न कराया गया। इससे पूरे समाज में सनसनी फैल गयी। तत्कालीन पुरातन पंथी पंडित भला ईश्वर चंद्र के प्रगतिशील विचारों को अपना समर्थन कैसे दे सकते थे? वे चिढ़ गये और ईश्वर चंद्र के सामाजिक बहिष्कार की घोषणा कर दी। उन्होंने एलान कर दिया कि जो व्यक्ति ईश्वर चंद्र के साथ भोजन करेगा तथा उनके विचारों का समर्थन करेगा, वह भी उनके साथ समाज से बहिष्कृत कर दिया जायेगा।

इन विरोधों के बावजूद ईश्वर चंद्र अपने मार्ग से विचलित नहीं हुए। नारी जागरण के जिस मार्ग पर वे आगे बढ़े थे, बढ़ते ही चले गये। वे स्त्री शिक्षा के समर्थक थे। उनका मानना था कि जब तक समाज के आधे हिस्से को अपंग स्थिति से निकाल कर समर्थ नहीं बनाया जाता, तब तक समाज की गाड़ी द्रुत गति से आगे नहीं बढ़ सकती। इसके लिए उन्होंने स्त्री शिक्षा पर बल दिया और अनेक कन्या विद्यालयों की स्थापना की। 29 जुलाई 1891 को हृदय रोग से इस सच्चे मानवतावादी समाज सेवी का स्वर्गवास हो गया। भारतीय समाज उनका चिर ऋणी है। साधनों के अभाव का रोना रोने वालों के अंधकारमय जीवन में ईश्वर चंद्र की परिश्रमशीलता और सच्ची लगन प्रकाश की एक किरण बन सकती है जिसके सहारे वे अपने जीवन का लक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं। नारी जागरण के अपूर्ण कार्य को आगे बढ़ाना ही उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

झांसी निवासी लेखक रेलवे से सेवानिवृत्त होने के बाद स्वतंत्र लेखन तथा साहित्य सृजन के साथ ही ऑडियो–विजुअल मीडिया में भी सक्रिय हैं। अनेक संस्थाओं की ओर से वे पत्रकारिता के क्षेत्र में सम्मानित हो चुके हैं।

स्वाभिमान से समझौता नहीं

ईश्वर चंद्र विद्यासागर सादा जीवन और उच्च विचारों की प्रतिमूर्ति थे। उन्हें कितने ही बड़े पदाधिकारी से मिलने जाना हो, वह धोती–चादर और चप्पल के अतिरिक्त और कुछ धारण न करते थे। पराधीन भारत में जन्म लेकर भी उनका स्वाभिमान देखते ही बनता था। जिन दिनों वे कलकत्ता संस्कृत कॉलेज के प्राचार्य थे, एक बार प्रेसीडेंसी कॉलेज के अंग्रेज प्रिंसिपल कैट से मिलने गये। जब वे कैट के कमरे में पहुँचे तो उन्होंने देखा कि कैट जूते पहने ही मेज पर पैर रखे बैठे थे। ईश्वर चंद्र के पहुँचने पर भी उन्होंने पैर नीचे नहीं किये, न ही उन्हें बैठने के लिए कहने की शिष्टता ही दिखायी। ईश्वर चंद्र आवश्यक चर्चा कर लौट आये। कुछ दिनों बाद उस अंग्रेज प्रिंसिपल कैट को किसी काम से संस्कृत कॉलेज आना पड़ा। कैट ने जैसे ही कार्यालय में प्रवेश किया, ईश्वर चंद्र ने उठकर स्वागत करना तो दूर, उन्होंने अपने पैर चप्पल सहित मेज पर रख लिये और उन्हें बैठने के लिए कुर्सी भी नहीं दी। अंग्रेज प्रिंसिपल को ईश्वर चंद्र के इस व्यवहार पर बहुत गुस्सा आया और अपमानित महसूस करके उन्होंने ईश्वर चंद्र की शिकायत शिक्षा परिषद् के सचिव डॉ. मुआट को भेज दी। सचिव ने जब ईश्वर चंद्र से जवाब–तलब किया तो उन्होंने लिखा – "मैं ठहरा एक अदना–सा हिन्दुस्तानी, यूरोप के तौर–तरीके भला मैं क्या जानूं? कुछ दिन पहले मैं मिस्टर कैट से मिलने गया था तो मैंने उन्हें हू–ब–हू उसी ढंग से बैठे देखा और वह मुझसे बैठने के लिए कहे बगैर बातचीत करते रहे। पहले तो मुझे हैरत हुई लेकिन फिर मैंने सोचा कि यूरोप में शायद शिष्टाचार का यही ढंग हो, लिहाजा मैंने सोचा कि हम जैसे अर्द्ध–सभ्य लोगों को भी शिष्टाचार के इस ढंग का अनुकरण करना चाहिए। जब वह मेरे यहां आये तो मैं भी उन्हीं की भांति शिष्टता से पेश आया। उन्हें नाराज करने का मेरा कोई इरादा नहीं था।"

डॉ. मुआट सारी बात समझ गये और उन्होंने मामले को रफा–दफा करना ही ठीक समझा। वास्तव में ईश्वर चंद्र ने इस व्यवहार से उसे सोचने को विवश कर दिया कि शिष्टाचार के सामान्य नियमों का पालन प्रत्येक समझदार व्यक्ति को करना ही चाहिए। जैसा व्यवहार दूसरों से चाहते हो वैसा स्वयं करो, का मूक संदेश ईश्वर चंद्र ने उस अंग्रेज प्रिंसिपल को दिया।

कैसे भगायें असफलता का डर

■ डॉ० शुद्धात्मप्रकाश जैन ■

एक व्यक्ति यह सोचता रहा कि उसे यदि तैरना आये तो वह पानी में उतरेगा। उसने एक तैराक से बात की – मुझे पहले तैरना सिखा दो तो मैं पानी में उतर सकता हूँ। तैराक ने समझाया कि पहले पानी में उतरना पड़ेगा, तब तैरना आयेगा। असफलता की आशंका के चलते किसी काम को टालते रहने से डर और अधिक ताकतवर बनता है।

अगर हारने से डर लगता हो तो जीतने की इच्छा कभी मत रखना। कभी–कभी छोटी–सी एक असफलता कई बड़े सफलताओं के द्वार खोल देती है। बिल कासबी ने कहा है– सफल होने के लिए सफलता की इच्छा असफलता के भय से अधिक होनी चाहिए।

डेल कारनेगी ने भी कहा है– आत्मविश्वास बढ़ाने की रीति यह है कि तुम वह काम करो, जिसे तुम करते हुए डरते हो। इस प्रकार ज्यों–ज्यों तुम्हें सफलता मिलती जायेगी, तुम्हारा आत्मविश्वास बढ़ता जायेगा।

- ▲ स्टीवन स्पीलबर्ग को यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया ने तीन बार रिजेक्ट किया था, उसके बाद भी वे दुनिया के सबसे सफल निर्देशकों में से एक बने।
- ▲ अब्राहम लिंकन को अमेरिका का राष्ट्रपति बनने से पहले 11 बार असफलता का मुँह देखना पड़ा था।
- ▲ टिम फैरिस की किताब 'द फोर आवर वर्क वीक' को 26 बार पब्लिशर्स ने रिजेक्ट किया था।
- ▲ 400 बार औसतन क्लिक करता है नेशनल जियोग्राफिक का एक फोटोग्राफर, तब उसे एक फाइनल इमेज मिल पाती है।
- ▲ 5126 बार जेम्स डायसन ने गलत प्रोटोटाइप्स बनाये थे, तब जाकर वैक्यूम क्लीनर बनाने में सफलता मिली।
- ▲ एडिसन ने बल्ब बनाने के पहले 10,000 बार से अधिक प्रयास किये थे, लेकिन हर बार वे असफल रहे। यदि वे असफलता के डर से प्रयास करना छोड़ देते तो शायद वे कभी बल्ब का आविष्कार ही नहीं कर पाते।

लगातार हो रही असफलताओं से निराश नहीं होना चाहिए। कभी–कभी गुच्छे की आखिरी चाबी ताला खोल देती है। असफलता महज एक गिनती है और सफलता उस गिनती की सबसे बड़ी संख्या।

यदि मैं अमुक कार्य करूँगा तो असफल हो जाऊँगा, यह सोचते रहने से उस कार्य को आप कभी करने के लिए खुद को तैयार नहीं कर पायेंगे। सफलता के लिए सबसे पहले जरूरी है कि आप काम को शुरू करें।

कहा भी गया है –

मंजिल मिल ही जायेगी, भटक कर ही सही।
गुमराह तो वे हैं, जो घर से निकले ही नहीं।।

✍ *लेखक क. जे. सोमैया जैन अध्ययन केन्द्र, विद्या विहार, मुम्बई के निदेशक हैं।*

सत्तानबे बटे सौ

■ डॉ० राकेश तैलंग ■

आज सुबह बेटी अनन्या की गणित की ऑनलाइन परीक्षा थी। स्कूल के कठोर आदेश थे– बच्चे चीटिंग नहीं करेंगे। पैरेंट्स चीटिंग नहीं करायेंगे।

अनन्या के लिए मैम की आज्ञा पत्थर की लकीर थी। पापा ने तो पहले ही कहा था, नंबर कम आयें लेकिन नकल की कोशिश बर्दाश्त नहीं। लेकिन मम्मी क्या करे? ममता की मारी। नंबरों से कोई समझौता नहीं। सौ में से सौ आने ही चाहिए।

खिड़की से अंदर के कमरे का दृश्य साफ दिख रहा था। दस मिनट और बचे थे। परीक्षा खत्म होने की तैयारी। अनन्या परेशान सी टेबल पर झुकी थी। कुछ था जो लिखना शेष रह गया था। घड़ी की सुइयां अब सात मिनट बाकी बता रही थीं।

मम्मी को लगा, हो न हो कहीं अटक रही है बेटी।

खिड़की से झांक कर अधखुले पाटों के बीच मम्मी ने फुसफुसाहट के साथ जानना चाहा, क्या? अनन्या समझ गयी, मम्मी उसकी हेल्प करने की मुद्रा में थी। उसने हल्के से पीछे मुड़कर मम्मी को खिड़की से हट जाने को कहा। मम्मी ने देखा, घड़ी की सुइयां अब तीन मिनट बाकी दिखा रही थीं। वे खिड़की से हटकर बाहर बैठ गयीं। कुछ पलों में अनन्या बाहर निकली। उसका हिसाब बिल्कुल ठीक था। सौ में से सत्तानबे नंबर उसने झोली में डाल लिये थे। बचे तीन नंबर वह खो चुकी थी लेकिन उसे तनिक भी मलाल नहीं था।

वह जानती थी कि वे तीन नंबर केवल एक फॉर्मूला लिखने के थे जो उसे याद नहीं आ रहा था। मम्मी को उसका एक इशारा बाकी तीन नंबर भी उसकी झोली में डाल सकता था, लेकिन ऐसा न करके उसने सौ में से सौ से भी ज्यादा नंबर हासिल कर लिये थे।

और मम्मी को विश्वास हो गया था कि बेटी में ईमानदारी का संस्कार रोपित हो गया है। मम्मी को अपनी भूल का एहसास हुआ और उन्होंने अनन्या को प्यार से गोदी में उठा लिया।

राजसमंद निवासी लेखक पूर्व जिला शिक्षा अधिकारी तथा अणुविभा के 'स्कूल विद ए डिफरेंस' प्रकल्प के संयोजक हैं।

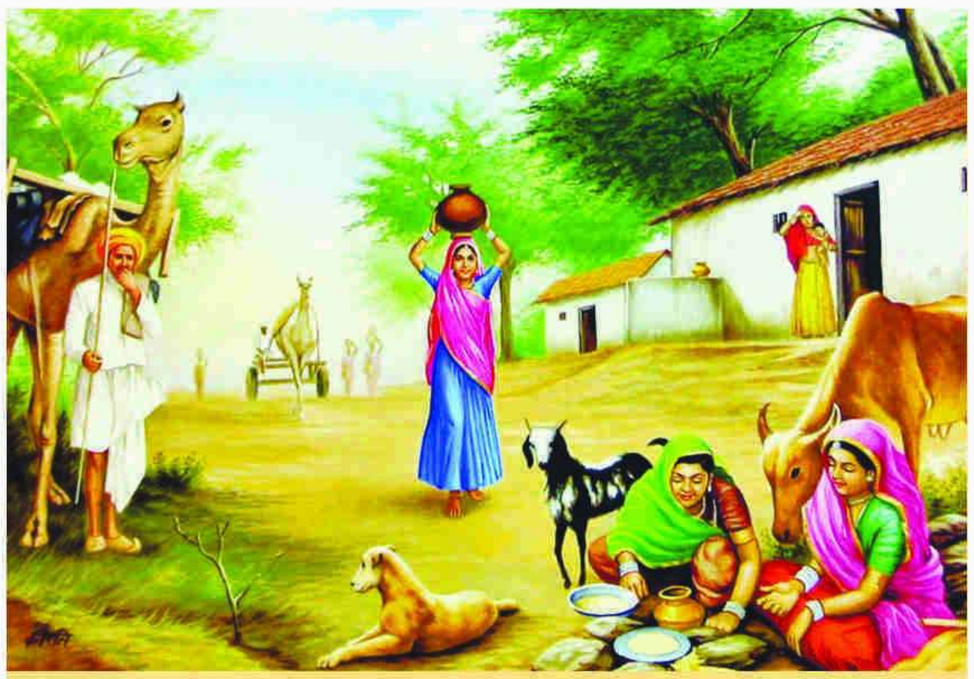

वो कहाँ जायें...

■ दिनेश रघुवंशी ■

वरिष्ठ गीतकार व गजलकार (फरीदाबाद)

ये न थी उम्मीद बिल्कुल ज़िन्दगी से
ज़िन्दगी ने कैसे अब ये दिन दिखाये
इक हवेली थी बुजुर्गों की निशानी
दस बरस पहले उसे भी बेच आये
वक्त ने बस एक करवट ली जरा सी
पड़ गये हैं सारे उल्टे दाँव जिनके
वो कहाँ जायें नहीं हैं गाँव जिनके।

स्वप्न में भी गाँव अब आता नहीं
गाँव की माटी से रिश्ता तोड़ बैठे
थोड़ी सुविधाओं, सुखों के वास्ते हम
एक गहरे दुःख से नाता जोड़ बैठे
गाँव की अमराइयाँ अब याद आयीं
जल रहे हैं शहर में अब पाँव जिनके
वो कहाँ जायें नहीं हैं गाँव जिनके।

नौ बजे से सात तक खटते थे जिसमें
हो गया है बंद अब वो कारखाना
जो बचत थोड़ी बहुत थी उड़ गयी सब
हो गया मुश्किल बहुत अब घर चलाना
है दुःखों की धूप ही मीलों तलक अब
थी लकीरों में सुखों की छाँव जिनके
वो कहाँ जायें नहीं हैं गाँव जिनके।

अतीत के झरोखे से...

इस स्तम्भ में 'अणुव्रत' पत्रिका के अर्द्धशती पूर्व के अंकों से चयनित सामग्री पुनर्प्रकाशित की जा रही है ताकि अणुव्रत आंदोलन के स्वर्णिम इतिहास को हम वर्तमान से जोड़कर भविष्य की दिशा तलाश सकें। इस अंक में प्रकाशित चार पृष्ठ की यह सामग्री 'अणुव्रत' पाक्षिक के 1 सितम्बर 1971 के अंक से ली गयी है।

हिंसा मुझे मंजूर नहीं

क्रांति के चलते हिंसा के साधनों पर जिन लोगों का प्रभुत्व होता है, और जो क्रांति के नाम पर समाज में नयी व्यवस्था खड़ी करते हैं, क्रांति के बाद वे ही लोग सत्ता अपने हाथ में ले लेते हैं। इस प्रकार आखिरकार हिंसक क्रांति आम लोगों के प्रति विश्वासघात में बदल जाती है।

इसलिए मैं हिंसा के मार्ग को अस्वीकार करता हूँ। हिंसा केवल अधूरी क्रांति तक ही ले जाती है। अमुक चार व्यक्तियों के बदले दूसरे चार लोगों के हाथ में सत्ता जाये, इसमें मुझे कोई दिलचस्पी नहीं। मैं तो चाहता हूँ कि सत्ता लोगों के हाथ में पहुँचे। अगर हम लाखों लोगों को एक विराट अहिंसक कार्यक्रम में सम्मिलित कर सकेंगे, तो उसी में से एक सामाजिक क्रांति खड़ी हो सकेगी। लेकिन अगर इसके बदले कुछ मुट्ठी भर लोगों की मेहनत से ही परिवर्तन हुआ, तो उससे सत्ताधारियों के कंधे बदलने की क्रांति होगी, पर सामाजिक क्रांति नहीं हो सकेगी।

-जयप्रकाश नारायण

शत-शत अभिनन्दन

मुनि सुखलाल

जलधर!
तुम जहां भी बरसोगे,
वह मेरा ही खेत होगा।
क्योंकि मैंने बो रखे हैं अपनत्व के बीज
सर्वत्र ही।
इसलिए मेरे ये यायावरी चरण
उस हर पगडंडी की ओर मुड़ सकते हैं।
जहां मुझे तुम्हारी भीनी-भीनी सुगंध का
आभास मिलेगा
इसलिए, मात्र इसीलिए
तुम नभ में आये!
तुम्हारा शत-शत अभिनन्दन!

अहंकारी स्वार्थ की स्पर्धा : एक नृशंस अध्याय

-मदालसा नारायण

विज्ञान के प्रगतिशील भौतिक साधनों के द्वारा आज दुनिया अपने आप एकता के सूत्र में बँधती जा रही है। स्वदेश में और विदेशों में परिभ्रमण की भावना बढ़ रही है। विश्व के सभी व्यक्तियों का परस्पर सम्पर्क भी बढ़ता जा रहा है। इसलिए लोगों के सर्व-सामान्य हित भी एक-दूसरे से जुड़ते जा रहे हैं। उनमें क,मन इन्ट्रेस्ट बढ़ रहा है। उसके अनुरूप शिक्षा और संस्कार दुनिया भर के बच्चों को बचपन से मिलने लग जायें तो विश्व में शांति-स्थापना का वातावरण अपने आप जागृत हो सकता है।

विश्व के सुविशाल गोलाकार में भारतवर्ष प्राचीनतम युग में साकार हुआ था। तभी से 'वसुधैव कुटुम्बकम्' अर्थात् वसुधा यानी पृथ्वी ही एक कुटुम्ब है तथा 'न मनुष्यात् श्रेष्ठतरं हि किंचित' अर्थात् मनुष्य से अधिक श्रेष्ठ और कुछ भी नहीं है, ये भाव, ये मंत्र यहां प्रकट हुए थे और तभी से इनको सिद्ध करने की साधना अखण्ड रूप से भारतवर्ष में चलती रही है। इसी का तो यह जाहिराना बड़ा भारी सबूत है कि पूर्वी बंगाल से दिन-रात महानदी की तरह बहते हुए चले आ रहे लाखों शरणार्थी पनाह पाते चले आ रहे हैं। जबकि दुनिया के दूसरे बड़े-बड़े शक्तिसम्पन्न राष्ट्र चुप्पी साधे बैठे हैं। क्या करें वे? बड़े मजबूर हैं। उनके यहां 'सत्यमेव जयते' और 'अहिंसा परमोधर्म:' जैसे महान सिद्धान्त प्रकट नहीं हुए, न मानव की महिमा के गुण-गौरव गाये गये। तो वे संकट से

अतीत के झरोखे से...

घिरे मानवों को कैसे अपना समझें? और अपना समझे बिना उनका रक्षण या सरंक्षण करने के लिए कैसे आगे बढ़ें? यही तो दुनिया के बड़े-बड़े देशों की समझ में आज ठीक से नहीं आ रहा है। तो उसकी चिंता-फिकर हम क्यों करें? करेगा वही अपने आप अखिल विश्व का संचालक या संयोजक जो होगा। उसी की यह जिम्मेदारी है। उसी को निभाने दी जाये तो उसे भलीभांति वह निभानी ही पड़ेगी। नहीं तो दुनिया में उसी जग के संचालक की ही बड़ी बदनामी हो जायेगी। यह उसे आज तक कभी न मंजूर हुआ, न होगा। क्योंकि वह भी बहुत बड़ा भारी सत्ताधारी रहा है और सदा रहना चाहता है। इसलिए वही तो यह सारा भीषण नरसंहार कराके दुनिया को डरा रहा है। और अपनी एकछत्र छाया तले सिर झुकाकर सुसंगठित होने को मजबूर कर रहा हो, ऐसा लगता है। तो उसकी वह जाने और दुनिया के दूसरे देश उसकी बात मानें या न मानें।

हमें किसी बात से घबराने की कोई जरूरत नहीं है। कारण हमारी जिंदगी की बुनियाद जीवन के चिरस्थायी मूल्यों पर जमी हुई है। उसे कोई डिगा नहीं सकता। चाहे कितने ही भारी तूफान या भयानक झंझावात आ जायें, फिर भी ऊपर के नवनिर्माण की कहीं कोई दीवारें भले ढह जायें, किंतु हजारों वर्षो से सु-ढ़ बनी भारतीय जीवन की बुनियाद कभी हिल नहीं सकती क्योंकि दुनिया भर के लोगों के प्रति प्यार और सत्कार की भावना हमारे दिलों में भरी है। सब धर्मों को हमने अपने देश में खपाया है और उन्हें भली-भांति पनपने दिया है। विभिन्न भाषा, वेशभूषा और रीति-रिवाज वाले इस देश की नीति बड़ी उदार है और लोगों के हृदय बड़े करुणा और क्षमाभाव से भरे हैं। यहां के लोग सत्य, न्याय और सुख-शांति चाहने वाले हैं। उसी के लिए स्वतंत्रता की सफल साधना यहां हुई। पर विदेशी या पश्चिम की भेद-नीति ने यहां से जाते-जाते हमें विभाजित कर दिया। अब समय आया है कि हम अच्छी तरह से संभल जायें और पंचशील की अपनी नीति पर दृढ़ता से कदम जमा लें।

अब हम अपने देश, काल और परिस्थिति की ओर भी तो जरा गौर कर देखें कि हमें आज क्या करना है? सैकड़ों वर्षो तक दुनिया में अंग्रेजी साम्राज्य का प्रभाव फैलता रहा, जहां सूरज कभी अस्त नहीं होता था। उनके ऐसे चमकते-दमकते प्रभाव के अधीन भारत भी पराधीन हो गया। महात्मा गांधी की सत्य की उपासना और अहिंसा की सामूहिक साधना ने हमें स्वाधीनता के सूर्योदय का दर्शन कराया। क्षणभर के लिए हम आत्मविभोर हो उठे। हम पर स्वराज का नशा छा गया। बस उसी गफ में 14 अगस्त 1947 को भारत-पाकिस्तान का विभाजन हो गया। उसका दु:ख-दर्द आज तक हम भुगत रहे हैं और पूर्वी पाकिस्तान में भी वह फोड़ा बनकर पकता रहा जो अब अचानक महा भयानक नरसंहार के रूप में फूट पड़ा है। जिसका 'मवाद' बह-बहकर भारत की ओर बढ़ता चला आ रहा है। दुनिया की नजरों में वह बड़ी भारी मुसीबत है, पर भारत के पास सेवा और स्नेह की ऐसी बड़ी जादुई शक्ति है कि उसके द्वारा वह बड़ी से बड़ी मुसीबत को भी प्यार भरी सेवा-शुश्रूषा से संशोधित करके 'मानवता' के रूप में सुशोभित कर सकता है।

जबकि पाकिस्तान आज खुदगर्जी और नफरत की ऊँची चट्टान पर खड़ा अपने ही भाई -बिरादरों पर दिन-रात गोलाबारी और तोपमारी कर रहा है। पाकिस्तान जो भारत का प्रतिस्पर्धी एक राष्ट्र बना था, उसके भी आज दो टुकड़े हो गये हैं। पश्चिमी पाकिस्तान के कड़े चंगुल से पूर्वी बंगाल ने अपने को बचाना चाहा। शेख मुजीबुर्रहमान-सा ईमानदार सच्चा सेवक और ऊँचे दर्जे का न्यायदाता साथी पाकर जनता ने हमराय से उसे अपना नेता बरकरार कर दिया। इस नतीजे को सुनकर जनाब याह्या खां दंग रह गये। एड़ी से चोटी तक उनके जिस्म में आग लग गयी। जनाब भुट्टो ने उसमें केरोसिन के कनस्तर झोंक दिये। बस फिर क्या था, 25 अप्रैल की रात को दम की दम में बांग्ला देश की विजयी जनता सामूहिक और भीषण नरसंहार की शिकार हो गयी। बेगुनाह निहत्थे बाल-बच्चे-बूढ़े सभी

अतीत के झरोखे से...

एक साथ लाखों की तादाद में बड़ी बेरहमी से मौत के घाट उतार दिये गये। और आज तक भी वह सिलसिला जारी है। जनाब याह्या खां और भुट्टो आज स्वार्थ और सत्ता का हूबहू नशा बनकर खड़े हैं। वे खुद-ब-खुद बड़े भारी सितम की शक्ल बनकर न जाने किस ख्वाब को धरती पर उतरते हुए देखने के लिए अड़े हैं।

क्या करें वे? स्वार्थ और सत्ता की स्पर्धा, यही उनका संस्कार है। विश्व में हिटलरशाही की प्रतिक्रिया फैली। उसी में से अहंकारी स्वार्थ और सत्ता की स्पर्धा उभर आयी। विज्ञान के प्रगतिशील भौतिक शस्त्रास्त्रों ने उसको उत्तेजित किया। प्रतिक्रियावादी राष्ट्रों की सहानूभूति और सहायता ने पाकिस्तान की हिम्मत बढ़ायी, पर उसमें भी सबका स्वार्थभाव ही भरा है। यह पाकिस्तान के सत्ताधीशों को कौन समझाये?

स्वार्थभरी सत्ता की आकांक्षा के साथ जिनके संस्कार बचपन से जुड़े हुए रहे हैं, उन राष्ट्रों की या ऐसे सत्ताधारी राष्ट्राधिकारियों की चित्तवृत्ति पूर्वी पाकिस्तान के भीषण नरसंहार-बेगुनाह निहत्थे लाखों प्रजाजनों के बेमिसाल दर्दनाक हत्याकाण्ड से भी एकदम जड़ और तटस्थ बनी हुई है। यह बड़ी दिल दहलाने वाली बात होते हुए भी बड़ी गहराई से सोचने विचारने की बात है। भौतिक शस्त्रास्त्र और साध्य-साधनों की स्पर्धा आज दुनिया के अधिकांश देशों में जगी हुई है। उनके आधार पर वे सत्तारूढ़ हुए हैं और उन्हीं के आधार पर सत्ता पर कायम बने रहना चाहते हैं। अत: भौतिक शस्त्रास्त्र और साधनों का ही सहारा और बल उनके पास है। उसी का उनके दिलों में बड़ा महत्व है। इसलिए शस्त्रास्त्र के आधार पर सत्ता पर कायम रहने के लिए जिनके अरमान हैं, उन्हीं की ओर उनकी सहानुभूति और सहयोग की भावना होना अधिक स्वाभाविक है। एक साधारण साइकोलॉजी की दृष्टि से इस हकीकत को भी हमें नजरअंदाज नहीं करना चाहिए।

इधर हमें अपनी खुद की हालत पर भी गौर करना चाहिए। जिसमें एक तो असली हकीकत यह है कि भारत के दिल में दूसरे देशों को दबोच कर उन पर अपना अधिकार जमाने की ख्वाहिश कभी नहीं जन्मी, न कभी किसी दूसरे देश पर हावी होने की कोशिश ही उसने की है।

इसीलिए बहुत बड़े पैमाने पर शस्त्रास्त्र बनाने या बढ़ाने का कभी अरमान मन में नहीं जागा। हां, अगर कोई अचानक हमला कर बैठे तो अपना बचाव और रक्षा करने की तैयारी भारत ने सदा रखी है। पर दुनिया की होड़ में खड़े होने के लिए यह नाकाफी है। फिर भी इसमें कोई बात नहीं है। कारण, भारत की महानता, उसके संस्कार, परम्परा और उसका गुण-गौरव उसकी अध्यात्म-साधना में और उसकी आत्मभाव भरी भूमिका में समाया हुआ रहा है। इसी से अंग्रेजों के साथ कॉमनवेल्थ में वह शुरू से शामिल रहा है और संयुक्त राष्ट्र संघ का सदस्य भी भारत इसी आत्मभावना से ही बना हुआ है। भारत की पंचशील की नीति का आधार भी यही है। स्वाधीनता के बाद प्रजातंत्र की स्थापना भारत में हुई और उसका जो संविधान घोषित हुआ है, उसके मौलिक अधिकारों की मूलभूत बुनियाद यह सबके प्रति एकात्म भावना ही रही है। उसमें सत्य का आग्रह, न्याय-निष्ठा और आत्मशक्ति यही हमारी ताकत की मजबूत जड़ें हैं।

फिर भी, भारत और पाकिस्तान दो स्वतंत्र राष्ट्र बन जाने पर भी, एक-दूसरे के हालात और हकीकतों से बचकर नहीं रह सकते। सैकड़ों वर्षो से जिनकी रिश्तेदारियां चली आ रही हैं, जान-पहचान, हिम्मत और हौसले की होड़ जिनमें लगी हुई है। दिल से दिलों के अरमान जिनके जुड़े हुए हैं, वे चाहे राजी से या बेराजी से भी, एक-दूसरे से जुदा या अलहदा कैसे रह सकते हैं? एक ही देश के तो दो हिस्से हुए हैं, फिर भी पड़ोसी हैं और रहेंगे ही। सुख में भले एक-दूसरे का साथ न दें, पर दु:ख, तकलीफ में या दूसरे बड़े खतरों में एक-दूसरे का साथ दिये बगैर कैसे रहा जा सकता है। इसीलिए आज पूर्वी पाकिस्तान से दिन-रात बह-बह कर आता हुआ शरणर्थियों का सैलाब भारत में पनाह पाता जा रहा है।

आंदोलन समाचार

अणुव्रत अभियान मास का उद्घाटन

कलकत्ता में साहित्य परामर्शक मुनिश्री बुद्धमल

कलकत्ता। पश्चिम बंग अणुव्रत समिति के तत्वावधान में मुनिश्री बुद्धमल जी के सान्निध्य में 15 अगस्त को 'अणुव्रत अभियान मास' उद्घाटन समारोह आयोजित किया गया। मुनिश्री मोहनलाल जी 'शार्दूल' ने उद्घाटन प्रवचन किया। प्रांतीय समिति के उपाध्यक्ष श्री दीपचंद नाहटा ने विचार रखे। श्री धर्मचंद जैन ने संयोजकीय वक्तव्य दिया। दोपहर ढाई बजे मुनिश्री मोहनलाल जी 'शार्दूल' के सान्निध्य में नेताजी सुभाष रोड व केनिंग स्ट्रीट के ठेला चालक मजदूरों के मध्य एक आयोजन किया गया। मुनिश्री की प्रेरणा से अनेक श्रमिकों ने मद्यसेवन, धूम्रपान व जुआ खेलने का परित्याग किया। श्री भानीराम वर्मा 'अग्निमुख' ने अणुव्रत एवं श्रमिक जीवन पर प्रकाश डाला। पश्चिम बंगाल अणुव्रत समिति ने अणुव्रत अभियान मास को संगठन, नशा निवारण, अध्यापक तथा व्यापारी-कर्मचारी उद्बोधन सप्ताह के रूप में विभक्त कर व्यवस्थित कार्यक्रम तैयार किया है।

बहादुरगढ़। 13 अगस्त की रात्रि को श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर्व के आयोजन में मुनिश्री राजकरण जी ने योगिराज कृष्ण के जीवन पर प्रकाश डाला। लाला रामकुमार ने मुनिश्री का स्वागत किया। श्री ओमनिवास तथा श्री महावीर प्रसाद जैन ने वक्तव्य दिये। 14 अगस्त को मुनिश्री राजकरण जी के सान्निध्य में शिक्षक सम्मेलन का आयोजन स्थानीय अणुव्रत समिति की ओर से किया गया। हरियाणा सरकार ने इस आयोजन ने अध्यापकों की उपस्थिति के लिए परिपत्र द्वारा आदेश प्रसारित किया था। सम्मेलन में हरियाणा के शिक्षा मंत्री श्री माडुसिंह भी उपस्थित थे। मुनिश्री चौथमल जी, श्री ओमप्रकाश गुप्ता आदि कई महानुभावों के वक्तव्य हुए। लाला हरिकिशनदास ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

अणुव्रत परीक्षा प्रमाण-पत्र वितरण

उदयपुर। मुनिश्री सुखलाल जी के सान्निध्य में 1 अगस्त को अणुव्रत परीक्षा प्रमाण-पत्र वितरण समारोह आयोजित किया गया। उत्तीर्ण छात्र-छात्राओं को डॉ. ए.एन. भट्टाचार्य ने प्रमाण-पत्र वितरित किये। इस अवसर पर प्रो. चंद्रसिंह नैनावटी, श्री महावीर सिंह मुर्डिया, श्री सबलसिंह नैनावटी, श्री दरियासिंह मेहता, श्री गुलाबचंद भण्डारी ने वक्तव्य दिये।

भीलवाड़ा। साध्वीश्री सिरेकुमारी जी के सान्निध्य में 1 अगस्त को डिप्टी इंस्पेक्टर ऑफ स्कूल श्री घनोपराय माथुर की अध्यक्षता में अणुव्रत परीक्षा प्रमाण-पत्र वितरण समारोह सम्पन्न हुआ। प्रमुख वक्ता थे श्री छितरमल, श्री अर्जुनलाल, चंदादेवी सुराणा व सुशीला हिरण। श्री लक्ष्मीलाल गांधी ने आभार ज्ञापन किया।

कटक। स्थानीय बांका बाजार स्थित मारवाड़ी हाईस्कूल में अणुव्रत परीक्षा प्रमाण-पत्र वितरण समारोह सम्पन्न हुआ। सर्वप्रथम राजस्थान सरकार का दिनांक 30.09.1969 का अणुव्रत परीक्षाओं संबंधी परिपत्र पढ़कर सुनाया गया। तत्पश्चात् परीक्षा नियमावली का पाठ किया गया। श्री चम्पालाल सेठिया द्वारा परीक्षार्थियों को प्रमाण-पत्र वितरित किये गये। उल्लेखनीय है यहां के श्री श्यामसुंदर कसेरा ने अ.भा. स्तर पर दसवां स्थान प्राप्त किया है।

नाम में बहुत कुछ रखा है

■ डॉ० कृष्णा कुमारी ■

नाम की महिमा इस सृष्टि में न्यारी है। हर व्यक्ति को अपना नाम बहुत प्रिय होता है। व्यक्ति अपने नाम से ही जाना जाता है, पहचाना जाता है। यशस्वी भी वह नाम से ही होता है, विशिष्ट भी बनता है। नाम में जादुई स्पर्श, आत्मीय भाव और चमत्कारी प्रभाव होता है। तभी तो जब कोई हमारा नाम लेकर पुकारता है तो हमारा मन गद्‌गद हो उठता है।

अवश्य ही नामकरण की जरूरत आदिम युग में ही महसूस कर ली गयी होगी। संभवतः जबसे भाषा का आविर्भाव हुआ, उसी समय से नामकरण संस्कार की परम्परा का भी शुभारंभ हुआ होगा। इस संदर्भ में मिस्रवासियों की मान्यता है, "परछाईं की तरह नाम भी प्रत्येक व्यक्ति का जीवन्त हिस्सा होता है। जन्म के तुरंत बाद नाम रख दिया जाना चाहिए वरना वह व्यक्ति पूरी तरह अस्तित्व में नहीं आ पाता।"

हमारे मनीषियों के अनुसार व्यक्ति का नाम उसके शरीर के रोम–रोम में रच–बस जाता है। ब्रह्माण्ड में भी हमेशा–हमेशा के लिए व्यक्ति के नाम की ध्वनि परिव्याप्त हो जाती है। नाम में वह अजस्र, अद्‌भुत प्राण होता है जो व्यक्ति को अजर–अमर बनाता है। व्यक्ति का नाम युगों–युगों तक बना रहता है।

हमारे देश में भगवान के नाम पर नाम रखने की परम्परा रही है ताकि पुकारने वाले के मुँह से हर बार भगवान का नाम स्वतः ही निकल जाये। यह भी सर्वमान्य है कि अक्षर ब्रह्म स्वरूप होते हैं। अजर–अमर होते हैं। एक बार उच्चरित होने पर ये ध्वनियाँ हमेशा–हमेशा के लिए ब्रह्माण्ड में परिव्याप्त हो जाती हैं। इसीलिए कहा जाता है कि हमेशा 'शुभ शुभ बोलिए'।

'नाम' की महत्ता सर्वोपरि है। मनुष्य ही क्या, गाँव, शहर, राज्य, देश सब नाम से ही तो जाने जाते हैं। भला नाम के महत्व का और क्या प्रमाण होगा। व्यक्ति को उसका नाम ही जीवित रखता है, चिरंजीवी बनाता है, जाति, क्षेत्र, भाषा नहीं। गौतम बुद्ध, महावीर स्वामी, हजरत मुहम्मद साहब, आइन्स्टाइन, रवीन्द्रनाथ टैगोर आदि के नाम हमेशा–हमेशा के लिए अमर हो चुके हैं। इनके 'नाम' नहीं होते तो इन्हें हम कैसे याद करते। नाम कमाना व्यक्ति का सबसे बड़ा लक्ष्य होता है। अपने नाम को अमर करने के लिए वह क्या कुछ नहीं करता। नाम कमाने के लिए किये गये अद्वितीय करतबों से इतिहास भरा पड़ा है। 'गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड' इसका ज्वलंत उदाहरण है।

अफसोस! आज सब कुछ बदलता जा रहा है। लगता है जैसे आदमी का नाम कहीं गुम होता जा रहा है। पड़ोसी, पड़ोसी का नाम नहीं जानता। आदमी केवल वर्मा, शर्मा, सक्सेना, जैन, अन्सारी, गुप्ता, देवनानी, थॉमस आदि बनकर रह गया है, वह केवल जातिसूचक बन चुका है। अब तो महिलाओं को भी मिसेज शर्मा, मिसेज भटनागर, मिसेज अरोड़ा आदि संबोधन से पुकारना आधुनिकता का प्रतीक माना जाने लगा है। किसी व्यक्ति के कार्यस्थल पर सारे सहकर्मी भी जरूरी नहीं कि उसका पूरा नाम जानते ही हों। ऑफिस में जब कोई पूछता है कि 'वर्मा जी' कहाँ

मिलेंगे? तब उत्तर मिलता है कि कौन–से वर्मा जी? यहाँ चार वर्माजी हैं। ऐसे में यदि उनका नाम याद है तभी बात बनेगी। दरअसल हम अपनी संस्कृति से विलग होकर पाश्चात्य संस्कृति का अनुसरण करके गौरवान्वित होते हैं। वहाँ सरनेम पहले लिखने की परम्परा है। उसी का अनुसरण करते हुए अब तो हमारे यहाँ की विवरणिकाओं में भी 'सरनेम' पहले लिखा जा रहा है। जाति नाम के पीछे से आगे तक आ गयी है।

कहा जाता है कि व्यक्ति में नाम के अनुसार गुण परिलक्षित होने लगते हैं। इसमें कितनी सच्चाई है, यह तो शोध का विषय है, लेकिन जब नाम व्यक्ति के रोम–रोम में रच–बस जाता है तो मन पर भी इसका प्रभाव पड़ता ही है। इसीलिए माता–पिता अपने बच्चों के श्रेष्ठ एवं प्रभावी नाम रखने का भरसक प्रयास करते हैं। अपने घर का नाम भी व्यक्ति बहुत सोच–विचार कर रखता है।

कुछ दिनों पहले किसी पत्रिका में पढ़ा था कि एक सर्वे के अनुसार नया पेन खरीदते समय उसके परीक्षण के लिए 99 प्रतिशत लोग सबसे पहले अपना नाम लिखते हैं क्योंकि आदमी को अपना नाम सर्वप्रिय होता है। क्यों न होगा! नाम में अद्‌भुत शक्ति जो होती है। निसंदेह दुनिया का सारा कार्य, व्यापार नाम से ही संचालित है। हम पेन भी लेते हैं तो ब्रांड का नाम देख कर लेते हैं, बच्चे को स्कूल में प्रवेश दिलाने के पहले मालूम करते हैं कि इसका कितना नाम है। नामी कंपनियों के उत्पाद आँखें मींचकर खरीदना आम बात है।

मनोविज्ञान व अध्यात्म के अनुसार जब व्यक्ति अपने आदर्श व्यक्ति के अनुसार स्वतः ढलने लग जाता है, तो उसके गुण व्यक्ति में अनायास समाहित होने लगते हैं। शनैः शनैः वह वैसा ही बन जाता है। फिर व्यक्ति अपने नाम के प्रभाव से कैसे वंचित रह सकता है? तभी तो लोग अपने बच्चों के नाम राम, कृष्ण, महावीर ही रखते हैं। रावण, कंस, कैकेयी नाम कोई नहीं रखता। यानी नाम का प्रभाव सर्वमान्य सत्य है।

कई बार माता–पिता बच्चे के वास्तविक नाम के अलावा सुविधा की दृष्टि से पुकारने के लिए अलग से कोई छोटा–सा नाम (निक नेम) रख देते हैं। इनमें से कुछ नाम तो ऐसे होते हैं, जिनका कोई अर्थ ही नहीं होता। यही नाम परिवार के सभी सदस्यों की जबान पर चढ़ जाता है और लोक में प्रचारित हो जाता है। बच्चे का वास्तविक नाम मात्र कागजात में दर्ज होकर रह जाता है। यह लोक व्यवहार में सामान्य बात है, फिर भी अच्छा यही रहता है कि बच्चों को उनके वास्तविक नाम से ही पुकारने की कोशिश की जाये या फिर निक नेम भी पूर्ण रूप से सार्थक रखा जाये ताकि प्रभाव यथावत रहे।

'मेरा नाम करेगा रोशन जग में मेरा राज दुलारा' तथा 'पापा कहते हैं बड़ा नाम करेगा, बेटा हमारा ऐसा काम करेगा' जैसे गीतों की लोकप्रियता से दुनिया में नाम अमर करने की प्रबल आकांक्षा सुस्पष्ट होती रही है। तो इसी क्षण से नाम की चामत्कारिक सत्ता को महसूस कीजिए। अपने मित्रों से अपना नाम सुनकर उल्लसित होइए तथा अपने प्रिय जनों को उनके नाम से आवाज देकर तो देखिए...परस्पर रिश्तों में कितनी प्रगाढ़ता बढ़ती है...कितनी अधिक मिठास की अनुभूति होती है। शुभस्य शीघ्रम्।

कोटा निवासी लेखिका राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में अध्यापन के साथ ही लेखन से भी जुड़ी हैं। साहित्य की विभिन्न विधाओं में इनकी दस पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

...कहकहे बचाने हैं

■ ज्ञान प्रकाश विवेक ■

कवि, कहानीकार और आलोचक (फरीदाबाद)

बदन के घाव हरेक शख्स को छुपाने हैं
सभी को कीमती कपड़े पहन के आने हैं

हमारे हाथ तो पत्थर के हो गये यारो
गिलास काँच के अब आपको बचाने हैं

किवाड़ खोल के रखते हैं दोस्तों के लिए
मकान, माना हमारे बहुत पुराने हैं

हमें पता है मुसीबत के दिन भी आयेंगे
उन्हीं दिनों के लिए कहकहे बचाने हैं

हमारी जेब में कुछ भी नहीं बचा बेशक!
हमारी जिद है कि त्यौहार भी मनाने हैं

हमारा हँसना–हँसाना नया–नया–सा है
हमारे दर्द के किस्से बड़े पुराने हैं

किसी ने कुछ भी खरीदा नहीं है मेले में
गरीब बाप के बच्चे बहुत सयाने हैं।

कहानी

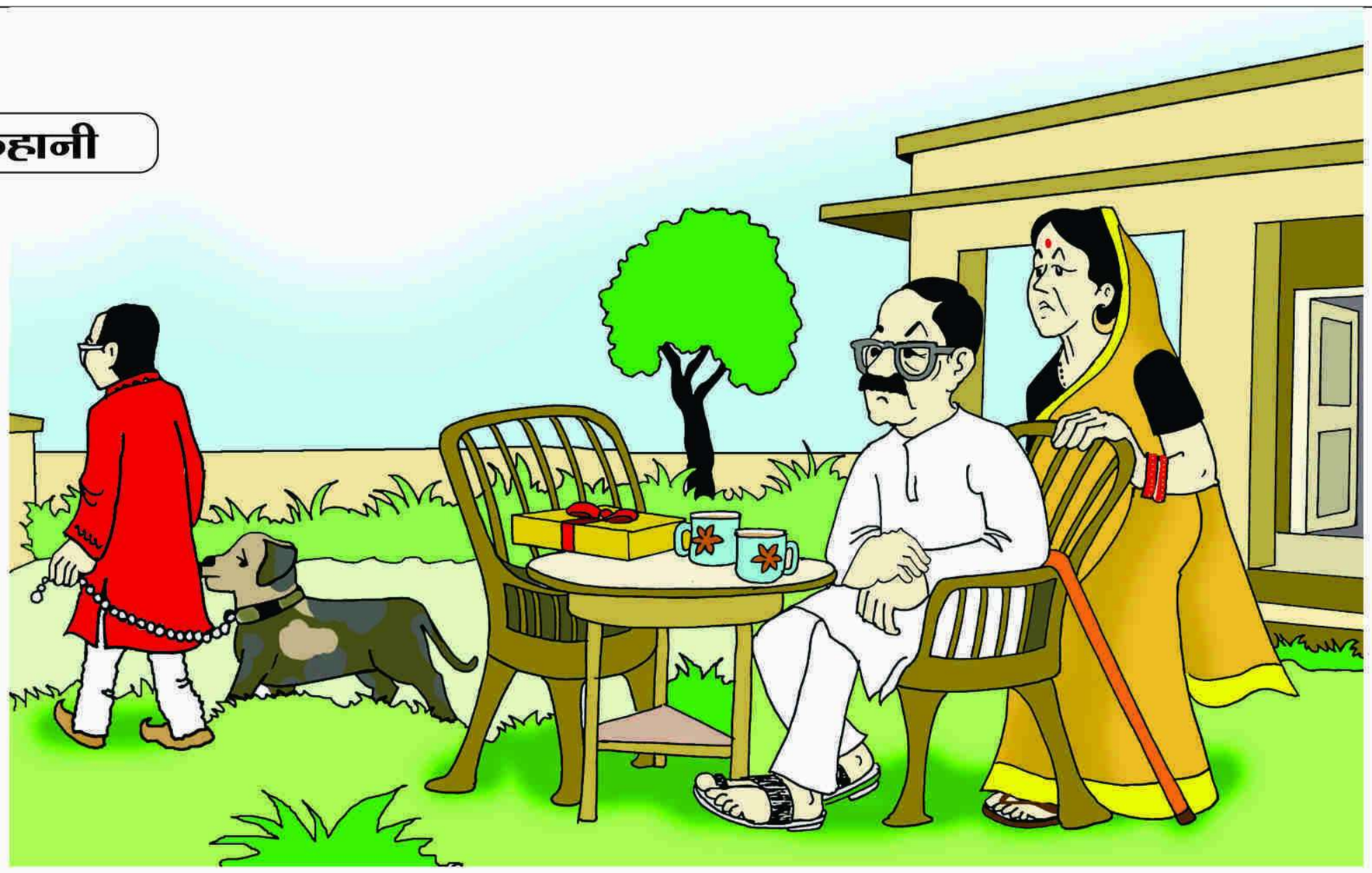

मिठाई का डिब्बा

■ हरदान हर्ष ■

कोविड महामारी की दूसरी लहर समाप्ति की ओर थी। कोरोना के संक्रमण की रोकथाम के लिए लगी अधिकतर बंदिशें राज्य सरकार ने हटा ली थीं। लोग फिर से घूमने–फिरने लगे थे। कुछ बंदिशों के साथ सामाजिक आयोजन भी शुरू हो गये थे।

टन् टन् कर दीवार घड़ी ने ज्यों ही सुबह के छः बजाये, रामदयाल जी ने पत्नी सरिता से कहा, "घूमने चलें!"

सरिता अलसायी आवाज में बोलीं, ''नहीं, मैं और सोऊंगी। मेरी नींद अभी पूरी नहीं हुई है।'

रामदयाल जी ने ठीक से अपना मास्क पहना, छड़ी उठायी और लोगों से बचते–बचाते मॉर्निंग वॉक के लिए नेहरू पार्क की ओर बढ़ गये।

सरिता की आँख दुबारा लगी ही थी कि उनका मोबाइल बज उठा। ट्रिन...ट्रिन की तीखी आवाज सुनकर वह उठकर बैठ गयीं। उन्होंने मोबाइल उठाया। देखा, गाँव से सरपंच की पत्नी ललिता का फोन था।

सरिता ने कहा,''अरी ललिता, आज सुबह–सुबह कैसे याद किया?''

खिलखिलाते हुए ललिता बोलीं, ''बधाई हो सरिता।''

सरिता कुछ समझ नहीं पायीं। पूछा,''किस बात की बधाई?''

''अरे! तुम्हारे देवर भानु की बिटिया की सगाई है न आज वहाँ जयपुर में। सरपंच जी के पास यहाँ रात में भानु का फोन आया था। वह कह रहा था– सरपंच साहब, कोरोना गाइडलाइंस के चलते कुल 40 जनों की लिमिट है। पर, कुछ भी हो, आपको मितुल बिटिया के सगाई समारोह में जरूर पहुँचना है।...बस, सरपंच जी अभी–अभी निकले हैं, जयपुर के लिए।''

सरिता ने संभलकर कहा, ''बधाई, आपको भी।''

यह सोचकर कि घर में सगाई समारोह की खबर भी गैरों से मिल रही है, सरिता का मन कसैला हो गया। वह उठकर बैठ गयीं। मन में खयाल आया– सरपंच को तो गाँव से यहाँ जयपुर आना है, इसलिए भानु ने उसको रात में खबर कर दी। हो सकता है वह यहाँ अब खबर करे। सरिता के मन में विचारों का प्रवाह जारी था। कोरोना–काल में इन दिनों यहाँ रात का कर्फ्यू है। इसलिए सगाई समारोह रात में तो होने से रहा।...दिन का ही रखा होगा। कितने बजे से...कहाँ... कुछ खबर नहीं। बड़े भाई से कोई पूछ–परख ही नहीं। सरिता ने निराशा में एक ठण्डी आह छोड़ दी।

इस बीच रामदयाल जी मॉर्निंग वॉक करके लौट आये। उन्होंने देखा कि सरिता उनके कपड़े प्रेस कर रही थीं। कुर्ता और पायजामा वह प्रेस कर चुकी थीं। साफे की प्रेस जारी थी। अपनी छड़ी एक ओर रखकर उन्होंने हाथ धोये और फिर चेहरे से अपना मास्क हटाया। विस्मय मिश्रित आनंद के साथ रामदयाल जी ने कहा,''क्या बात है? आज सुबह–सुबह कपड़े प्रेस हो रहे हैं?

सरिता अनमनी तो पहले से ही थीं। पति का प्रश्न सुन रोषभरे स्वर में बोलीं–" पता नहीं! क्या जमाना आ गया है। टूटन की हद है। घर की खबर भी अब बाहर वालों से मिल रही है।''

रामदयाल जी कुछ समझ नहीं पाये। वे आश्चर्य से सरिता की ओर देख रहे थे।

साफे को तहाते हुए सरिता ने कहा,''गाँव से ललिता का फोन आया था। आज मितुल की सगाई का कार्यक्रम यहीं जयपुर में है। उसी में शामिल होने के लिए सरपंच जयपुर आ रहा है।"

रामदयाल जी को झटका लगा। उन्हें विश्वास नहीं हो रहा था कि भानु अकारण परिवार में इतनी टूटन ले आयेगा। बेंत की कुर्सी पर बैठते हुए उन्होंने सरिता से पूछा,''गाँव में उमराव को इसकी खबर है?''

सरिता ने झल्लाते हुए कहा,''पता नहीं। खुद फोन करके पूछ लीजिए।''

किंकर्तव्यविमूढ़ रामदयाल जी कुछ समझ नहीं पा रहे थे। वे सोचने लगे कि परिवार के लोगों में किस कदर टूटन बढ़ती जा रही है। तभी तो ऐसे महत्वपूर्ण मौके पर भी घर के लोगों में आपसी संवाद नहीं है। उन्होंने कुछ पल के लिए अपनी आँखें बंद कर लीं। दिवंगत पिता के आखिरी शब्द उन्हें स्मरण हो आये–''बेटा, तीनों भाइयों में तू बड़ा है। हमेशा उमराव और भानु का खयाल रखना। अपने घर और खानदान की इज्जत का सदा ध्यान रखना।''

शहर में वकालत करते हुए रामदयाल जी ने उमराव और भानु को पढ़ाया–लिखाया। उमराव की रुचि ज्यादा आगे पढ़ने में नहीं थी। बारहवीं कक्षा पास कर वह अध्यापक बन गया। छोटा भाई भानु पढ़ने में होशियार था। वह पढ़–लिखकर डॉक्टर बन गया।

रामदयाल जी की नजर सरिता की सूनी कलाइयों पर पड़ी। उनकी आँखें अनायास नम हो गयीं। भानु के मेडिकल कॉलेज में दाखिले के समय उसकी फीस जमा कराने के लिए सरिता ने अपने सोने के कड़े हँसते–हँसते उतार दिये थे। परिवार के लिए सरिता के त्याग और तपस्या की एक पूरी रामायण है।....

रामदयाल जी संभले। अपनी नम आँखों को पोंछा। मोबाइल उठाया और उमराव को फोन लगाया, ''भाई, तुम अभी कहाँ हो?''

''गाँव में हूँ।...और कहाँ होता?''

उमराव के स्वर में रोष था। रामदयाल जी ने संभलकर पूछा,''मितुल की सगाई की खबर है?''

उमराव की टीस उभरी,''भाई साहब, भानु तो घर–परिवार को छोड़कर बड़ा आदमी बनने के चक्कर में है। अब उसका उठना–बैठना रसूखदार और मतलब के लोगों से है। गाँव से सरपंच और तहसील से एमएलए साथ–साथ जयपुर गये हैं। सुना है, मितुल की सगाई आज जयपुर के किसी रिसॉर्ट में है। जयपुर के कुछ आला अधिकारी और मितुल के बॉस का परिवार सगाई में शरीक हो रहा है।''

रामदयाल जी और सरिता अकारथ भानु के बुलावे की बाट जोहते रहे। शाम हो गयी। नाइट कर्फ्यू के कारण शहर सन्नाटे में था। जैसे–तैसे करवटें बदलते हुए उनकी रात बीती। अगले दिन सुबह पति–पत्नी घर के बाहर बैठे चाय पी रहे थे कि भानु आता हुआ दिखायी दिया। उसके एक हाथ में साथ आ रहे कुत्ते की चेन थी और दूसरे हाथ में मिठाई का एक डिब्बा।

भावहीन भानु चुपचाप आकर सामने बेंत की कुर्सी पर बैठ गया। मिठाई के डिब्बे को टी–टेबल पर रखते हुए भानु ने कहा,'' मितुल हैदराबाद से आयी हुई है। उसने अपने सहकर्मी को पसंद कर लिया है। उसके बॉस मिस्टर नटराजन भी मितुल और उसके मंगेतर से बहुत खुश हैं। बस आनन–फानन में कल उनकी रिंग सेरेमनी हो गयी।

रामदयाल जी और सरिता दोनों की ही समझ में नहीं आ रहा था कि वे क्या कहें। इस बीच कुत्ता मिठाई के डिब्बे की ओर बढ़ रहा था कि भानु ने टोकते हुए कहा, ''नो रोमी...नो। इट इज नॉट फॉर यू।''

अबोले में वातावरण भारी था। रोमी बाहर जाने की कोशिश में चेन से भानु को खींचने लगा था। उठते हुए भानु ने कहा,''इस शैतान का मन यहाँ नहीं लग रहा है। चलता हूँ, दो बजे नटराजन साहब की फ्लाइट है।''

रामदयाल जी और सरिता चुपचाप हाथ जोड़कर खड़े हो गये। उनके सामने टी–टेबल पर मिठाई का डिब्बा पड़ा था। दोनों की चाय ठण्डी हो गयी थी, बिल्कुल भाई के रिश्ते की तरह।

जयपुर निवासी लेखक पूर्व वरिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी हैं तथा वर्तमान में स्वतंत्र लेखन में संलग्न हैं। साहित्य की विभिन्न विधाओं में अब तक 125 कृतियां प्रकाशित हो चुकी हैं।

Anuvrat and Eco-conscious Living : Four Reasons for its Urgent Relevance

■ Michael Reading ■

Both as a concrete social movement as well as a general applied philosophy, the Anuvrat movement has brought forth a profound and indelible impact upon the world. Though its overall aims are ultimately multi-faceted and holistic – focusing on the moral and spiritual regeneration of both person and society, achieved through an individual's abiding by 11 vows of ethical conduct – recently, it is Anuvrat's ecological promise that has been given special attention, in particular. I would affirm that this is indeed some excellent and much-needed news, for our global ecological crisis has currently reached dire and unprecedented levels of urgency, and quite frankly, efforts to stay and reverse such an alarming trend, needs all the input of inspiration and practical problem solving it can get.

Of course, the Anuvrat movement was not established by Acharya Sri Tulsi in order to address our global ecological plight alone; rather, his 11 vows serve as a remedy to a whole host of different planetary as well as societal concerns. Nevertheless, Anuvrat's potential in this respect must be considered no less than striking, as its philosophical vision and prescribed practical measures are both compelling and actionable, and certainly, I would argue,well worth our paying attention to.

I would like to layout four reasons as to why Anuvrat has urgent relevance for the making of the modern eco-conscious subject. Essentially, the modern eco-conscious subject can be defined as one who does their utmost to take active measures towards offsetting global warming and general environmental degradation, and whom also exemplifies the common ecological adage that one must "live simply so that others may simply live."

Though I will go through and discuss each of these in greater detail, the four specific reasons for Anuvrat's urgent ecological relevance include, as listed:

1) vow 11's explicit prohibition against environmental harm, the cutting of trees, and the wasting of water;
2) on a more implicit level, the ecological value found within several of Anuvrat's other vows
3) the mechanism of vow-taking itself, which ensures one's full degree of commitment to an eco-conscious lifestyle, and prevents

the all-too-common factors of human complacency and backsliding; and finally,

4) the boundless energy and determined spirit that becomes naturally generated within a follower of Anuvrat. This was a spirit Acharya Sri Tulsi happened to so vividly exemplify himself, as well as a force that contains great potential for catalyzing various efforts toward eco-restoration and eco-reform–such as, to name just two examples, our striving for political solidarity and cooperation, and, on an even more tangible level, the mass replanting of carbon-absorbent trees.

Let us now explore each of these four reasons individually and with a greater degree of focus.

REASON 1: the 11th Anuvrat vow

The first reason is the 11th vow of Anuvrat itself. Simply put, the 11th vow states:

❋ I will do my best to refrain from such acts as are likely to cause pollution and harm the environment.

❋ I will not cut down trees.

❋ I will not waste water and electricity.

Because of its straightforward nature, I shall not dwell upon the significance of this vow at any great length, and yet in briefly considering it a few things should be preliminarily pointed out.

For one, though this vow was formed only in 1949 at Anuvrat's inception – which of course was a much different ecological era at the time, both for India as well as for the world at large – it is worth noting how its injunction to refrain from causing pollution, and to refrain from harming the environment, quite effectively covers many of the core bases upon which the variety of our modern ecological concerns presently rest. Put differently, one cannot willfully follow this 11th vow while also engaging activities that either exacerbate environmental degradation, or exacerbate the

current catastrophe of worldwide global warming. The most obvious of these include an over-reliance upon using vehicles that emit vast amounts of carbon as a greenhouse gas, but certainly also the ubiquity of meat-reliant diets is a considerable factor as well, seeing how the eating of meat produces avast release of methane—(yet another potent greenhouse gas) into the earth's atmosphere.

Another key consideration to mention here, however, is one's participation within a consumeristic and extravagant lifestyle which inevitably leads to large amounts of pollution, deforestation, and overall environmental degradation, not to mention the production of vast (and ultimately unnecessary) amounts of harmful global waste.

So this ultimately then becomes a matter of questioning one's everyday choices and preferences of lifestyle, and in the case of wasting water, do they wash their cars or water their lawns?"Restricting the amount of water one uses while washing the dishes. And so on and so forth.

Hence, in seeking to drastically curb one's everyday behaviors vis-à-vis reducing one's own ecologically destructive foot print, it can easily be argued that the 11th vow of Anuvrat carries forward a rather potent and all-encompassing message for us all.

REASON 2: the implicit potential found within Anuvrat's other vows

Regarding the implicit ecological potential of Anuvrat's other vows, these come from its Code of Conduct as well, and refer to vows number 7, number 10, and number 4. In these vows, the ecological value does not happen to be directly or explicitly spelled out, and yet, in one's abiding by each of these vows, they nevertheless produce a natural or implicit consequence by way of by-product effect.

Starting with vow 7, to "set limits to the practice of continence and acquisition," as already alluded to, this trend of mass acquisition has much to do with the common person's participation in consumerist patterns of living. (and now when I say common person, I recognize that certainly affluent Westerner's are especially guilty of this. Just to acknowledge this point). At any rate, beyond the disastrous effects of pollution and waste that such a lifestyle creates, such rampant consumeristic behaviors also again are intimately related to global warming. For instance, in the U.S, as one leading environmental research organization has found, here "an estimated 42% of the U.S.'s total greenhouse gas emissions come just from the provision of consumer goods." 42%! See, what many people often fail to take into account here is how such acquisition and provision of goods – beyond the more obvious environmental concern of what to do with the products themselves (once the time has come to discard them) – how the acquisition and provision of goods also includes the "up-stream" production and transportation factors. Such "up stream" production and transportations include the energy-intensive processes of materials manufacturing, that of packaging, and most of all that of the shipping of goods across vast distances.

Even still, the bigger overall picture that remains here is that… as our global population continues to skyrocket (at this point already well past the 7 billion mark, and counting), there is simply no getting around the fact that our collective ethical and humanitarian duty must be to be as minimally-consumptive as possible, and leave behind as small and as gentle of an ecological footprint as we possibly can. And this is indeed precisely one of the ends that the 7th Anuvrat vow calls for.

As for vow 10, let me just briefly say that this vow's mandate to "lead a life free of addictions" addresses not only its originally stated meaning, referring to various drug-related intoxicants (i.e."alcohol, hemp, heroin, tobacco, etc").. but can also arguably be extended to our *societal* addictions as well—such as, for instance, the West's as well as developing nations' addiction to petroleum, as well as to the cheapest (and yet also most destructive or dangerous) forms of energy--such as that which is derived from conventional coal based power plants.

And finally, to round out this 2nd overall reason, though seemingly unrelated to ecology, Anuvrat's vow 4 features a call to affirm human unity. Now while this urges us to work towards global solidarity in our collective efforts at eco-sustainability, it also serves as a vital reminder that environmental destruction and global warming affects earth citizens disproportionally; with so-called third world and equatorial countries all too often being the ones who bear the immediacy and brunt of the various destructive effects. These include (but are not limited to): intensified famines, hurricanes, desertification, flooding, and so on and so forth.

to be continued....

Michael S. Reading completed his PhD on Religion: Comparative Theology and Philosophy, Claremont School of Theology, Adjunct instructor, Mt. St. Mary's University, Los Angeles. He was also Co-editor of Beacons of Dharma (Lexington, 2019).

WATER SAVING 365 DAYS

Lets make Water Conservation a part of lifestyle...

5th JUNE WORLD ENVIRONMENT DAY

Let us pledge that...

1. I will use RO only supplied water's TDS is >150 else I will use UV filter.
2. I will use RO waste water for plantation, house-keeping, fabric washing, flushing etc.
3. I will use flush tank, having two options of water disposal as it takes less water to flush after urination.
4. I will keep regular check on water leakages.
5. I will use sensor in overhead tank to auto-cut the motor when tank is full to prevent overflow of tank.
6. I will prepare a water harvesting system at home and office.
7. I will try to minimize the water usage while brushing and shaving; and open the tap only when required.

ANUVIBHA

ANUVRAT VISHWA BHARATI SOCIETY

❖ संकल्प पत्र के लिए देखें ❖

https://anuvibha.org/environment-conservation/

अगले अंक का विषय

परिचर्चा

खेल की दुनिया में हमारा स्थान

खेलकूद हमारे सामान्य जनजीवन का अभिन्न अंग हैं। घर से लेकर स्कूल, कॉलेज और यूनिवर्सिटी तक खेल अलग–अलग स्तर और स्वरूप में नयी पीढ़ी के विकास में अपनी भूमिका निभाते हैं। यह भूमिका कितनी महत्त्वपूर्ण है, यह निर्भर करता है उस समाज में और उस परिवार में खेल को दिये जाने वाले महत्त्व पर। इस महत्त्व का पैमाना खेल को टाइमपास के एक रोचक माध्यम मानने से लेकर एक संतुलित व्यक्तित्व विकास के आवश्यक तत्व और प्रोफेशन विधा के रूप में स्वीकारने के बीच परिवार और व्यक्ति की समझ और राष्ट्र व समाज की संस्कृति के बीच झूलता नजर आता है।

ओलंपिक खेल जैसे वृहद आयोजन हमें अवसर देते हैं इस दिशा में गहराई से सोचने और चिंतन की नयी दिशा बनाने का। टोक्यो ओलंपिक्स में हम जहां अपने इतिहास के सबसे अधिक 7 पदकों की जीत को बड़ी उपलब्धि मान सकते हैं, वहीं विश्व की दूसरी सबसे बड़ी जनसंख्या के बावजूद 48 वें स्थान पर रहना हमें सोचने पर मजबूर करता है। प्रश्न यह भी है कि पदकों के इस राष्ट्रीय गौरव के पीछे खिलाड़ियों के व्यक्तिगत प्रयासों की कितनी भूमिका है और एक समाज और राष्ट्र के रूप में कितनी?

हम अपने आसपास खेलों की स्थिति को किस रूप में देखते हैं और व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र के स्तर पर किन बातों को अविलंब करणीय मानते हैं, सुधी पाठकों से बिना किसी राजनैतिक पूर्वाग्रह के अपने मौलिक विचार आमंत्रित हैं।

*आप अपने विचार **15 सितम्बर** तक अधिकतम 200 शब्दों में 9116634512 पर व्हाट्सएप कर सकते हैं। चयनित विचार **अक्टूबर** अंक में प्रकाशित किये जायेंगे।* — **सं.**

बच्चों में बढ़ती हिंसा : समाधान के सूत्र

गत अंक में प्रस्तुत परिचर्चा के इस विषय पर पाठकों से प्राप्त चिंतन बिंदुओं को यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है –

बच्चों को पढ़ायें मानवीय मूल्यों के पाठ

बच्चे मन के सच्चे होते हैं। उनका मन फूल–सा कोमल होता है, लेकिन इस विद्रूप समय में अब बच्चों से भी उनका बचपन जीतने की अनायास कोशिश हो रही है। यही कारण है कि बच्चे अपने बचपन के आनंद से वंचित होते जा रहे हैं। उनमें हिंसक प्रवृत्ति पनप रही है। कुछ ऐसे वीडियो गेम भी आ गये हैं, जिन्हें खेलते हुए बच्चे हिंसक हो जाते हैं। इसलिए बच्चे मोबाइल में क्या देख रहे हैं, क्या खेल रहे हैं, गूगल में क्या सर्च कर रहे हैं, इन सबकी सतत निगरानी बहुत जरूरी है। साथ ही उन्हें करुणा, दया, ममता, भाईचारा, अहिंसा आदि के पाठ पढ़ाये जायें। उन्हें बताया जाये कि हम अहिंसक जीवन जीने की कोशिश करें। सबको प्यार बाँटें। भाईचारा हमारे जीवन का लक्ष्य रहे। इसके लिए जरूरी है कि बच्चों को पाठ्य पुस्तकों के साथ सत्साहित्य भी पढ़ने दिया जाये।

–गिरीश पंकज, रायपुर

सतत संपर्क और संवाद जरूरी

सभी बच्चों की अभिरुचि समान नहीं होती। वे नहीं समझ पाते कि जिस ओर उनकी अभिरुचि बढ़ रही है, वह अभी या भविष्य में उनके लिए उपयोगी है भी या

नहीं? उन्हें तो तात्कालिक खुशी मिलना ही महत्वपूर्ण होता है। किशोर वय की देहरी पर कदम रख रहे बच्चों में शारीरिक बदलाव के साथ–साथ पर्याप्त मानसिक बदलाव भी आ जाता है। वे अपने पालकों के विचार, कृत्य या व्यवहार से कभी सहमत तो कभी असहमत होने लगते हैं। संस्कारवश या भयवश वे असहमति भले ही न जता सकें, लेकिन उनके स्वभाव में विद्रोह या अवहेलना के अंकुर पनपने लगते हैं। उनकी प्रवृत्ति हिंसोन्मुख होने लगती है। ऐसे में सतत सम्पर्क और सहज–संवाद उपयोगी साबित होगा।

–राजेंद्र श्रीवास्तव, विदिशा

रचनात्मक कार्यों में लगाये रखें

अमेरिका और अफ्रीकी देशों में बच्चों में बढ़ती हिंसा की घटनाओं को देखकर हमें अपने देश के बच्चों की चिंता होना स्वाभाविक है। बुद्ध, महावीर और गांधी के इस देश में भी हालात तेजी से बदल रहे हैं। तकनीकी प्रगति के इस युग में बच्चे मोबाइल पर हिंसा से भरपूर गेम खेलते हैं। टीवी–इंटरनेट पर हॉरर फिल्में और सीरियल भी हिंसा ही परोस रहे हैं। ऐसी स्थिति में बच्चों को रचनात्मक कार्यों में लगाये रखना बेहद जरूरी हो गया है, चाहे नृत्य, गायन या वादन हो या चित्रकला। अच्छी पुस्तकें और बाल पत्रिकाएं भी बच्चों की बहुत अच्छी मित्र होती हैं। बच्चों को खेलकूद के लिए प्रोत्साहित करना उनके शारीरिक विकास और स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है। अगर हम इस दिशा में हमेशा सजग रहे तो बच्चों को विवेकशील बनाने के साथ ही उन्हें क्रोध और हिंसा जैसे दानवों से दूर रख पायेंगे।

–डॉ. अलका अग्रवाल, जयपुर

घातक एप्स और गतिविधियों पर लगे प्रतिबंध

आज शहर ही नहीं, गाँव के बच्चों के पास भी मोबाइल, लैपटॉप आदि उपलब्ध हैं। ऑनलाइन पढ़ाई के बहाने बच्चे क्या देख रहे हैं या कर रहे हैं, यह पता नहीं चल पाता। ऐसे में कई बार बच्चे पब्जी जैसे घातक गेम्स के चक्कर में फँस जाते हैं और अपना भविष्य बिगाड़ लेते हैं। सात समंदर पार की हो या अपने देश की अवांछनीय एवं अशोभनीय घटनाओं को बच्चा जब बार–बार देखता है तो उनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। अतः ऐसे एप्स, गतिविधियां जो बच्चों में गलत भ्रांतियाँ विकसित करती हैं, उन पर पूर्ण प्रतिबंध लगाया जाना चाहिए। वहीं, बच्चों का सही मार्गदर्शन करते हुए उनमें सही संस्कार डालते हुए उन्हें प्रेरणादायी और ज्ञानवर्धक साहित्य पढ़ने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

–मधु माहेश्वरी, सलूम्बर

बच्चों को चाहिए स्नेह, समय और साथ

जीवनयापन हेतु अतिरिक्त सुख–सुविधाओं की चाहत ने माता–पिता दोनों को कामकाजी बना दिया। बुजुर्गों का साथ बच्चों के जीवन की नींव को मजबूत करता है। पहले संयुक्त परिवार होता था। परिवार के लोग बच्चों को समय देते थे, जो अब बिल्कुल ही नहीं दे पाते। इसके कारण नैतिक शिक्षा का अभाव बहुत अधिक हो गया है। बच्चे स्वयं को नितांत अकेला महसूस करने लगे हैं। जिन हाथों में पुस्तकें होनी चाहिए थीं, उन हाथों में मोबाइल देखा जा रहा है। मोबाइल पर फिल्मों एवं द्विअर्थी विज्ञापनों में बढ़ती रुचि से बच्चे परिवार से और भी अधिक अलग हो गये हैं।उनमें अलगाव, भटकाव, एकाकीपन एवं उदासीनता की भावना घर करने लगी। कोमल बालपन को स्नेह, समय, अनुशासन एवं साथ चाहिए। इससे बच्चों का भविष्य सुरक्षित, सुख –सम्पन्नता से हरा–भरा होगा।

–वीणा शर्मा वशिष्ठ, पंचकूला

बनाने होंगे ममता और स्नेह के पुल

बच्चों की कौन कहे, आज अधिकांश बड़े स्वयं ही अनुशासनहीन हैं। उनमें गलत आदतें हैं। अच्छे संस्कार, सेवा भाव नहीं है। ऐसे में परिवार में मम्मी–पापा को सोशल साइट्स का नशा कम कर बच्चों की गतिविधियों पर नजर रखनी होगी। बच्चों को रचनात्मक कार्यों में व्यस्त रखना होगा। उनके साथ खेलना होगा। उन्हें कहानियां सुनानी होंगी। मोबाइल पर वे क्या देख रहे हैं, इस पर नजर रखनी होगी। बच्चे का फ्रेंड सर्किल किस स्तर का है, इस पर निगरानी रखनी होगी। हिंसक घटनाओं को पूर्ण रूप से रोकना संभव है अगर मम्मी–पापा सोशल साइट्स की दीवारें गिराकर बच्चों के साथ प्यार, स्नेह और ममता के पुल बनाने के लिए समय निकालें।

–दिलीप भाटिया, रावतभाटा

बच्चों को दें अपनी भाषा व संस्कृति का ज्ञान

मौजूदा दौर में हम अपनी संस्कृति, अपनी भाषा को भूल विदेशी संस्कृति भाषा को धड़ल्ले से अपना रहे हैं। छोटे बच्चों को मोबाइल पकड़ा देते हैं। टीवी दिखलाकर उसे खाना खिलाते हैं। पहले संयुक्त परिवार में दादी–नानी कहानी सुना–सुनाकर खाना

खिलाती थी, जिसमें अपने धर्म और संस्कृति की बात होती थी। एकल परिवार में माँ–बाप दोनों काम पर चले जाते हैं। बच्चों को आया के भरोसे छोड़ जाते हैं। बच्चा इंजीनियरिंग पढ़ना चाहता है और माँ–बाप उसे डॉक्टर बनना चाहते हैं। तब बच्चा दोनों में कुछ नहीं बन पाता है। फिर उसे उल्टा–सीधा कहकर प्रताड़ित किया जाता है जिससे वह हिंसक हो जाता है। हम बच्चे को दोष देते हैं, जबकि सारा दोष माँ–बाप का है। किताबी ज्ञान के साथ बच्चों को अपनी भाषा, अपनी संस्कृति का ज्ञान देना अति आवश्यक है। तभी हम बच्चों को सही राह पर ला सकते हैं।

–दिनेश चन्द्र प्रसाद ''दीनेश'', कोलकाता

अभिभावक, शिक्षक और समाज समझें जिम्मेदारी

वर्तमान में घट रहीं इन घटनाओं के लिए अभिभावक, शिक्षक और समाज तीनों ही जिम्मेदार हैं। घर में यदि अभिभावक अपनी पत्नी पर हाथ उठाते हैं, संतान के साथ मारपीट करते हैं, तो बच्चे भी बड़े होकर मारपीट और हिंसा की ओर प्रवृत्त हो जाते हैं। आज विभिन्न कारणों से अभिभावक बच्चों को समय नहीं दे पाते, वे बच्चों को बस नंबर उगलने वाली मशीन समझते हैं। ऐसे में बच्चों से बिना नंबर वाला संवाद जरूरी है। बच्चों को भावनात्मक रूप से सुदृढ़ बनाने के लिए आवश्यक है कि उनके साथ गुणवत्ता वाला समय बिताया जाये। स्कूल में शिक्षकों का भी दायित्व है कि वे बच्चे के असामान्य व्यवहार के बारे में अभिभावकों को तुरंत बतायें। बच्चों को उनकी रुचि के अनुसार खेलों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करें। समाज भी बच्चों के प्रति अपनी जिम्मेदारी ईमानदारी से निभाये।

–डॉ. शील कौशिक, सिरसा

बच्चों के साथ मित्रवत व्यवहार रखें

बच्चों को हिंसा की ओर उन्मुख करने के लिए माता–पिता और अभिभावक सबसे अधिक जिम्मेदार हैं। बच्चे हमारे सुनहरे भविष्य के सपने होते हैं। अगर वे अपने आपको असुरक्षित महसूस करते हैं तो हम सभी का आने वाला भविष्य अंधकारमय होगा। इसलिए जरूरी है कि हम बच्चों के साथ मित्र जैसा व्यवहार रखें जिससे वे अपने मन की पीड़ा हमारे साथ बाँट सकें। हमें बच्चों के साथ अपना समय व्यतीत करना चाहिए जिससे कि वे हमसे खुलकर बात करें, मोबाइल, लैपटॉप और टीवी से थोड़े समय के लिए दूर हो सकें। इसके साथ ही बच्चों को बंदूक या तलवार जैसी चीजें खिलौने के रूप में नहीं देनी चाहिए। भले ही वे नकली हों किंतु ये चीजें सही नहीं हैं। बच्चों को संस्कारी बनाने के लिए वातावरण को सही बनाना होगा।

–महेन्द्र जैन, पचपदरा

अणुव्रत सेवी सुबोध कोठारी का देहावसान

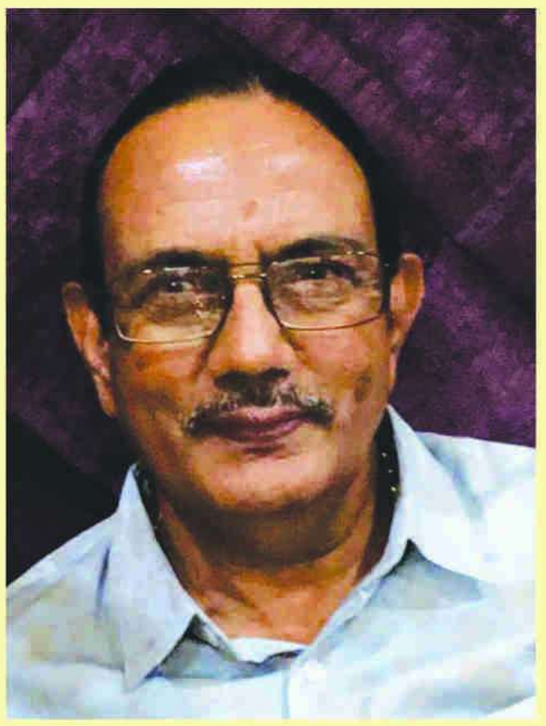

अणुव्रत सेवी तथा अणुव्रत आंदोलन के कर्मठ कार्यकर्ता सुबोध कोठारी का 3 जुलाई को तिविहार संथारा स्वीकार करने के अगले दिन 4 जुलाई 2021 को देहावसान हो गया।

मूलतः लाडनूं निवासी श्री सुबोध कोठारी का जन्म 7 मई 1948 को हुआ था। वे एक सहज, सरल और सेवाभावी प्रकृति के नेकदिल इंसान थे। उन्होंने अणुव्रत समिति गुवाहाटी के अध्यक्ष, ज्ञानशाला गुवाहाटी के संयोजक, आचार्य श्री महाश्रमण के गुवाहाटी चातुर्मास में उनकी सन्निधि में होने वाले 67वें अणुव्रत अधिवेशन के संयोजक, अणुव्रत महासमिति नई दिल्ली द्वारा योगक्षेमी सम्मान प्राप्त, अणुव्रत महासमिति के कार्यकारिणी सदस्य, गुवाहाटी अणुव्रत समिति के संस्थापक सदस्य, आचार्य तुलसी महाश्रमण रिसर्च फाउंडेशन के ट्रस्टी एवं कोषाध्यक्ष, लाडनूं ओसवाल परिषद् गुवाहाटी के अध्यक्ष के रूप में अपनी सक्रिय सहभागिता निभायी।

उनके निधन से अणुव्रत आंदोलन ने अपना एक मजबूत सहयोगी और शुभचिंतक खो दिया है। ***अणुव्रत व अणुविभा परिवार उनकी आत्मा की उत्तरोत्तर प्रगति की कामना करते हुए उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता है।***

कदमों के निशां

आचार्य तुलसी ने कहा था, अणुव्रत चरित्र निर्माण का आंदोलन है। अणुव्रत पुरस्कार की स्थापना के पीछे उद्देश्य है उन लोगों का आदर जो चरित्र निर्माण के लिए कृत संकल्प हैं। अणुव्रत के आदर्शों के प्रति जिनके मन में गहरी निष्ठा है। ऐसी विभूतियों की प्रतिष्ठा से समाज में नैतिक मूल्यों के प्रति आस्था बढ़ेगी।

आचार्य महाप्रज्ञ का कहना था, "सत्य की खोज करना बड़ी बात है और उससे भी बड़ी बात है सत्य को क्रियान्वित करना। अणुव्रत पुरस्कार सत्य को क्रियान्वित करने वालों को मिलता है। अतः मैं कह सकता हूं कि यह सबसे बड़ा पुरस्कार है।"

आचार्य महाश्रमण कहते हैं, ''भारत के नागरिकों में नैतिकता के प्रति आस्था पुष्ट बने, अणुव्रत इसी दिशा में कार्यशील है। अणुव्रत पुरस्कार नैतिक मूल्यों के महत्व को प्रतिपादित करने वाला अभिक्रम है।''

वर्ष 1981 में अणुव्रत पुरस्कार की शुरुआत की गई। तब से 26 विभूतियों को इस पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है। अणुव्रत पुरस्कार के अंतर्गत प्रशस्ति पत्र, प्रतीक चिह्न और एक लाख इक्यावन हजार रुपये की राशि प्रदान की जाती है।

अणुव्रत पुरस्कार प्राप्त करने वालों की जीवन गाथा से परिचित होना मानवीय मूल्यों से साक्षात करना है। आने वाली पीढ़ियां इनके जीवन से प्रेरणा लेकर स्वस्थ समाज की संरचना की दिशा में कदम बढ़ाएं, इसी उद्देश्य से अणुव्रत पुरस्कार से सम्मानित विशिष्ट व्यक्तियों का परिचय यहां क्रमशः प्रकाशित किया जा रहा है।

अणुव्रत पुरस्कार से सम्मानित

मोहनलाल कठोतिया

अणुव्रत आंदोलन की नींव के पत्थर

आचार्य श्री तुलसी ने 1 मार्च 1949 को जब सरदारशहर में अणुव्रत आन्दोलन का प्रवर्तन किया, तब कुछ चिन्तनशील लोगों ने अणुव्रत के नैतिक आदर्शों का अनुसरण करने तथा जन–जन में उसकी ज्योति को फैलाने का संकल्प लिया। उनमें एक प्रमुख नाम है श्री मोहन लाल कठोतिया का। श्री कठोतिया उद्योगपति थे, मगर अणुव्रती बनने के बाद उन्होंने सादगी और संयम प्रधान जीवन अपना लिया।

श्री मोहनलाल कठोतिया का जन्म 25 मार्च 1899 को राजस्थान के सुजानगढ़ में हुआ था। उनकी माताजी का नाम श्रीमती गौरी देवी तथा पिताजी का नाम श्री बालचंद कठोतिया था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा सुजानगढ़ में हुई। सन् 1920 में उन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय से मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की। स्कूल में हिन्दी पढ़ने वाले विद्यार्थियों में प्रथम आने पर उन्होंने चार स्वर्ण पदक प्राप्त किये। लगभग दो वर्ष तक वे सेंट जेवियर्स कॉलेज में पढ़े और स्वतंत्रता आंदोलन में महात्मा गांधी से प्रभावित होकर कॉलेज शिक्षा का बहिष्कार कर दिया।

श्री कठोतिया अखिल भारतीय अणुव्रत समिति के मंत्री, उपाध्यक्ष तथा अध्यक्ष रहे। अणुव्रत आंदोलन, मिलावट विरोधी आंदोलन, नशाबंदी आंदोलन, छुआछूत निवारण आंदोलन में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा।

प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, डॉ. राधाकृष्णन, मोरारजी देसाई व गुलजारीलाल नन्दा आदि देश के शीर्षस्थ नेता, विचारक, प्रमुख साहित्यकार व समाजसेवी उन्हें अणुव्रत के प्रमुख प्रतिनिधि के रूप में पहचानते थे। सन् 1963 में अणुव्रत समिति की ओर से नैतिक शक्ति सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसमें मुख्य अतिथि प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू ने अणुव्रत के प्रति श्रद्धा भरा भाषण दिया। केन्द्रीय मंत्री श्री जयसुखलाल भाई हाथी ने अध्यक्षता की। इस सम्मेलन का संयोजन भी कठोतिया जी ने किया। 1982 में तेरापंथ समाज ने उन्हें 'समाज भूषण' सम्मान से अलंकृत किया।

अध्यात्म साधना को समर्पित जीवन

1965 में आचार्य श्री तुलसी के आह्वान पर श्री कठोतिया ने अध्यात्म साधना के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया और दिल्ली में अध्यात्म साधना केन्द्र स्थापित करने का बीड़ा उठाया। लगभग 25 वर्ष तक वे इस केन्द्र के विकास में संलग्न रहे। वे ध्यान की गहराई में भी उतरे और अध्यात्म साधना केन्द्र में प्रेक्षाध्यान के अनेक शिविर आयोजित किये।

सूर्य किरण चिकित्सा पर लिखी पुस्तक

कठोतिया जी सूर्य किरण चिकित्सा की गहराई में उतरे और 'सूर्य किरण चिकित्सा' नामक पुस्तक लिखी। इंडियन बोर्ड ऑफ अल्टरनेटिव मेडिसिन ने 20 फरवरी 1993 को उन्हें एमडी (अल्टरनेटिव मेडिसिन) की उपाधि प्रदान की। श्री कठोतिया को 1987 में अणुव्रत पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 25 जुलाई 1994 को नई दिल्ली में उन्होंने देह त्याग दी। आचार्य श्री तुलसी ने उनके निधन पर कहा था–"मोहनलाल कठोतिया आग्रहहीन थे, इसीलिए जीवन में सफलता का वरण करते चले गये। आदमी बदल सकता है, इसका उदाहरण हम कठोतिया जी के जीवन में देख सकते हैं।"

अणुविभा का महत्त्वपूर्ण उपक्रम

अणुव्रत बालोदय

राजसमन्द स्थित 'चिल्ड्रन'स पीस पैलेस' अणुविभा का मुख्यालय है। प्रसिद्ध राजसमन्द झील के तट पर स्थित एक पहाड़ी पर निर्मित यह सम्पूर्ण परिसर नयी पीढ़ी के आदर्श व्यक्तित्व निर्माण को समर्पित है। बच्चों के सर्वांगीण विकास को लक्षित अनेक प्रवृत्तियाँ यहाँ से संचालित होती हैं। आधुनिक एवं परम्परागत साधन–सामग्री से सुसज्जित यहाँ सृजित 30 से अधिक बालोदय दीर्घाएँ रचनात्मक अधिगमों के माध्यम से बच्चों के दिलो दिमाग में मानवीय मूल्यों के प्रति आस्था उत्पन्न करती हैं और उन्हें एक आदर्श जीवन जीने की ओर अभिप्रेरित करती हैं। यह केन्द्र प्राकृतिक लावण्यता से सराबोर है और आगन्तुक को आत्मिक शान्ति का अनुभव प्रदान करता है। यहाँ संचालित बालोदय कार्यक्रमों का महत्त्व अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य श्री तुलसी के इन शब्दों में मुखरित हो रहा है–**''अणुव्रत केवल प्रचार–प्रसार की बात नहीं है, एक ठोस रचनात्मक काम है। निर्माणात्मक काम है। महात्मा गांधी ने व्यक्ति निर्माण का काम किया, वह पीढ़ी लगभग सम्पन्न हो रही है और नया निर्माण बहुत कम हो रहा है। अणुव्रत का यही लक्ष्य है कि व्यक्तित्व निर्माण के द्वारा समाज और राष्ट्र का निर्माण हो और उसकी मूल बुनियाद है–बालक का निर्माण। यह काम अणुविभा 'अणुव्रत बालोदय' के द्वारा कर रही है।''**

अणुविभा परिसर में संस्थापक श्री मोहन भाई को आशीर्वाद देते हुए आचार्य तुलसी

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम 'चिल्ड्रन्स पीस पैलेस' में

भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने 'चिल्ड्रन्स पीस पैलेस' को देखा और बालोदय शिविर में शामिल शिविरार्थियों से सम्वाद किया। अपने सार्वजनिक वक्तव्य में उन्होंने अपनी भावना इस प्रकार व्यक्त की–"ANUVIBHA believed in transforming the children through practical exercises and adherence to a model of living the good life embedded in Anuvrat and Jivan Vigyan. I understand, in Jivan Vigyan, the emphasis is made on enhancing children's emotional competence which is possible only when children stay and spend some time in a special environment created for them. I am very happy to know that the "Balodaya" model practiced at the Children's Peace Palace is based on child psychology. This Balodaya model is most valuable and worthy of emulation by other schools. My greetings to all of you for espousing this model in bringing up the children with value system in a spiritual environment." उन्होंने सम्मति पुस्तिका में लिखा–*"Children's Peace Palace is a great creation."*

:: सम्मति ::

बालोदय दीर्घाओं के अवलोकन के पश्चात् आगंतुकों द्वारा अभिव्यक्त विचार

अद्भुत...निःशब्द...वर्तमान समय में एक ऐसा स्थान जो आज की पीढ़ी के बच्चों को ज्ञान (पढ़ाई) के अलावा जीवनोपयोगी, जीवन दर्शन सिखाने का कार्य कर रहा है। शिक्षा केवल किताबी न होकर अनुभव वाली हो, यही सन्देश देना इस संस्था का उद्देश्य है। परिसर... अति सुन्दर... प्रत्येक अपना महत्त्व रखता है।

श्रीमती सुषमा यदुवंशी
बाल साहित्यकार, गोदिया (महाराष्ट्र)

अणुव्रत विश्व भारती, राजसमंद आकर बहुत सुखद अनुभूति हुई। विश्व की महान विभूतियाँ इस सुरम्य स्थान का भ्रमण कर चुकी हैं। बच्चों में संस्कारों के निर्माण से लेकर समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने की दिशा में संस्थागत प्रयास स्तुत्य है। सरकार को ऐसी संस्थाओं को सम्बल प्रदान करना चाहिये।

फारूक आफरीदी
विशेषाधिकारी, मुख्यमंत्री, राजस्थान जयपुर

अणुव्रत विश्व भारती परिसर के अवलोकन का अवसर लगभग पन्द्रह वर्षों बाद प्राप्त हुआ। बच्चों की शिक्षा (बहुआयामी) विशेष रूप से नैतिक शिक्षा एवं जीवन के मूलभूत सिद्धान्तों, चरित्र निर्माण एवं समस्त विषयों के वास्तविक ज्ञान के लिए एक बहुत ही सुन्दर अनुकरणीय कार्य। नालंदा, तक्षशिला विश्वविद्यालयों की कल्पना साकार हो गयी।

राजकुमार सिंह
मुख्य वन संरक्षक वन्यजीव, उदयपुर (राज.)

अणुव्रत विश्व भारती परिसर का भ्रमण किया। यह बच्चों को प्राणायाम, योग के महत्व एवं उपयोगिता को दर्शाता है।

दिलीप मेहता, सूरत (गुजरात)

अणुविभा परिसर के सुन्दर नैसर्गिक वातावरण में चरित्र निर्माण सम्बन्धी गतिविधियों के साथ ज्ञान–विज्ञान की बातों को सरलता से समझाने का प्रशंसनीय प्रयास है।

अरविन्द राजावत, भोपाल (मध्यप्रदेश)

पूरे परिसर को बनाने के लिये जिस सोच का उपयोग किया तथा इसका निर्माण किया वह तारीफ के काबिल है। श्रीमान मोहन भाई के दूरगामी सोच को नमन। विशेष तौर पर उन्होंने बच्चों को सिखाने के लिए व्यावहारिक तरीका व उनके ज्ञानवर्धन के लिए जिस सोच का इस्तेमाल किया, वह अद्भुत है।

प्रभात डागलिया, उदयपुर (राजस्थान)

अणुव्रत विश्व भारती के सम्पूर्ण भवन और अणुव्रत गैलरी का अवलोकन किया। बड़ा आनन्द आया। बहुत कुछ सीखने को मिला। यहां का प्राकृतिक वातावरण और जिस सोच के साथ अणुव्रत का निर्माण किया गया है, मैं उसको नमन करता हूँ।

डॉ. सौरभ जैन, श्रीमहावीरजी (राजस्थान)

प्रेरक प्रसंग

दृढ़ संकल्प

पंजाब के एक छोटे से गाँव का एक लड़का था। उसका नाम था गंगाराम। दसवीं की परीक्षा पास करने के बाद वह शहर में इंजीनियर का काम करने वाले अपने चाचा के पास नौकरी की तलाश में गया। जब वह उनके कार्यालय में पहुँचा तो उसके चाचाजी वहां नहीं थे। वे अपने अधिकारी इंजीनियर के साथ दौरे पर गये हुए थे। गाँव में रहने वाले बालक को इंजीनियर की कुर्सी, जो बहुत ही सुंदर थी, अच्छी लगी। वह उस पर बैठ गया। थोड़ी देर में कार्यालय का चपरासी आया। उसने इंजीनियर की कुर्सी पर देहाती लड़के को बैठे हुए देखा तो क्रोध से तमतमा गया और बोला, '' ऐ लड़के, तुमने इस कुर्सी पर बैठने की हिम्मत कैसे की? यह तो हमारे इंजीनियर साहब की कुर्सी है।

बेचारा गंगाराम अपमानित हो अपना–सा मुँह लेकर कुर्सी से उठ गया। इस अपमान से उसे बहुत मानसिक पीड़ा हुई। उसी समय उसने मन ही मन प्रतिज्ञा की–'' मैं भी इंजीनियर बनूँगा। जब तक इंजीनियर नहीं बनूँगा, कोई नौकरी नहीं करूँगा।'' जब उसके चाचाजी लौटकर आये और उन्होंने आने का कारण पूछा तो गंगाराम ने कहा–''चाचाजी! आया तो नौकरी की तलाश में था, परंतु अब तो आपके पास रहकर पढूँगा।'' सारी बात सुनकर चाचाजी प्रसन्न हुए और उन्होंने अपने पास रहकर पढ़ने की अनुमति दे दी। उन्होंने गंगाराम का बराबर हौसला बढ़ाया और गंगाराम ने मन लगाकर पढ़ाई की।

अपनी लगन और मेहनत के बल पर एक दिन गंगाराम ने प्रथम श्रेणी से इंजीनियरिंग की परीक्षा पास की। यही नहीं, अपने काम में भी वे हमेशा प्रथम ही रहे। अपने ज्ञान और काम के बल पर उन्होंने ब्रिटिश शासनकाल में 'सर' की उपाधि प्राप्त की। सारे देश में नाम कमाया। आज भी उनके नाम से सर गंगाराम अस्पताल चल रहा है जिसमें बहुत सारे लोग विविध रोगों का इलाज करवाते हैं।

चित्रकला, गायन, भाषण, निबंध एवं कविता लेखन की देश भर में आयोजित प्रतियोगिताओं के

ANUVRAT CREATIVITY CONTEST

राष्ट्रीय परिणाम घोषित

◆◆ अणुविभा की ओर से राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट 2020 का परिणाम 3 अगस्त की शाम ऑनलाइन जूम मीटिंग और फेसबुक लाइव के माध्यम से घोषित किया गया। 'वर्तमान वैश्विक संकट : प्रभाव, समाधान और संभावनाएं' विषय पर चित्रकला, गायन, भाषण, निबंध एवं कविता लेखन आदि पाँच विधाओं में आयोजित इस कॉन्टेस्ट के कक्षा 3 से 5, 6 से 8 व 9 से 12 में विभाजित तीन समूहों में 45 विजेताओं का राष्ट्रीय स्तर पर चयन किया गया।

◆◆ अणुविभा के अध्यक्ष श्री संचय जैन ने परिणाम घोषित करते हुए सभी विजेताओं एवं प्रतिभागियों को शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा कि इस सूची में जिनके नाम नहीं हैं परन्तु कॉन्टेस्ट में भाग लिया, यह उनके लिए एक उपलब्धि है कि उन्होंने कंफर्ट जोन से बाहर निकल कर अपनी प्रतिभा को सबके सामने प्रस्तुत किया। आप सब अपना जज्बा बनाये रखें।

◆◆ श्री संचय जैन ने कहा कि अणुव्रत आंदोलन के प्रवर्तक आचार्य श्री तुलसी ने मानव मात्र के कल्याण के विरल सूत्र के रूप में हमें अणुव्रत का दर्शन दिया है। वर्तमान अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण के आध्यात्मिक मार्गदर्शन में अणुव्रत आंदोलन अपने विभिन्न उपक्रमों के माध्यम से एक अहिंसक शांतिप्रिय समाज के निर्माण में निरंतर संलग्न है। अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट के माध्यम से स्कूली बच्चों व नयी पीढ़ी को रचनात्मक मंच प्रदान किया गया।

◆◆ श्री जैन ने कहा कि अणुव्रत न्यास गत पच्चीस वर्षों से इस कार्य को कर रहा था। पहली बार अणुविभा के तत्वावधान में यह कॉन्टेस्ट ऑनलाइन हुआ है। उन्होंने इस कॉन्टेस्ट के सफल आयोजन के लिए अणुविभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री अविनाश नाहर,

DRAWING

Group 1 Class 3-5

WINNER

NAITIK KOGTA
Class 5
RAMNIWAS BAJAJ ENGLISH HIGH SCHOOL, MAHARASHTRA

1st Runner Up

SUHAS
Class 3
DISNEYLAND PRIMARY SCHOOL DHARWAD, KARNATAKA

2nd Runner Up

AASTHA GIRIYA
Class 4
WELL FUTURE ACADEMY DELHI

Group 2 Class 6-8

WINNER

PUSHPENDRA
Class 8
GURUKUL PUBLIC SCHOOL CHHATTISGARH

1st Runner Up

ANANYA ROUT
Class 6
DAV PUBLIC SCHOOL ODISHA

2nd Runner Up

MANJIRI BARHATE
Class 8
SICA SR. SEC. SCHOOL M.P.

Group 3 Class 9-12

WINNER

SAMUNDRA RAJPUROHIT
Class 1
UPASANA LION ENGLISH MEDIUM SCHOOL, GUJARAT

1st Runner Up

DRISHTI BISSA
Class 9
ST. JOHN SEC. SCHOOL RAJASTHAN

2nd Runner Up

SAGUPTA FIRDOS
Class 10
JOHARIMALL HIGH SCHOOL ODISHA

SINGING

Group 1 Class 3-5

WINNER

SAMEEHA BHARTI
Class 5
SIR PADAMPAT SCHOOL
RAJASTHAN

1st Runner Up

SUPARN MISHRA
Class 4
KRISHNA PUBLIC SCHOOL
CHHATTISGARH

2nd Runner Up

TANMAYI HEGDE
Class 3
SRI SATHYA SAI VIDYA MANDIR
KARNATAKA

Group 2 Class 6-8

WINNER

SHASHWAT THAKUR
Class 7
KHAITAN PUBLIC SCHOOL
UTTAR PRADESH

1st Runner Up

SHARVARI KESKAR
Class 8
DAYANADA PUBLIC SCHOOL
MAHARASHTRA

2nd Runner Up

KANAK MALHOTRA
Class 8
RAMJAS SCHOOL
DELHI

Group 3 Class 9-12

WINNER

ALEENA BHARTI
Class 12
SIR PADAMPAT SCHOOL
RAJASTHAN

1st Runner Up

KESHAV CHIKHALIKAR
Class 10
TIRATHBAI KALACHAND SCHOOL
M.P.

2nd Runner Up

PALAKPREET KAUR
Class 11
MAYO INTERNATIONAL
DELHI

महामंत्री श्री भीखम सुराणा, एसीसी संयोजक श्री रमेश पटावरी, एसीसी की राष्ट्रीय, जोनल, राज्य और स्थानीय टीम में जुड़े लगभग 400 कार्यकर्ताओं, अणुव्रत समितियों एवं इनसे जुड़े सभी अणुव्रत कार्यकर्ताओं व अणुविभा पदाधिकारियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

◆◆ अणुविभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री अविनाश नाहर ने कहा कि सभी प्रतियोगियों ने बहुत मेहनत की है। सभी विजेताओं को शुभकामनाएं देता हूँ। उन्होंने इस सफल आयोजन के लिए अणुविभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष, महामंत्री, एसीसी संयोजक एवं इससे जुड़े सभी कार्यकर्ताओं की सराहना की।

◆◆ एसीसी संयोजक श्री रमेश पटावरी ने कहा कि कोरोना की विषम परिस्थिति में 400 लोगों के नेटवर्क ने इस कार्य को सम्पादित किया है। इस कॉन्टेस्ट में 12780 बच्चों व 606 स्कूलों ने रजिस्ट्रेशन करवाया। प्रथम चरण में 8076 संभागी चयनित हुए, इस प्रक्रिया में 208 जजों ने भाग लिया। फाइनल में 568 संभागी चयनित हुए। उन्होंने कहा कि अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमणजी का आशीर्वाद एवं अणुव्रत के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि श्री मननकुमार जी का मार्गदर्शन हमारे लिए सदैव उत्साहवर्धक रहा।

SPEECH

Group 1 Class 3-5

WINNER

BHAVYA BOTHRA
Class 3
RAGHUBIR SINGH SCHOOL
DELHI

1st Runner Up

PRITHIYA SABOO
Class 5
THE EMERALD HEIGHTS
M.P.

2nd Runner Up

SAAKSHI ANCHALIA
Class 3
SRI SATHYA SAI VIDYA MANDIR
ANDHRA PRADESH

Group 2 Class 6-8

WINNER

ARNISHA JASH
Class 7
SOUTH POINT SCHOOL
ASSAM

1st Runner Up

AKSHITA JAIN
Class 6
N.H. GOEL WORLD SCHOOL
CHHATTISGARH

2nd Runner Up

R. HARDIK KUMAR
Class 7
THE INDIAN PUBLIC SCHOOL
TAMIL NADU

Group 3 Class 9-12

WINNER

NISTHA JAIN
Class 9
PI WORLD
BIHAR

1st Runner Up

SAANVI KHATTER
Class 10
INDERAPRASTHA SCHOOL
DELHI

2nd Runner Up

KAVIYA SREE D
Class 9
SRGDS HIGHER SEC. SCHOOL
TAMIL NADU

ESSAY WRITING

Group 1 Class 3-5

WINNER

HURDITYA SINGH
Class 3
BHARAT NATIONAL SCHOOL
DELHI

1st Runner Up

KANISHA JAIN
Class 5
RACHANA SCHOOL
GUJARAT

2nd Runner Up

MUDIT KOTHARI
Class 3
DON BOSCO SCHOOL
WEST BENGAL

Group 2 Class 6-8

WINNER

AAGAM JAIN
Class 8
SHRI VAISHNAV ACADEMY
M.P.

1st Runner Up

GATIK AGRAWAL
Class 7
SDMTPP SCHOOL
ODISHA

2nd Runner Up

MANISHA SUTHAR
Class 8
SJJS SR. SEC. SCHOOL
RAJASTHAN

Group 3 Class 9-12

WINNER

HARSHIL SALECHA
Class 10
TERAPANTH JAIN VIDYALAYA
TAMILNADU

1st Runner Up

ISHA AGRAWAL
Class 12
ST. HELEN'S SCHOOL
WEST BENGAL

2nd Runner Up

SHUBHAM YADAV
Class 10
VIDYA BHARATI SCHOOL
UTTAR PRADESH

◆◆ कार्यक्रम में श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ महासभा के महामंत्री श्री रमेशचंद्र सुतरिया, अभातेममं की राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती पुष्पा बैद, अणुव्रत न्यास के प्रबंध न्यासी श्री के.सी. जैन, अणुव्रत न्यास के पूर्व मुख्य न्यासी श्री संपतमल नाहटा ने भी विचार रखे।

◆◆ कॉन्टेस्ट से निर्णायक के रूप में जुड़े श्री रावेंद्र रवि, श्री किशोर कुमार राय, श्रीमती तारा मनोत, श्री निर्मल कोटेचा, डॉ. सुमन पामेचा एवं श्री रमेश चांडक ने भावाभिव्यक्ति दी।

◆◆ कॉन्टेस्ट के सहप्रभारी, राज्य प्रभारी एवं क्षेत्रीय संयोजकों का प्रतिनिधित्व करते हुए श्रीमती स्वाति सोनी, श्रीमती नीलम जैन, श्रीमती नीतू पालगोटा, श्रीमती ममोल कोटेचा, श्रीमती संतोष दूगड़, श्री बीरेन्द्र जैन, श्रीमती कंचन सोनी, श्री अजय जैन, श्री केशरीचंद गोलछा, श्रीमती साधना कोठारी, श्रीमती ममता श्रीश्रीमाल, श्री संजय चोरडिया, श्रीमती कान्ता सेठिया, श्री कमल बैंगाणी, श्री विमल गुलगुलिया, श्री नीरज बम्बोली आदि ने विचार रखे।

◆◆ अणुविभा के राष्ट्रीय महामंत्री श्री भीखम सुराणा ने कॉन्टेस्ट से जुड़े सभी पदाधिकारियों, निर्णायकों, एसीसी संयोजक, अणुव्रत कार्यकर्ताओं तथा प्रतिभागियों का आभार जताया। कार्यक्रम का कुशल संचालन श्रीमती हंसा संचेती ने किया।

POEM WRITING

Group 1 Class 3-5

WINNER

AJAY RAJ TYAGI
Class 4
VBS
UTTAR PRADESH

1st Runner Up

HARSHITA RATHORE
Class 5
SOPHIA SR. SEC. SCHOOL
RAJASTHAN

2nd Runner Up

MAYURANKHI CHAKRABORTY
Class 5
SOUTH POINT SCHOOL
ASSAM

Group 2 Class 6-8

WINNER

KUMAR ADITYA
Class 8
JAWAHAR NAVODAYA SCHOOL
BIHAR

1st Runner Up

SUBHALAXMI P.
Class 7
JOHARIMALL HIGH SCHOOL
ODISHA

2nd Runner Up

AAVISHKAR KHATIWADA
Class 6
LITTLE ANGLES SCHOOL
WEST BENGAL

Group 3 Class 9-12

WINNER

MUDIT KHATER
Class 11
DELHI PUBLIC SCHOOL
TELANGANA

1st Runner Up

GUNJAN GAWANDE
Class 9
THE SOUTH PUBLIC SCHOOL
MAHARASHTRA

2nd Runner Up

LAKSH LUNKER
Class 9
ST. XAVIER HIGH SCHOOL
GUJARAT

अर्हम्

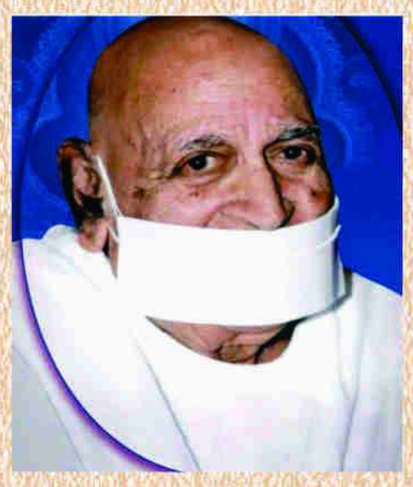

व्यक्ति का चेहरा सुन्दर हो या न हो,
जीवन सुन्दर होना चाहिए।
आन्तरिक सौंदर्य चेहरे की कुरूपता को भी ढक देता है।
आन्तरिक सौंदर्य का सच्चा आभूषण त्याग है।
– आचार्य तुलसी

पायल मयंक कोठारी

विवाहोपलक्ष्य पर

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

श्रीमती कंचन अनिल सोनी

चैम्बूर (मुम्बई) । थामला

विवाह तिथि : 6 जून, 2021

स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में...

मुंबई

स्वतंत्रता–नये क्षितिज की खोज

अणुव्रत समिति ने स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर 15 अगस्त को तेरापंथ भवन चेंबूर में 'स्वतंत्रता–नये क्षितिज की खोज' कार्यक्रम का आयोजन किया। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री तुलसी का संदेश 'असली आजादी अपनाओ' पर ज्ञानशाला के बच्चों ने सुंदर प्रस्तुति दी। अणुव्रत आचार संहिता का वाचन अणुविभा के संगठन मंत्री श्री विनोद कोठारी ने किया।

प्रो. मुनिश्री महेंद्र कुमार ने कहा कि दुनिया में आज जो अफरातफरी है उसका बहुत बड़ा कारण है – क्रोध, मान, माया, लोभ। लोभ बढ़ता है, आकांक्षाएँ बढ़ती हैं, जिसके परिणामस्वरूप आज हम वातावरण में हो रहे परिवर्तन देख रहे हैं। मुनिश्री अभिजीत कुमार ने कहा कि हमें अहं को हटाकर सकारात्मक, शांतिपूर्ण जीवन जीना चाहिए।

मुख्य अतिथि श्री राकेश सियाल (क्रिएटिव डायरेक्टर सोनी सब टीवी) ने भी विचार रखे। विशिष्ट अतिथि अभिनेता श्री मनीष वाधवा ने अपने अनुभव बताये। मुख्य वक्ता, साधक व जीवन प्रचारक श्री दिलीप सरावगी ने कहा कि असली आजादी के लिए अणुव्रत बहुत बड़ी राह है।

मुनिश्री जंबुकुमारजी ने संदेश दिया कि विनम्रता के साथ धैर्य भी चाहिए। अणुव्रत ही जीवन को सार्थक व सफल बना सकता है।

कार्यक्रम में अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट 2020 में राज्य और राष्ट्रीय स्तर के विजेताओं, शिक्षकों व मुंबई टीम का सम्मान किया गया। अणुव्रत समिति मुंबई अध्यक्ष श्रीमती कंचन सोनी ने अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम में कल्याण परिषद संयोजक और अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष श्री संदीप कोठारी, मुंबई सभा से श्री विजय पटावरी, अणुव्रत महासमिति के पूर्व अध्यक्ष श्री डालचंद कोठारी, श्री अनुराग बंसल तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। कार्यक्रम का कुशल संचालन मंत्री श्रीमती वनिता बापना ने किया

दिल्ली

देशभक्ति और अणुव्रत के गीतों की प्रस्तुति

अणुव्रत समिति दिल्ली की ओर से 75वें स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में नैतिकता और देशभक्ति पर आधारित डिजिटल सांस्कृतिक संध्या का आयोजन 14 अगस्त को हुआ। इसमें नन्हे बालक आरव जैन ने चन्द्रशेखर आजाद की भूमिका अदा कर दर्शकों का मन मोह लिया। 'स्वतंत्रता और अणुव्रत' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में अंतरराष्ट्रीय कवि एवं अणुव्रत समिति दिल्ली के परामर्शक श्री गजेन्द्र सोलंकी ने अपनी सुमधुर कविताओं से कार्यक्रम को देशभक्ति और अणुव्रतमय बना दिया। समिति के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री कमल बेंगानी एवं मंत्री श्री धनपत नाहटा ने अपने मधुर स्वर से समा बांध दिया। सर्वश्री ललित श्यामसुखा, जयसिंह दुगड़, राहुल बैद, चारु बांठिया, ईशा, कल्पना सेठिया व भारतीय जैन संगठन दिल्ली के अध्यक्ष श्री प्रदीप संचेती ने कविता व गीतों की प्रस्तुति दी।

समिति दिल्ली के अध्यक्ष श्री शांतिलाल पटावरी ने सभी कलाकारों एवं अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन सुमधुर गायक श्री ललित श्यामसुखा ने किया।

इस अवसर पर अणुविभा के महामंत्री श्री भीखमचंद सुराणा, अणुविभा की संगठन मंत्री डॉ. कुसुम लूनिया, दिल्ली सभा के महामंत्री श्री डालमचंद बैद, अणुव्रत न्यास के प्रभारी श्री शांति कुमार जैन, और क्षेत्रीय सभाओं एवं संस्थाओं के पदाधिकारियों की गरिमामयी उपस्थिति रही। आभार ज्ञापन संगठन मंत्री श्री मनोज बरमेचा ने किया।

बेंगलुरु
जीवन विज्ञान प्रशिक्षण शिविर आयोजित

अणुव्रत समिति की ओर से 5 व 6 अगस्त को जीवन विज्ञान प्रशिक्षण शिविर का आयोजन भिक्षु भारती के प्रांगण में किया गया। डीएसईआरटी बेंगलुरु शिक्षा विभाग के प्रमुख श्री मारुति ने बताया कि जीवन विज्ञान के इस कार्यक्रम को कर्नाटक की स्कूली शिक्षा के पाठ्यक्रम में शामिल करने के प्रयास जारी हैं। जीवन विज्ञान कर्नाटक संयोजक श्री ललित आच्छा ने जीवन विज्ञान के बारे में जानकारी दी। शिविर में लगभग 30 शिविरार्थियों को प्रशिक्षण दिया।

कार्यक्रम में अणुविभा के परामर्शक (जीवन विज्ञान) श्री मूलचंद नाहर, तेरापंथ सभाध्यक्ष श्री सुरेश दक, अणुविभा के संगठन मंत्री श्री कन्हैयालाल चिप्पड़, समिति के मंत्री श्री माणकचंद संचेती, कोषाध्यक्ष श्री हरकचंद ओस्तवाल, श्री विक्रम सेठिया, श्री रूपचन्द देसरला, श्री गौतमचंद सुंदेशा मुथा एवं श्री शिवन्ना का सहयोग रहा।

बेंगलुरु
राज्यपाल ने अणुव्रत के कार्यों को सराहा

अणुव्रत समिति के पदाधिकारियों ने राज्यपाल श्री थावरचंद गहलोत से मुलाकात कर उनका सम्मान किया। पदाधिकारियों ने राज्यपाल को आचार्य श्री तुलसी द्वारा प्रदत्त अणुव्रत आंदोलन के बारे में बताया। राज्यपाल महोदय ने अणुव्रत समिति के कार्यों की सराहना की तथा भविष्य में होने वाले कार्यक्रम में आने की भी बात कही। इस अवसर पर अणुव्रत समिति के अध्यक्ष श्री शान्तिलाल पोरवाल, उपाध्यक्ष श्री देवराज रायसोनी, मंत्री श्री माणकचंद संचेती, कोषाध्यक्ष श्री हरकचंद ओस्तवाल एवं तेरापंथ सभा अध्यक्ष श्री सुरेश दक उपस्थित थे।

ग्रेटर सूरत
सद्भावना – समभावना संगोष्ठी

अणुव्रत समिति की ओर से 1 अगस्त को सिटी लाइट स्थित तेरापंथ भवन में सद्भावना – समभावना संगोष्ठी हुई। इसमें साध्वी लब्धिश्रीजी ने अणुव्रत के माध्यम से संयमित व सम भाव में रहते हुए सद्भावनामय जीवन जीने की कला के बारे में बताया। समणी निर्देशिका डॉ. अक्षयप्रज्ञा जी ने कहा कि अणुव्रत आपसी सौहार्द एवं भाईचारा के साथ जीवन जीने का सशक्त माध्यम है। मुख्य अतिथि राष्ट्रीय सिख संगत के अखिल भारतीय कार्यकारी अध्यक्ष श्री गुरु वचन सिंह मोखा ने गुरु तेग बहादुर के त्याग एवं सद्भावना के प्रसंग बताये। इससे पहले समिति के अध्यक्ष श्री विजयकांत खटेड़ ने अतिथियों को अणुव्रत साहित्य भेंट कर सम्मान किया। संचालन मंत्री श्री सुनील श्रीश्रीमाल ने किया।

सादुलपुर
सम्मान समारोह आयोजित

अणुव्रत समिति की ओर से 14 अगस्त को मोहता पब्लिक स्कूल, राजगढ़ में स्कूल इंचार्ज श्री इदरीश गहलोत की अध्यक्षता में सम्मान समारोह आयोजित किया गया। समिति अध्यक्ष और तहसील प्रतियोगिता प्रभारी श्री कमल बोथरा ने अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट – 2020 में कविता लेखन में राज्य स्तर पर चयन होने पर स्कूल के कक्षा 10 के छात्र हरिओम वशिष्ठ और कक्षा 5 की छात्रा जीवांशी बिजारणिया की सराहना करते हुए स्थानीय स्तर पर सर्टिफिकेट प्रदान कर सम्मानित किया। इस अवसर पर विद्यालय परिवार और बच्चों के परिजन उपस्थित थे।

चेन्नई
सिक्योरिटी स्टाफ को कोरोना किट वितरण

अणुव्रत समिति के अध्यक्ष एवं टीम ने 23 जुलाई को सिक्योरिटी स्टाफ और वर्करों को कोरोना मेडिकल किट का वितरण किया। इस अवसर पर किट्स के प्रायोजक श्री सुरेश नाहर, समिति अध्यक्ष श्री सुरेश बोहरा, उपाध्यक्ष श्री मंगल चंद डुंगरवाल, श्री करण छल्लाणी, मंत्री श्री जितेंद्र समदड़िया सहित पदाधिकारीगण उपस्थित रहे।

हैदराबाद

अणुव्रत स्वस्थ जीवन की रामबाण औषधि

अणुव्रत समिति की ओर से 15 अगस्त को बोलाराम तेरापंथ भवन में अणुव्रत कार्यशाला का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर साध्वीश्री काव्यलताजी ने कहा कि भावशुद्धि से व्यक्ति अपनी जीवन धारा को मोड़ सकता है। अणुव्रत संयम की चेतना को जागृत कर भावशुद्धि की प्रेरणा प्रदान करता है। नैतिकता, ईमानदारी और चारित्रिक शुद्धि से ही व्यक्ति अपने आपको पूर्ण स्वस्थ रख सकता है।

साध्वीश्री ज्योतियशा जी ने कहा कि सावन माह कर्म निर्जरा का सुंदर अवसर है। यह त्याग और तप में आगे बढ़ने का समय है। साध्वीश्री ज्योतियशा जी और सुरभिप्रभा जी ने गीतिका के माध्यम से अणुव्रत को जीवन में अपनाने की प्रेरणा दी।

मुख्य वक्ता श्री करणसिंह बरडिया और श्रीमती नीरज सुराणा ने अणुव्रत को स्वस्थ जीवन की रामबाण औषधि बताया। इस अवसर पर जैन सेवा संघ के कोषाध्यक्ष श्री अशोक संचेती, श्री विनोद संचेती, तेरापंथ सभा के सहमंत्री श्री राकेश सुराणा, श्री जयसिंह सुराणा, तेरापंथ युवा परिषद हैदराबाद के अध्यक्ष श्री प्रवीण श्यामसुखा तथा अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

अणुव्रत समिति के अध्यक्ष श्री प्रकाश भण्डारी ने अणुव्रत साहित्य प्रदान कर अतिथियों का सम्मान किया। कार्यक्रम का संचालन समिति के मंत्री श्री अशोक मेडतवाल ने किया।

जोधपुर

अनाथाश्रम के बच्चों ने लिये सदाचार के संकल्प

अणुव्रत समिति की तरफ से अनाथ आश्रम 'वात्सल्यपुरम' के बच्चों को भोजन करवाया गया तथा 'बच्चों का देश' पत्रिका दी गयी। समिति अध्यक्ष डॉ. सुधा भंसाली ने इन बच्चों को झूठ नहीं बोलने, चोरी नहीं करने तथा सदाचार का संकल्प करवाया। संस्था को अणुव्रत आचार संहिता का पट्ट भी भेंट किया गया। इस मौके पर सर्वश्री रूपचन्द भंसाली, राहुल भंसाली, नयन भंसाली व कंचन भंसाली आदि उपस्थित रहे।

अणुव्रत समिति : नया नेतृत्व

सत्र 2021–23

बल्लारी

श्री बसंत छाजेड़
अध्यक्ष

श्रीमती प्रवीणा लूणावत
मंत्री

कोयम्बटूर

श्री धनराज सेठिया
अध्यक्ष

श्री पुखराज सुराणा
मंत्री

दिवेर

श्री गणेश राम
अध्यक्ष

श्री हरीश सालवी
मंत्री

देवगढ़ मदारिया

श्री प्रकाश डागा
अध्यक्ष

श्री राकेश शर्मा
मंत्री

धरान

श्रीमती मोनिका दूगड़
अध्यक्ष

श्रीमती सुमन जैन
मंत्री

हावड़ा

श्री मनोज सिंघी
अध्यक्ष

श्री राजेश बोहरा
मंत्री

अणुव्रत समितियों ने पर्यावरण संरक्षण के लिए लगाये पौधे, रक्षा का लिया संकल्प

अहमदाबाद

अणुव्रत समिति की ओर से 8 अगस्त को केनाल रोड, बोपल पर वृहद पौधरोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में सेव अर्थ, लॉयन्स क्लब ऑफ अहमदाबाद स्टार, राजयश फाउंडेशन, राउंड टेबल इंडिया, थली युवा संघ, हिन्दू युवा वाहिनी, पर्यावरण गतिविधि मिशन ग्रीन बोपल आदि संस्थाओं का सहयोग रहा। अणुव्रत समिति अध्यक्ष श्री सुरेश बागरेचा ने उपस्थित लोगों को अणुव्रत आंदोलन की जानकारी देने के साथ उन्हें अणुव्रत पॉकेट कार्ड भी प्रदान किये।

जोधपुर

अणुव्रत समिति व मिशन पर्यावरण व सामाजिक विकास व संरक्षण संस्थान (मेसडेस) जोधपुर के संयुक्त तत्वावधान में 27 जुलाई को राजकीय प्राथमिक विद्यालय मामाजी का थान में पौधरोपण के साथ ही पक्षियों के लिए परिंडे लगाये गये। इस अवसर पर मुख्य अतिथि सरपंच बबीना श्री पप्पू सिंह उदावत, समिति अध्यक्ष डॉ. सुधा भंसाली, मेसडेस अध्यक्ष श्री अरविन्द कुमार व्यास, प्रचार प्रसार मंत्री श्री महेन्द्र मेहता, व्याख्याता श्रीमती मन्जू माकड तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। प्रधानाध्यापक श्री शौकत अली लोहिया व गोपाल सिंह राजपुरोहित ने अतिथियों का स्वागत किया। अन्य मेहमानों व ग्रामवासियों को अणुव्रत दुपट्टे, अणुव्रत साहित्य और अणुव्रत आचार संहिता पट्ट भेंट किये गये। **इस अवसर पर मामाजी का थान के पूनाराम दर्जी, जालाराम पटेल व चैनाराम पटेल सहित अन्य ग्रामवासियों ने नशा नहीं करने की शपथ ली।**

अणुव्रत समिति : नया नेतृत्व

सत्र 2021–23

इंदौर

श्री निलेश पोखरणा
अध्यक्ष

श्री मनीष कठौतिया
मंत्री

इस्लामपुर

श्रीमती शकुंतला दूगड़
अध्यक्ष

श्रीमती ममता बोथरा
मंत्री

जोधपुर

श्रीमती सुधा भंसाली
अध्यक्ष

श्रीमती शर्मिला भंसाली
मंत्री

कोलकाता

श्री प्रदीप सिंघी
अध्यक्ष

श्री नवीन दूगड़
मंत्री

सिलीगुड़ी

श्रीमती पुष्पा चिंडालिया
अध्यक्ष

श्रीमती जूली सिरोहिया
मंत्री

श्रीडूंगरगढ़

श्री विजयराज सेठिया
अध्यक्ष

श्री के.एल. जैन
मंत्री

सिरसा

अणुव्रत समिति ने ढूकड़ा गांव की गौशाला में 25 जुलाई को बरगद, बेलगिरी, नीम, जामुन, शहतूत आदि के 40 पौधे लगाये तथा इनकी देखभाल का संकल्प लिया। इस अवसर पर अणुव्रत समिति के मंत्री श्री अमित सिंघी, निवर्तमान अध्यक्ष श्री चंपालाल जैन, तेरापंथी सभा अध्यक्ष श्री देवेंद्र डागा, मंत्री श्री रंजीत गुजरानी आदि उपस्थित थे।

लाडनूं

अणुव्रत समिति के तत्वावधान में 1 अगस्त को पौधरोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर समिति के अध्यक्ष श्री शांतिलाल बैद, उपाध्यक्ष श्री अब्दुल हमीद मोयल, श्री बहादुर खां, श्री इमरान खां, श्री शाहनवाज खान, श्री फैजल, श्री सैयद समीर सहित अनेक लोग उपस्थित थे। मंत्री डॉ. वीरेन्द्र भाटी मंगल ने बताया कि इस दौरान विभिन्न किस्म के 111 पौधे लगाये गये।

बाड़मेर

अणुव्रत समिति की ओर से 25 जुलाई को मुनि श्री स्वास्तिक कुमारजी व मुनि श्री सुपार्श्व कुमारजी के सान्निध्य में 'एक घर एक पौधा' अभियान शुरू किया। इस दौरान पार्षद श्री सुनील सिंघवी, पार्षद श्री दिनेश जैन, पूर्व अध्यक्ष श्री मुकेश जैन एडवोकेट, पूर्व अध्यक्ष श्री कैलाश संखलेचा, तेरापंथ सभा के श्री पुखराज बोकड़िया, तेरापंथ युवक परिषद से श्री मयंक सालेचा आदि उपस्थित रहे। समिति के अध्यक्ष श्री जितेन्द्र बाठिया ने कार्यक्रम में आर्थिक सहयोग के लिए भामाशाह श्री अशोक कुमार का आभार ज्ञापित किया।

बीकानेर

अणुव्रत समिति और मुरलीधर व्यास नगर नागरिक समिति के संयुक्त तत्वावधान में 25 जुलाई को एम.डी. वी. कॉलोनी के चार पार्कों में पौधे लगाने के साथ ही सघन पौधारोपण अभियान की शुरुआत की गई। प्रवक्ता श्री राजेश आचार्य ने बताया कि अणुव्रत समिति के अध्यक्ष श्री झंवर लाल गोलछा, मुरलीधर व्यास नगर नागरिक समिति के अध्यक्ष डॉ. विजय आचार्य, दोनों समितियों के पदाधिकारी तथा स्थानीय नागरिकों ने कार्यक्रम में सहभागिता निभायी। अणुव्रत समिति की ओर से सावन माह में सघन अभियान के तहत शहर के चुने हुए विद्यालयों में बीस–बीस पौधे लगाये जा रहे हैं।

हिसार

अणुव्रत समिति की ओर से 23 जुलाई को मॉडल टाउन के तुलसी पार्क में पार्षद अमित ग्रोवर के प्राणवायु जागरूकता अभियान के अंतर्गत पौधरोपण किया गया। इस अवसर पर समिति के अध्यक्ष श्री कुंदन लाल जैन तथा अन्य पदाधिकारी उपस्थित थे।

रतनगढ़

अणुव्रत समिति की ओर से 24 जुलाई को श्री जालान बैकुंठधाम में श्री तेजपाल सिंह गुर्जर की अध्यक्षता में पौधरोपण कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इस अवसर पर समिति के मंत्री श्री रामचंद्र पारीक ने कहा कि अधिक से अधिक पौधे लगाकर तथा उनकी देखभाल कर हम पर्यावरण संतुलन में अहम भूमिका निभा सकते हैं।

बोइसर

अणुव्रत समिति के तत्वावधान में समिति अध्यक्ष श्री गणेश नान्द्रेचा, मंत्री श्री खेलिलाल खोखावत, युवक परिषद अध्यक्ष श्री चन्द्रप्रकाश सोलंकी आदि ने पौधरोपण किया।

संवाद अणुव्रत समितियों के साथ....

❖ *अणुविभा अध्यक्ष एवं अन्य पदाधिकारियों ने 8 अगस्त को जूम मीटिंग के माध्यम से देशभर में फैली अणुव्रत समितियों के अध्यक्ष व मंत्रियों के साथ ऑनलाइन संवाद किया। कार्यक्रम की शुरुआत अणुविभा महामंत्री श्री भीखम सुराणा के प्रारम्भिक वक्तव्य और अणुव्रत समिति गुवाहाटी के अध्यक्ष श्री बजरंग लाल डोसी के अणुव्रत गीत संगान से हुई।*

❖ *इस अवसर पर अणुव्रत विश्व भारती के अध्यक्ष श्री संचय जैन ने कहा कि सबसे अधिक जरूरी है कि हम अपने काम को प्रार्थना समझकर करें। इससे हमें ताकत मिलती है, जो मंजिल तक पहुँचने में सहायक बनती है। अणुव्रत का काम करके हम अपने व्यक्तित्व में भी निखार ला रहे हैं। अपनी व्यक्तिगत–पारिवारिक जिम्मेदारियों को निभाते हुए आप लोग जिस तरह अणुव्रत आंदोलन को गति देने में जुटे हैं, यह निश्चय ही प्रशंसनीय है। पद लिप्सा से दूर रह कर हम अपने पावन उद्देश्यों की प्राप्ति में निरंतर संलग्न रहें, अवश्य ही सफलता मिलेगी।*

❖ *उन्होंने 19–20–21 सितम्बर को भीलवाड़ा–राजसमंद में होने वाले अणुव्रत अधिवेशन में हिस्सा लेने का आह्वान किया एवं इस संबंध में जानकारी प्रदान की।*

श्री जैन ने कहा कि सभी समितियों के अध्यक्ष, मंत्री तथा कार्यकारिणी सदस्य अणुविभा की दोनों पत्रिकाएँ 'अणुव्रत' तथा 'बच्चों का देश' व्यक्तिगत रूप से अपने घर पर निश्चित रूप से मँगवायें। अणुव्रत आंदोलन से जुड़ने के लिए इन्हें पढ़ना आवश्यक है। आप यदि ये पत्रिकाएं मँगवायेंगे तो इनमें प्रकाशित आलेखों के अलावा अपनी समिति की गतिविधियों के बारे में पढ़ने के साथ ही अपने सुझाव भी दे सकेंगे। पत्रिका प्रसार अभियान के संयोजक श्री शांतिलाल पटावरी ने उपहार योजना के बारे में जानकारी देते हुए पर्यूषण पर्व के सात दिनों में अधिक से अधिक लोगों को 'अणुव्रत' तथा 'बच्चों का देश' पत्रिका का सदस्य बनाने का आह्वान किया। उन्होंने दिल्ली, मुंबई, अहमदाबाद, जोधपुर, हिसार, जयपुर सहित उन सभी समितियों को धन्यवाद दिया जिनके प्रयासों से सदस्यता अभियान में विशेष गति आयी है।

❖ *अणुविभा अध्यक्ष ने कहा कि भविष्य में हमें अणुव्रत संस्थाओं के संचालन में पारदर्शिता और शुचिता का विशेष ध्यान रखना है। इसके लिए विस्तृत मार्गदर्शिका तैयार है। 100 अणुव्रत समितियों में हाल ही में नयी टीम ने कार्यभार संभाला है। यह हम सबके उत्साह को बढ़ाने वाली बात है। 31 अगस्त तक जहां चुनाव–मनाव की प्रक्रिया संपन्न नहीं हो सकेगी, वहां के वर्तमान अध्यक्ष कार्यवाहक अध्यक्ष के रूप में ही काम करेंगे। अणुविभा प्रतिनिधि के पर्यवेक्षण में वहां नये अध्यक्ष के चुनाव/मनाव की प्रक्रिया को पूर्ण कराया जायेगा।*

❖ *अणुविभा के कोषाध्यक्ष श्री राकेश बरडिया ने अणुव्रत समितियों के लिए स्वीकृत मॉडल ट्रस्ट डीड के प्रमुख बिंदुओं एवं पंजीयन की प्रक्रिया की जानकारी दी। उन्होंने सभी से इसे प्राथमिकता में रखते हुए अधिवेशन से पहले यह प्रकिया पूरी कर लेने की अपील की।*

❖ *अणुविभा महामंत्री श्री भीखम सुराणा ने अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि 26 सितम्बर से 2 अक्टूबर तक सात दिन में सात प्रकल्पों से जुड़े कार्यक्रम सभी समितियों को आयोजित करने हैं। जीवन विज्ञान प्रकल्प तो सभी समितियों के लिए अनिवार्य है ही। इस सप्ताह को और अधिक उपलब्धिपरक बनाने के लिए सभी अणुव्रत समितियां अन्य किसी एक स्थायी प्रकल्प को इस सप्ताह में दिवस विशेष पर लॉन्च करें।*

❖ *श्री संचय जैन ने कहा, हमारी योजना है कि वर्ष 2024 में जब हम अणुव्रत आंदोलन की हीरक जयंती मनायें, तब हमारे पास ऐसे 500 अणुव्रत एम्बेसेडर्स हों, जो अणुव्रत के प्रयोक्ता और कुशल प्रस्तुतकर्ता हों। पिछले वर्ष हुई प्रबोधन प्रतियोगिता के श्रेष्ठ 336 प्रतिभागियों में से 50 के चयन के साथ ही इसकी शुरुआत की जा चुकी है। आने वाले समय में अन्य क्षेत्रों से भी लोगों को अणुव्रत एम्बेसेडर के रूप में जोड़ा जायेगा।*

❖ *अणुव्रत प्रबोधन प्रतियोगिता के संयोजक श्री अशोक चौरड़िया ने कहा कि प्रतियोगिता की तिथि बढ़ाकर 30 सितम्बर कर दी गयी है। वितरित की गयी प्रश्न पुस्तिकाएं इस तिथि तक निश्चित रूप से दिल्ली कार्यालय भिजवा दें।*

❖ *इसके बाद अणुविभा पदाधिकारियों श्री संचय जैन, श्री भीखम सुराणा, श्री अविनाश नाहर और श्री राकेश बरडिया ने विभिन्न समितियों के अध्यक्ष/मंत्रियों की जिज्ञासाओं का समाधान प्रस्तुत किया।*

❖ *कार्यक्रम का कुशल संचालन अणुविभा के राष्ट्रीय महामंत्री श्री भीखम सुराणा ने किया।*

पाठकों के लिए
विशेष प्रतियोगिता

अणुव्रत Q10

आपको करना है बस इतना

❖ 'अणुव्रत पत्रिका' के अगस्त 2021 अंक को ध्यानपूर्वक आद्योपांत पढ़ना
❖ अगस्त 2021 अंक पर आधारित 10 सरल प्रश्नों के उत्तर प्रेषित करना

01. संग्रह का मूल क्या है?
02. जापानी शब्द ईकीगाई का क्या मतलब है?
03. अणुव्रत पुरस्कार की शुरुआत किस वर्ष की गयी?
04. कहानी 'वीरांगना' की शेवंती के सैनिक पति का क्या नाम था?
05. ग्राम गीतों का संकलन करने वाले हिंदी के प्रथम कवि कौन थे?
06. बेस्टसेलर बुक मैन'स सर्च फॉर मीनिंग के लेखक कौन हैं?
07. गीताप्रेस से प्रकाशित मासिक पत्रिका कल्याण के आदि संपादक कौन थे?
08. हमारे प्राणतंत्र के तीन प्रवाहों को प्राचीन ग्रंथों में किन नामों से जाना जाता है?
09. आत्मा को विशुद्ध करने के लिए पहले श्वास क्रिया को व्यवस्थित करने की बात किस रहस्यवादी विचारक ने कही?
10. ''प्यार पर कभी नफरत को हावी न होने दें। लगातार उन बातों को याद करें, जब आप खुश थे, सकारात्मक थे और अपनी ऊर्जा का सही जगह इस्तेमाल करते थे।" -यह कथन किस लेखक का है?

❖
अगस्त 2021 अंक पर आधारित प्रश्न
❖

ज्ञातव्य बिंदु

- ❖ प्रतियोगिता के प्रश्न अगस्त 2021 के अंक पर आधारित।
- ❖ परिवार के एक सदस्य की प्रविष्टि ही मान्य होगी।
- ❖ प्रतिभागी उत्तर के साथ पता और मोबाइल नं. अवश्य उल्लेख करें।
- ❖ उत्तर संक्षेप में दें। पत्रिका में उल्लेखित शब्द ही मान्य होंगे।
- ❖ काट-छांट व शब्दों में त्रुटि होने पर अंक काट लिये जायेंगे।
- ❖ सर्वाधिक सही उत्तर लिखकर भेजने वाला पाठक विजेता होगा।
- ❖ एकाधिक विजेता होने की स्थिति में लॉटरी द्वारा निर्धारण होगा।
- ❖ विजेता का नाम मय फोटो पत्रिका में प्रकाशित किया जायेगा।
- ❖ सही उत्तरदाताओं के नाम एवं स्थान का पत्रिका में उल्लेख होगा ।

उत्तर इस पते पर भेजें

अणुव्रत विश्व भारती
अणुव्रत भवन,
210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नई दिल्ली-110002
मो : 91166 34512
anuvrat.patrika@anuvibha.org

आकर्षक पुरस्कार

विजेता
- नकद रु. 2100/-
- अणुव्रत पत्रिका की त्रैवार्षिक सदस्यता

प्रोत्साहन - दो
- नकद रु. 1100/-
- अणुव्रत पत्रिका की एक वर्षीय सदस्यता

उत्तर प्राप्ति की अंतिम तिथि
15 अक्टूबर, 2021

मई-जुलाई 2021 अंक में प्रकाशित प्रतियोगिता के परिणाम

(अप्रैल 2021 अंक पर आधारित)

एकाधिक विजेता होने के कारण निर्णय लॉटरी द्वारा किया गया, जो इस प्रकार है -

विजेता

श्री अंकुर जैन
जोधपुर

-:: प्रोत्साहन पुरस्कार ::-

श्रीमती श्वेता जैन
दिल्ली

श्रीमती राशि लुकड़
पचपदरा

अन्य सही उत्तरदाताओं के नाम :-

विजय खत्री	डीसा	विजय कुमार जैन	दिल्ली
प्रवीण जैन	दिल्ली	चम्पालाल जैन	सिरसा
जैन दलीचंद	आमेट	लता गुप्ता	पंचकूला
सुधा भंसाली	जोधपुर	निलेश बैद	चेन्नई
रामबिलास जैन	सूरत	हेमलता	जोधपुर
सिद्धार्थ नाहर	जोधपुर	प्रणत जैन	जोधपुर
ज्योतिषा नाहर	जोधपुर	भावना देवी	पचपदरा
निधि सेठिया	सूरत	कमलसिंह बुच्चा	सूरत
राजेन्द्र कुमार	बालोतरा	सरस्वती देवी	पचपदरा
डॉ. कीर्ति जैन	जोधपुर	हर्षुल मेहता	जोधपुर
नेहा मेहता	जोधपुर	टीना रांका	आसींद
अजीत जैन	रोहतक	खुशबू बांठिया	बालोतरा
कपिल बांठिया	बालोतरा	माणकचंद बैद	सिरसा
विजय चौपड़ा	पचपदरा	रेखा देवी	पचपदरा
विकास लुकंड	पचपदरा	लक्षि लुकंड	पचपदरा
चंद्रकांता सोलकी	सूरत	ममता देवी	पचपदरा
लाजपतराय जैन	हांसी	मोहिनी देवी	पचपदरा
हीना संकलेचा	सूरत	निलेश संकलेचा	पचपदरा
सपना सांखला	तिरूवल्लूर	शुभम कुमार	पचपदरा
कुंदनलाल गोयल	हिसार	रोहित सोलंकी	सूरत
कविता चौपड़ा	पचपदरा	अंजु चौपड़ा	पचपदरा
विद्या चौपड़ा	पचपदरा	अनिता चौपड़ा	पचपदरा

अणुव्रत Q10 प्रतियोगिता

विशेष अंक पर आधारित प्रश्नों के सही उत्तर

उत्तर 01 :	संताप से	पृ. 6
उत्तर 02 :	जैनेंद्र कुमार को	पृ. 35
उत्तर 03 :	परिवार	पृ. 24
उत्तर 04 :	मोहकर्म	पृ. 8
उत्तर 05 :	1 मार्च 2021 को	पृ. 39
उत्तर 06 :	सोनारी (असम) में	पृ. 38
उत्तर 07 :	पीटर होलिंस	पृ. 5
उत्तर 08 :	देवव्रत भीष्म	पृ. 22
उत्तर 09 :	अमरकोष में	पृ. 14
उत्तर 10 :	73वें स्थापना दिवस	पृ. 44

संयमः खलु जीवनम्
संयम ही जीवन

उपहार योजना

15 सितंबर, 2021 तक

अणुविभा की दो राष्ट्रीय पत्रिकाओं

अहिंसक - नैतिक चेतना का प्रवर प्रतिनिधि

अणुव्रत

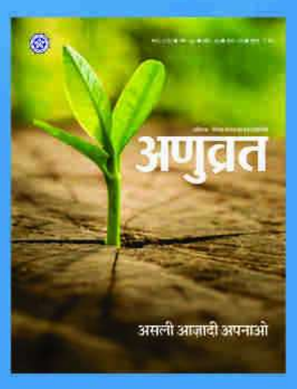

बच्चों का देश

राष्ट्रीय बाल मासिक

के सदस्य बनिए और पाइए...

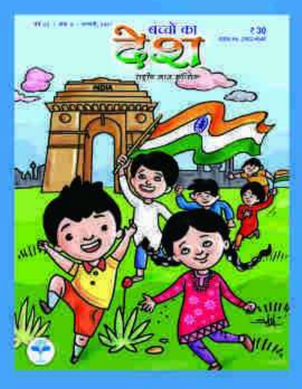

12 माह पर	36 माह पर	60 माह पर	120 माह पर
13 अंक	39 अंक	65 अंक	130 अंक

अणुव्रत समितियों के लिए

10 सदस्यता पर 20 ग्राम चाँदी का सिक्का ('अणुव्रत' के लिए) एवं 10 ग्राम ('बच्चों का देश' के लिए)

★ सदस्यता शुल्क की कुल राशि 10 हजार ('अणुव्रत' के लिए) एवं 5 हजार ('बच्चों का देश' के लिए) या इससे अधिक होने पर 10% की छूट ।

★ सर्वाधिक सदस्य बनाने वाली 10 अणुव्रत समितियों को राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित किया जाएगा।

बैंक विवरण

ANUVRAT VISHWA BHARATI SOCIETY

बच्चों का देश
IDBI BANK
Rajsamand
A/c - 104104000046914
IFS Code - IBKL0000104

अणुव्रत पत्रिका
CANARA BANK
DDU Marg, New Delhi
A/c - 0158101120312
IFS Code - CNRB0000158

सदस्यता शुल्क

अवधि	'अणुव्रत'	'बच्चों का देश'
1 वर्ष	600	300
3 वर्ष	1500	800
5 वर्ष	2500	1200
10 वर्ष	5000	2400
15 वर्ष *	11000	7000

*15 वर्ष 'योगक्षेमी'– सदस्य का नाम एवं पता फोटो सहित 'अणुव्रत' पत्रिका में 1 बार प्रकाशित किया जाएगा

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी

ANUVIBHA

सम्पर्क : +91 98112 42365, +91 91166 34512, +91 91166 34515

सौजन्य : श्री कन्हैयालाल राजेश मयुर चिप्पड़, बंगलुरू

ANUVRAT

RNI No. 7013/57
September, 2021

Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1261/2021-23
Licence No. U(C)-215/2021-23
Licenced to post without pre-payment
Date of Publication 25/08/2021
Posted at Delhi PSO Delhi-6 on 28-29 of the Previous Month

GALAXY GROUP

Architectural marvels across 46 countries worldwide have used our stones.
We are proud to have contributed to the architectural world with these concept stores and outlets in Jaipur:

Stone Studio By Galaxy
India's first concept store for stone display

Tile Studio By Galaxy
Finest Selection of Premium Tiles

Light Studio By Galaxy
Rajasthan's Largest Decorative Lights Display

Landscape Studio BY GALAXY
India's best collection of Landscape Artefacts

The experience of three decades has helped us translate our vision for providing unparalleled lifestyle into -
The Urban Village by Galaxy Enclave, a fully integrated township next to Jaipur's business hub.

राजस्थान की राजधानी जयपुर की विश्व स्तरीय टाउनशिप में
बनायें अपने सपनों का आशियाना

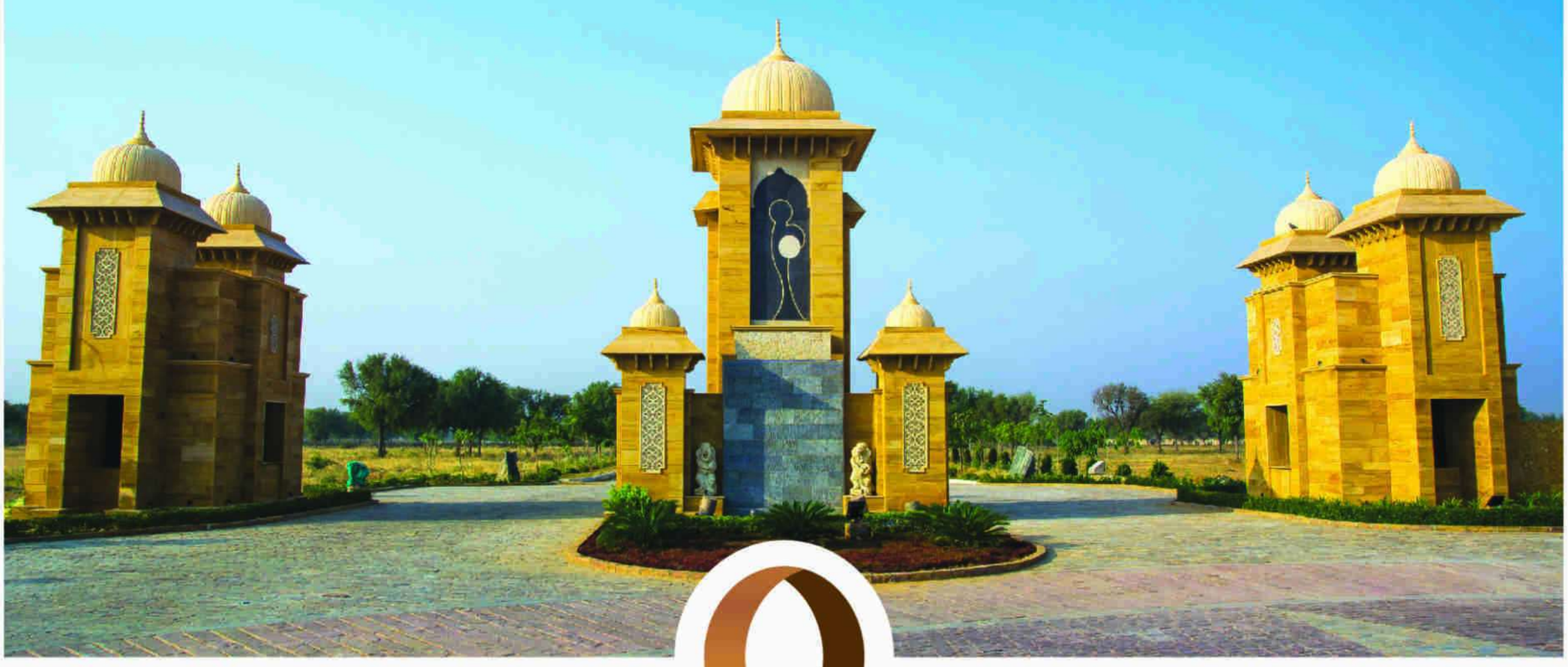

RERA No: RAJ/P/2017/448; RAJ/P/2020/1364

GALAXY ENCLAVE
THE URBAN VILLAGE
Modern Day Luxuries In Harmony With Nature
250 feet SEZ Road, Kalwara, Ajmer Road, Jaipur

TO KNOW MORE, CALL US ON
+91-90791-23572/ 88755-84455/ 88754-08875 or write to info@urban-village.co.in
www.urban-village.co.in

प्रकाशक एवं मुद्रक **संचय जैन** द्वारा स्वत्वाधिकारी **अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी** की ओर से श्री साई शिवानी प्रिंटर्स, बी-198, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-1, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित। संपादक - **संचय जैन**